



2011

ASHA ARCHIVES



[illegible]

नमो नित्यं विना कामः भवति

म न वं श स ल ग नी न सि भा पि स

नकुशमशमभुत ॥ २ ॥ अशमग.

वज्रसूत्रेण नाम धर्मसूत्रेण

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

...नाचनः नहिरुपशपा...
...नाचनः नहिरुपशपा...

५। विनमस्तु च वाचि च वाचि च वाचि च

(Faint handwritten text at the bottom edge)



व० ॥ मिल ५० त्रिनि सा कान ॥

नमि नम नम नमि नमि ॥ १ ॥

सर्वायध्यानादस्त्रियनृप

आमनदविः प्रह्लापा नामपाशुका

नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

पुनः प्रत्यक्षं पश्यन्तं नमः शिवाय ॥

भगवन्निजिगद्गु ह्यपक्रुष्टं



The image shows a close-up of a textured, yellowish-brown surface, likely the cover or endpaper of an old book. The material has a mottled, aged appearance with various shades of yellow, tan, and brown. There are visible signs of wear, including creases, wrinkles, and small dark spots or stains. The texture is uneven and fibrous, characteristic of old paper or parchment. The lighting is somewhat uneven, with brighter areas in the center and darker tones towards the edges.

[illegible]

धन
वज्र
१

पवना ४ नेत्र साग्वधजा ४ वायु वांग सवजा ४ गन्धन सवजा ॥ १९ ॥ पूर्व बाह्य पनिकाया ४ मेघा ४ मेघि
यक्रि निग ४ दजिन स्य पुनिकाया ४ वज्र पानि स्वर्ग द्याया ॥ २० ॥ पश्चिम स्य पनिकाया ४ लाके ग्वे नमः ४ ग्राय
सर्व निवल ल विष्कं मि ४ सम कर ५ स्य उरु न ॥ २१ ॥ पूर्व द्वा प्रयमान क ४ दजिन दाने प्रह्ला नक ४ पश्चि
म द्वा ने प्रमा नक ४ उरु न दान विद्या नक ॥ २२ ॥ गन्धन को न अचर अज्ज को ॥ नर्कि नाज नेत्र स्य
निज दसु वायु वेस्य मद्वा वनः ॥ २३ ॥ य ४ नथा गत वाफा दिष्टि दिग विगं धि नारु व वनु पृथिवी मलु सरु वं पुव
रु क वच ॥ २४ ॥ ॐ तिग्री वज्र सत्त काय स्य नथ गत वाफ गनं समा फं ॥ ॥ गुरु ॥ ॥ यध माणा दि ॥
ॐ नमा वक्षाय ॥ गुरु वत मा धमाय ॥ नायि ते न मा सुदाय ॥ मरु ले म नमः ॥ ॥ यद वा सं नि म नो वन क नक
म न म लि ने य च य का पा ता न थ रु जं ग म सु नि म ति कि न ॥ ॥ धरु स र्वा ध का ना ४ के ला अ मि वि ला से प्र मू दि त
ह द या मे च वि द्या ध ने द्रा रु मा ज द्वा न रु तं मू नि व ल व च नं ॥ ॥ गु मा या नि स र्व आ यां ता ॥ ॥ पु का अ स न स न न न

२

सिधगंघर्वनाग॥१॥ कृष्णभुक्तिन्नत्रंशोदागच्छहनिहनागकृष्णमादिदवाशापूजापचपचात्रेस्तुतुवननमीनमदि
तिन्नंरुयकृष्णहवाचयामियसमिहसीनसाः केमहामानसूत्रनमावकायनमाधर्मायनमासद्याय॥ ॐ नमा
श्रीमंशनाय॥१॥ अथवज्रधनसिमानइदीनदमक॥१॥ विलाकविजयिवीनागुचनार्कूलि
लाज्वर॥१॥ विदधपुत्रिकाकृष्णानरुलकमत्रानन॥१॥ जालयनवज्रवनस्वकननमरुमू॥१॥
हकृन्तिन्नंगप्रमुखेत्रननेवज्रपानिहि॥१॥ इदीनदमकेविनेविनेवीरुत्सत्रुपिहि॥१॥ उजालयति॥१॥
कनन॥१॥ पुस्तकवज्रकाटिहि॥१॥ पुष्पायमहाकननागदर्थकने॥१॥ पत्रे॥१॥ हस्तपुष्पागयमदि॥१॥ का
विग्रहत्रुपिहि॥१॥ वृधकृष्णकनेनथि॥१॥ साईपुनविग्रहे॥१॥ पुष्पमनाथसवधरुगवनंनथगतं॥ कनोडलिप
नहत्वाण्डमाहस्थिनोगुन॥१॥ ई॥ मदिनायममाथाय॥१॥ नंकंपायमविहा॥१॥ मायागानाहिसंवाधियथारिह
वामरु॥१॥ अहानपंकमग्नना॥१॥ कृष्णवाकनचनसा॥१॥ हिनायवसत्वा॥१॥ मन्त्रनरुलापय॥१॥ युकासय

धन ॥ सर्वथा हगवान् स्रुतगन्तुः ॥ ८ ॥ महासमयं कृत्वा ॥ ९ ॥ द्वियस्य वित्तं न ॥ १० ॥ हगवान् कृतं न कायस्यः महाविषमस्य गीतं
नमः ॥ मङ्गली हनसत्त स्रुतं नमः ॥ ११ ॥ स यत्नवः ॥ १२ ॥ गतिं गार्थं मृदा गार्थं महाधमसमासिवा ॥ आदिमध्यांत कलाती नाम
३ संगतिमुरुमां ॥ १३ ॥ याति नैलाविगावधे लापियं न हना गतिः ॥ पुस्त्यन्ने च संवधे या हा खरु पुनः ॥ १४ ॥ माया जान
महा नये या चस्मि संपगी यत ॥ महावज्रधने दधे न पुमये मद्रुध निरिः ॥ १५ ॥ अहं चेनाधयिष्यामि निर्णीत च हटा ग
पशा यथा हगवान् महनाथ सर्वमेव द्रुगुधुके ॥ १६ ॥ पुका सयिष्य सत्ता ना यथा सय विलाषतः ॥ अस्य रत्नं नासाय
अगा खरु न हनये ॥ १७ ॥ उवमधुष्युधुद्रावजपा निनय गतं ॥ कृत्वा जलिपुत्रं कृत्वा पदं कायस्थिती ग्रुतः ॥ १८ ॥
अगा वला हनना धमिगु ॥ अथ गभके मनि हगवान् संवध विपदा तुमे ॥ निर्धमया यता स्त्री ता स्वजिज्ञासु म
खां कृतं ॥ १ ॥ स्मिन् संदर्भलोका नाम पायत यस्वधने ॥ वेला स कनेत च तु माला ली सा सने ॥ २ ॥ डि ला क मा पुन
यत्नवः मधु न मागी ना ॥ पुण्डरा खरु गुरुधुद्रावजपा धी महावले ॥ ३ ॥ साधु वज्रधनः ॥ मा साधु वज्रपा नियः ॥ यत्नवः

[illegible]

समस्तवपु दग १॥ १०७॥ महावेना चनवृद्धा महामे निमहाम निः महामनय हू नामहाम कुनया नमः ॥ १ ॥
दग पात्रमिना साफा दग पात्रमिना सयः ॥ दग पात्रमिना गुद्विदस पात्रमिना नयः ॥ २ ॥ दग हृमि श्वेना नाथ दग
हृमि पुर्हि धि नः दग हान विगुहात्मा दग हान विगुह मुकः ॥ ३ ॥ दग का ना दग धर्था र्था मुनि दग वला विरु ॥
अजाख विग्वार्थ क ना दसा का नवमि महान ॥ ४ ॥ अनादि निष्पन्नात्मा गुहात्मा नथ नाम कथा रूत वादी यथा वादि
नथा कारी अत न्य वाकः ॥ ५ ॥ अद्य यादया वोदि च हृदय कारि च मस्ति कः ॥ नेना म्य हि ह नितीदः क नी र्थ म्म ग ति कृत
॥ ६ ॥ सर्वत लभ मा दग ति कृ था गत मना जवः ॥ जिना जिना नि विरु थि चक वृही महावल ॥ ७ ॥ अमृता ग ना च र्था
गल लभ ग लप ति वसि ॥ महान् लो वा धो न या इ न न या महान यः ॥ ८ ॥ वाग्देव वा क च क र्वाग्मी या च स्य ति त्र नं न जि ॥ म
न्य वादि च च पुः स पा प द स कः ॥ ९ ॥ अवेर्व का ह ना ग म्म मि ख र्ज पु न्य क ना य कः ॥ ना ना नि र्था नि र्था नाम हा रू ते क
का न नः ॥ १० ॥ अह जिना सर्वा रि रु वे ना ना लभ जि न डि यः ॥ अम पा फा ह म पा फः ॥ ति ह ना ह ना विल ॥ ११ ॥

धन ॥ विशाचननसंपन्नः सुगता सावत्पन्नः निर्नमानि नरका नः सपद्यनया ॥ १२ ॥ संसात्रपात्रका दिस्थः कृत
कृतस्थः ॥ स्थिरः केवलयस्ताननिष्ठो नः पक्षसत्त्वविदाननः ॥ १३ ॥ सद्धर्मधमत्रातुलसात्रलाका साककः न
पन्नः धर्मज्जगधर्मी ताता अयोमा गमपदगकः ॥ १४ ॥ सिधार्थः मिधिरुपुः सर्वसंकल्पवर्जिनः निर्विक
साकथा धा उद्धमेधा उद्धपनायायः ॥ १५ ॥ पूषावानपूषासंरुता स्तनहानाक संमहन् ॥ स्तानवोसदगोह हानीसला
ताद्ययसंरुतः ॥ १६ ॥ गमग्वता विग्वत्रायागिध्वान अयाधिया पतिपुत्रात्मवेद्या कृततः पन्नमापत्ति कायधृक् ॥
१७ ॥ पचकायात्मका वृधः पचहानात्मका विधुः पचवृधसमृद्धः पचरुतसंगधृक् ॥ १८ ॥ जनकसर्ववृ
क्षाना वृधपूषः पन्नोवन्नः ॥ पक्षरुवरवयानिधर्मय निरुगवाथा कृतः १९ ॥ घनेकगमना वज्रात्मा सशाजाता जग
त्यलिः ॥ गगना हवः स्वयत् ॥ पुहस्तानात सामहन् ॥ २० ॥ वनाचनो महादि कि हानन्या निवत्राचनः ॥ जगत्स
निपास्ताना स्कोमहाननः ॥ पुहस्तनः ॥ २१ ॥ विद्यात्रागीयमरु अमरुताता महाथकृत् ॥ महाक्षीपा हृन्वा वि

[illegible]

मम ॥ नानिर्घाषा वज्रघाषः षष्ठकृतः ॥ २ ॥ मंरुर्धारासहनादमुत्तरे कनकोमहात् ॥ आकाशधनुषयोर्योर्धाराषां च वनः ॥ १०
६ ॥ आदर्शनं कान्तमथ दग्धं ॥ तथैवाहूतं तेनात्मैकं कान्तिनेत्रं नृणां गुण्यं यदि वृषहागहिनादानं भोजनः ॥ १ ॥ धर्मसंखा
महागदा धर्मगती महाजनः ॥ अप्रतिष्ठितनिर्वाणदग्धदिग् ॥ मूर्तिरिह ॥ २ ॥ अन्तर्गतपुत्रोत्पत्तिः ॥ नीतार्थमनामयः स
र्वत्रपावतासंघातः ॥ अखण्डितिविबुधकः ॥ ३ ॥ अप्रधुष्योमहामाद्यः ॥ मेधाभुक्तमहानः ॥ समुच्चिन्नार्थमार्गस्थः ॥ धर्मकर्ममहादयः ॥
४ ॥ वैश्वदेवककुमालो गस्थवित्रलः ॥ प्रज्ञापतिः ॥ द्योतिगन्तव्यः ॥ कान्तमुत्तरे सुंदनः ॥ ५ ॥ लोकस्वतन्त्रः ॥ नाचोत्त
काचार्या विगतद्वेदः ॥ नात्मा मुक्ता विलाका ॥ गगननायनिर्लसः ॥ ६ ॥ गगनालगासंरागः ॥ सर्वरुद्रानसागतः ॥ अविश
उकागहलाहवपजलदानः ॥ ७ ॥ गमिगणेषु हलगाः ॥ संसारार्थवपानगाः ॥ हानहिषा कर्मकृत् ॥ सम्यकसंवृद्धत्वं ॥
८ ॥ विशुद्धः ॥ स्वगमनस्थितानंदमिमुक्तिगाः ॥ सर्वार्थविधिमुक्तः ॥ आकाशसमतागतः ॥ ९ ॥ सर्वकृगमनातिकः ॥ स्यात्त
गतिगतः ॥ सर्वसत्त्वमहानात् ॥ गुणस्वरूपस्वरतः ॥ १० ॥ सेवापधिविनिमकुकोः ॥ व्यासवत्सनिस्स्थितः ॥ महाचिन्तामनि

धनसर्वत्रकालमाविशुः॥ ११ ॥ महाकल्पननृत्तिना महाहृदयसहस्रं सर्वसत्त्वार्थकर्मो हि तेपीसत्त्ववत्सलः॥
१२ ॥ गुणगुणं ह कालं ह समं ह समं विदुः॥ सत्तदिष्टावेन ह विमक्तिं यथा विदुः॥ १३ ॥ गुणगुणं ह
धर्मं ह पुनस्तु मगनादयः॥ सर्वमगलेमागना कर्हिस्त्रीयं गुरुं॥ १४ ॥ महासंवा महाश्वस महातना
महानवि सत्कान ४ सत्कतिर्हति ४ पुमादः श्रीयसः पुतिः॥ १५ ॥ वनं ह वनं दः श्वः गनं ह वनं ह मः
॥ महारयातिपूर्वनातिः गत्वरयनागनः॥ १६ ॥ गितिविगीतुगीतुदिलः कतिमो ह किनी निमातः पंचाननः ४ प
गितिवः पचचित्रकः गत्वरः॥ १७ ॥ महादुःखनामो जि वस्त्रवागीवनामः॥ महापौः रुपा निष् ४ मो रुका जि वमा
गुतिः॥ १८ ॥ वस्त्रविद्यामः वस्त्रमः वस्त्रनिर्वा वस्त्रमाफ तातः॥ मुक्तिमागी वेमाद्रो ज्ञः विमुक्तिः ४ नृपा सिवः॥
१९ ॥ निर्वा व निर्वृतिः ४ गतिः ४ गित्याति यामनकः॥ सुखः ४ वनं कृतिः ४ वेना रागमपधि रुयः॥ २० ॥
नृपा नृपा वा को निना लसनिनं जनं॥ निरुसः सर्वकावापि सुखा विरुमना सुवः॥ २१ ॥ अत्रा विनत्रा विमन

॥ २॥

वानद, धानिनाय ॥ सुप्रवृद्धा विवृद्धा दुमाः सर्व ॥ सर्व ॥ २२ ॥ विह्वानवैद्यमनानि नाः हानवद्वनूप ॥ २३ ॥
तिर्विकल्पा निनालग ॥ सुप्रवृद्धा कार्यकृत् ॥ २४ ॥ अनादिनिधनावधः आदिवृष्टानि नन्वये ॥ हानवैकचइनेम
लोः हानमृक्कि सुथागत ॥ २५ ॥ वागीश्वरी महावादि वादिनावाति दिपुंगव ॥ वनगावगावष्टाः वादिहि
पनाजिन ॥ २६ ॥ समनदगी प्रामायः राजा मासि सुदर्शन ॥ गीमा कुपुलादि फीः हासूनक नयति ॥ २७ ॥
महारीषधन ॥ अष्टगनहर्षा निवृत्त ॥ अस्वस्वस्वस्वस्व ॥ एकमया धिनहासिपू ॥ २८ ॥ अस्वस्वस्वस्वस्व
कास ॥ गीमानचक्रमदल ॥ दगदिगया मपर्यताः धर्मधर्ममहाद्वय ॥ २९ ॥ अगच्छति कविपूला मेणीक नृपम
अल ॥ पञ्चनिर्लखन ॥ गीमाननलचक्रा महाविशु ॥ ३० ॥ सर्ववृद्धा महागा ॥ सर्ववृद्धा लवधक ॥ सर्ववृद्ध महा
योग ॥ सर्वधक गगन ॥ ३१ ॥ वज्रनलाहिषक ॥ सर्वनलाधिपग्वन ॥ सर्वलोक ग्वनपति ॥ सर्ववज्रधनाधिप
॥ ३२ ॥ सर्ववृद्ध महाविह्व सर्ववृद्ध मनागती ॥ सर्ववृद्ध महाकाय ॥ सर्ववृद्ध सनसुनि ॥ ३३ ॥ वज्रसूर्य महा

कलाकवजं विमलपुरुषं विना गदिमहा न विभवः कृतपुरुषः ३३ ॥ सर्ववज्रपर्यकावधसंगातिधर्मधुक
वधपञ्चाख्यीमान् सर्वहृद्धानकागधुक ३४ ॥ विश्वमायाधनानां वधविद्याधनमहानवजकिं महाव
क्रियविगुधपनमाकृत ३५ ॥ इत्येवमुक्तमहानवजधर्मा महायुधः ३६ ॥ जितजिह्वजगतीर्यवजवेधिर्यथैक ३७ ॥
३८ ॥ सर्वपातुमिगपुत्रि सर्वरुमिविरुतनः ३९ ॥ विगुधधर्मानेनात्मा सम्यक्ज्ञानं इह न्युत ४० ॥ मायाजान
महायागः सर्वतुष्टाधिपः पनः ४१ ॥ अग्रेववज्रपर्यकातिग्रेवहृद्धानकायधुक ४२ ॥ समन्तरं सुमतिः
क्रितिगर्जजगत्पतिः ४३ ॥ सर्वगैर्लोकवृद्धमहागणविश्वनिमावकधुक ४४ ॥ १० ॥ सर्वलावस्वलावाग्धुः ४५ ॥ सर्वलाव
स्वलावधुक ४६ ॥ अनुत्पादधर्मा विश्वार्थः ४७ ॥ सर्वधर्मस्वलावधुक ४८ ॥ सिमितसुप्तसनात्मा समेकसर्ववदधिधुक ४९ ॥ पश्य
५० ॥ सर्ववृक्षानां हृन्निविस्तुपरास्वनः ५१ ॥ पश्यवर्गं सानुनगमथाद्यवत्त्रिगणः ५२ ॥ १० ॥ कार्यसाधकैः पन
सर्वपायविगाधकः ५३ ॥ सर्वसत्त्वालमा नाथः ५४ ॥ सर्वहृत्पुमावकः ५५ ॥ १ ॥ किं सञ्ज्ञसूत्रकश्च हृन्निपुनपुर्हाः ५६ ॥

[illegible]

स्थः सर्वनिर्यासदशकः ॥ १३ ॥ द्वादशगंगहवास्ताताद्वादशका नगधधक ॥ चतुःशमयेनया कान नृ पृष्ठाताववाध
 धक ॥ १४ ॥ द्वादशका नसत्पाथः षोडशका नरत्तविक ॥ विगत्या कानसे कषिबीवृधः सर्ववित्पत्रः ॥ १५ ॥ अम
 यवेषनिमानः कायकातिविलावकः ॥ सर्वकृताति समयः सर्वचिह्नकृतार्थवित् ॥ १६ ॥ ना नायाननयापा
 यजगदधीधिलावकः ॥ यानतिदयनिर्याकः कमानरुनसिक्तः ॥ १७ ॥ केगधनुविगुधत्माधर्मधनु
 क्रयंकनः ॥ गद्यादधिसमूही ॥ यागकागनतिशितः ॥ १८ ॥ केगधपुद्गसः सप्तहिनगवासनः ॥ पृष्ठापायम
 लाकनूनाः अमाद्यजदेगर्थकृत् ॥ १९ ॥ सर्वसह्यपुहिनाः अविहानार्थानिनाधकृत् ॥ सर्वसत्त्वमनावित्त्वमः स
 सर्वसत्त्वमनागकीः ॥ २० ॥ सर्वसत्त्वमनांरुः सचिह्नसमनागतः ॥ सर्वसत्त्वमनानस्थः सर्वसत्त्वमनानति
 ॥ २१ ॥ सिद्धो गविप्रमापतः सर्वशक्तिविशक्तिः ॥ निःसदिग्धमनिस्यः ॥ सर्वाधतिगुनात्मकः ॥ २२
 पचस्कन्धार्थद्विक्कातः सर्वकृतविलावकः ॥ एककृताति सर्वधः सर्ववृधस्वलावधकः ॥ २३ ॥ नृनं गकायकाया

॥ १ ॥ कायकोपिविस्तारकः ॥ अंगीस्व नृपसदग्रीनत्त के पुर्महामतिः ॥ २८ ॥ समग्राह्यनगमधचतुर्विंशतिः ॥
 ॥ २ ॥ सर्वसंशयध्यायव्यावृधवाधिननरुनः ॥ अनङ्गनामप्रयानिर्मलामकुकलपुयः ॥ १ ॥ सर्वमज्ञा
 र्थजनकाः सदाविश्वननरुनः ॥ पंचाग्रनामहासंन्याः विङ्गुन्याः खगुन्याः ॥ २ ॥ सर्वाकाशनिनाकाका
 षादगमकाडविंशधकाः ॥ अकलशकननागिनगवपुधधनिकादिधकः ॥ ३ ॥ सर्वश्चानकलाहिरुः समाधिकूलः
 गमविदुः समोधिकायकोपागुः सर्वसंशयकायनादः ॥ ४ ॥ निम्नानकायेकाः ग्राह्यवधनिर्मातवंधकः ॥ दगदिमिः
 ग्वनिर्माताः जगद्वजगदर्थकृतः ॥ ५ ॥ दवादिदवादेः वदुः सुनेडादातवाधिपः ॥ अमनदः सुनगुनेः पुमार्थः
 पुमर्थग्वनेः ॥ ६ ॥ उक्तिः रुवकांतानः कसासागगुनेः ॥ पुल्यानदगदिगलाकः धर्मादानपतिमहानः ॥
 ७ ॥ मेतुसनाहसंनरुः करतोर्वमवर्मितः ॥ पुराखर्षधनवानः कगमज्ञानननंरुः ॥ ८ ॥ मानानिमानजिद्वीनः
 ग्वठमीनरुयोनकृतः ॥ सर्वमासचमूजनाः सर्वधलाकः ॥ ९ ॥ वयुः पुष्पातिवायग्वः मोतनि यचनिरुगः ॥ अचनि

यत्तन्मात्मान्मा तमस्य ४ पत्तमगुत्त ४ १० ॥ ऐलाकेककुमगतिः वीमपर्यन्तविकुम ४ ॥ ऐ। वीद्यः १ ॥ अविषयपूतः
खगहिरू ४ ४ पत्तनस्मृतिः ४ ११ ॥ वाधिसत्त्वामहासत्त्वः लाकागिनामहर्षिकः ४ ॥ पुष्पापालमिगानिष्टः ४ पुष्पागता
समागतः ४ १२ ॥ आत्मवित्तनविसर्वः सवार्धयोग्यपूगवः ४ ॥ सर्वाप्रमामतिकोताः रुधाह्वानाधिपः ४ पत्तनः ४ १३
॥ धर्मदानपतिः ४ ॥ यच्चवृत्तमुदार्थदगकः ४ ॥ पर्यापात्यतमागताः निर्यातययापताः ४ १४ ॥ पत्तमाधविगुत्त
केलाकेगुरुगामहन् ॥ सर्वसपत्नः ४ ॥ शीमानमरुतीः ४ ॥ शीमगोवतः ४ १५ ॥ हृत्पाद्वानह्वानगमथापचदजमी
॥ ४०४ ॥ नमस्तुवतदवजाश्वः ४ ॥ हृत्कातिनमस्तु ॥ नमस्तुगुत्तगागहः ४ ॥ वृधवाधिनमस्तु ४ १ ॥ वृधवागनम
स्तु ४ ॥ वृधकायनमानमः ४ ॥ वृधपितिनमस्तु ४ ॥ वृधमादनमानमः ४ २ ॥ वृधस्तनमस्तु ४ ॥ वृधहासत
मानमः ४ ॥ वृधवाचनमस्तु ४ ॥ वृधलावनमानमः ४ ३ ॥ अरवाहवनमस्तु ४ ॥ नमस्तुवृधसंरुवः ४ ॥ गगत्ता
हवनमस्तु ४ ॥ नमस्तु ४ ॥ नमस्तु ४ ॥ मायाशालनमस्तु ४ ॥ नमस्तुवृधनागकः ४ ॥ नमस्तु सर्वसत्त्वः ४

अप्र०

११

पयिष्यन्ति नाम धयमा प्रमपि अयानि वावपानि ॥ यावत्पुष्पकगर्भे नमपि गुरुत्वा ॥ नयिष्यन्ति ॥ प्रपुष्प
पदिपमा ल्यवित्पपवर्ध्वी वलक्तवध नद्य ॥ पुष्पकगर्भे ॥ पुष्पयिष्यन्ति ॥ नमपि तिष्ठति ॥ मयपुननवहवर्षग
नयुषारुविष्यन्ति ॥ ॥ यवत्पुष्पकगर्भे नमपि गुरुत्वा ॥ नयिष्यन्ति ॥ प्रपुष्प
याहकसमयवृद्धायेनामा स्मरु नगी प्रमपि अयानि वावपानि ॥ यावत्पुष्पकगर्भे नमपि गुरुत्वा ॥ नयिष्यन्ति ॥ प्रपुष्प
॥ नमपि गुरुत्वा ॥ नयिष्यन्ति ॥ प्रपुष्प
स्यानामा स्मरु नगी प्रमपि अयानि वावपानि ॥ यावत्पुष्पकगर्भे नमपि गुरुत्वा ॥ नयिष्यन्ति ॥ प्रपुष्प
माहगवत अयलिमिकायूहानसुविनिश्चिन्तननाजायकथगनायाहकसमयवृद्धायेनामा स्मरु नगी प्रमपि अयानि वावपानि ॥ यावत्पुष्पकगर्भे नमपि गुरुत्वा ॥ नयिष्यन्ति ॥ प्रपुष्प
माहपुननवहवर्षग
सरावविष्पमहानमपि तिष्ठति वा नमपि तिष्ठति ॥ १ ॥ ॥ ममपि गुरुत्वा ॥ नयिष्यन्ति ॥ प्रपुष्प

११

[illegible]

कृष्ण
१२

वि नं कुं न मा रु ग व र्ण अ प लि मि ना य स्त न सू वि नि शि चि क र्ण जा ना जा या स्र था ग ना या र्ह न स मा स्त व द्वा य ॥ क य था ॥
कुं प ॥ २ महा पृ ॥ अ प लि मि त पृ ॥ अ प नि मि ना य पृ ॥ हू न स र्ण ना प वि क र्ण ॥ कुं सर्व स स्का न प नि गु ध ध र्म क
ग ग न स मू र्ज क स्त ला व वि गु ष्ठ म हा न य प लि वा न स्था हा ॥ ३ ॥ क न त्व ल ए न १ स म ये स फ स फ ना व द्वा का टि ना
म क म न नै क स न न १ ०० द म प नि मि ना य १ सू र ल पि क ॥ कुं न मा रु ग व र्ण अ प लि मि ना य स्त न सू वि नि शि चि
क र्ण जा ना जा या स्र था ग ना या र्ह न स मा स्त व द्वा य ॥ क य था ॥ कुं प ॥ २ महा पृ ॥ अ प नि मि ना य पृ ॥ अ प नि मि ना य पृ ॥ हू
न स र्ण ना प वि क ॥ कुं सर्व स स्का न प नि गु ध ध र्म क ग ग न ॥ स मू र्ज क स्त ला व वि गु ष्ठ म हा न य प लि वा न स्था हा ॥ ३ ॥ क न
त्व ल ए न १ स म ये न प च ष क ना व द्वा का टि ना म क म न नै क स न न १ ०० द म । वि मि ना य १ सू र ल पि क ॥ कुं न मा रु
ग व र्ण अ प नि मि ना य स्त न सू वि नि चि क र्ण जा ना जा या स्र था ग ना या र्ह न स मा स्त व द्वा य ॥ क य था ॥ कुं प ॥ २ म
हा पृ ॥ अ प लि मि त पृ ॥ अ प लि मि ना य पृ ॥ हू न स र्ण ना प वि क ॥ कुं सर्व स स्का न प नि गु ध ध र्म क ग ग न स

१२

मर्गनस्तुवविगुहमहानयपनिवात्रस्वाहा ॥ १ ॥ ननखलपुनः ४ पच, पचा। गतिनावृधकादिनामकमन
नेकसुनेननन्दमपनिमिनायसुदंलापिकं ॥ ॐ नमो हगवतञ्जपनिमिनाय हानसुविनिश्चि क नयागजायानथप
गायाहकसम्यक्वृधाय ॥ नयथा ॥ पुनः २ महापुनः ४ अपनिमिनाय पुनः ४ अपनिमिनाय पुनः ४ हानसे लनापचिन्।
ॐ सर्वसस्कात्रपनि सुदधर्मनगगनसमृद्धकस्तुलावविगुहमहानयपनिवात्रस्वाहा ॥ १ ॥ ननखलपुनः ४ स
मयनः १ वत्ता निंगतीनावृधकादिनामकमननेकसुनेननन्दमपनिमिनायसुदंलापिकं ॥ ॐ नमो हगवतञ्जपनिमि
नाय हानसुविनिश्चि क नयागजायानथपगायाहकसम्यक्वृधाय ॥ ॐ नयथा ॥ पुनः २ महापुनः ४ अपनिमिनाय पु
नः ४ अपनिमिनाय पुनः ४ हानसे लनापचिन् ॥ ॐ सर्वसस्कात्रपनि सुदधर्मनगगनसमृद्धकस्तुलावविगुहमहान
यपनिवात्रस्वाहा ॥ १ ॥ ननखलपुनः ४ समयनपचविगतिनावृधकादिनामकमननेकसुनेननन्दमपनिमि
नायसुदंलापिकं ॥ ॐ नमो हगवतञ्जपनिमिनाय हानसुविनिश्चि क नयागजायानथपगायाहकसम्यक्वृधाय

श्रु ५
१३

नदथा ॥ ॐ पू ॥ २ महापू ॥ अपत्रिमि न पू ॥ अपलिमि नाय पू ॥ हानसरात्रापचित ॥ ॐ सर्वसंस्कारपत्रिगुह
धर्मनगग ॥ समूह के स्वरावविगुह महानयपत्रिवात्रे स्तोत्रा ॥ १० ॥ ते नखलूपून ४ समयदगगगम नदिका
लूकापमानां वधकाटिनां मकमकनेकसूत्रन ॥ १० ॥ दमपत्रिमि नाय पू ॥ ॐ न मा हगवन अपत्रि
मि नाय हानसूविनिश्चितन ॥ नागायाहकसम्यकवधाय ॥ नदथा ॥ ॐ पू ॥ २ महापू ॥ अपत्रिमि न पू ॥ अ
पत्रिमि नाय पू ॥ हानसरात्रापचित ॥ ॐ सर्वसंस्कारपत्रिगुह धर्मनगग ॥ समूह के स्वरावविगुह महान
यपत्रिवात्रे स्तोत्रा ॥ ११ ॥ यच्छदमपलिमि नाय पू ॥ सुप्रतिस्तिष्ठंति लिखापयिष्यंति सगतायुषावखग
तामृषावविष्कि ॥ ॐ न मा हगवन अपलिमि नाय हानसूविनिश्चितन ॥ नागायाहकसम्यक
वधाय ॥ नदथा ॥ ॐ पू ॥ २ महापू ॥ अपत्रिमि न पू ॥ अपत्रिमि नाय पू ॥ हानसरात्रापचित ॥ ॐ सर्वसं
नपत्रिगुह धर्मनगगनसमूह के स्वरावविगुह महानयपत्रिवात्रे स्तोत्रा ॥ १२ ॥ यच्छदमपलिमि नाय

१३

४सु३।लेखिष्यन्ति लिखपयिष्यन्ति सतकदाचिन्नकषूपपद्येन नतिर्यागानि नयमला कनचशुभपयर्हो नकदा
चिरुपुनितनप्यके॥ यद्ययजमपपद्येन नय नयमानो जातिस्मानाहविषंकि॥ ॐ नमो गवत अपत्रिमिनाय ह्रीं नसुवि
निश्चिन्नकजा नाजायस्तथागनाया ह्रीं नसमकं वक्षय॥ नयथा॥ ॐ पूष॥ २ महापूष अपत्रिमिष्य अपत्रिमिनाय पूष
॥ हानसुलाना पचिन्न॥ ॐ सर्वसंस्कारपत्रिगुह धर्म नगग ॥ समुद्र न सुलवविगुह महा नयपत्रिवा नसाहा॥ १३
॥ य४०० दमपत्रिमिनाय ४सु३ लिखिष्यन्ति लिखपयिष्यन्ति॥ ननचतु नमिति धर्म नाजिकासहस्रा निपुनिकापिना नित
विषा कि॥ ॐ नमो गवत अपत्रिमिनाय ह्रीं नसुविनिश्चिन्नकजा नाजायस्तथागनाया ह्रीं नसमकं वक्षय॥ नयथा॥ पूष॥ २
महापूष अपत्रिमिनाय पूष हानसुलाना पचिन्न॥ ॐ सर्वसंस्कारपत्रिगुह धर्म नगग ॥ समुद्र न सुलवविगुह महान
यपत्रिवा नसाहा॥ १४॥ य४०० दमपत्रिमि नाय ४सु३ लिखिष्यन्ति लिखपयिष्यन्ति॥ नस्य पंचानं नर्या निकर्माव
न ॥ पत्रिगुयगं कि॥ ॐ नमो गवत अपत्रिमिना ह्रीं नसुविनिश्चिन्नकजा नायस्तथागनाया ह्रीं नसमकं वक्षय॥ न

अपन यथा॥ ॐ पू॥ महापू॥ अपनिमित्तपू॥ अपनिमित्तपू॥ हानसंज्ञापवित्र॥ ॐ सर्वसंस्कारपवित्रगुध
धूर्म्मनगगनसमूहकस्वरावविगुधमहानयपनिवात्रे स्वाहा॥ १५॥ यः ४० दंमपनिमित्तपू॥ ४० सुत्रलिखितं
नितिरापयिष्यति न समाना न्या न कायि नतयत्र नृकसान अकालमृतं अवनात्रलया न॥ ॐ नमो हगवन
अपनिमित्तपू॥ नमू विनिचितकज्ञाज्ञायै सुभागा या हन्ति सम्यक् वृद्धाय॥ नद्यथा॥ ॐ पू॥ २ महापू॥ अप
निमित्तपू॥ अपनिमित्तपू॥ हानसंज्ञापवित्र॥ ॐ सर्वसंस्कारपवित्रगुधधूर्म्मनगगनसमूहकस्वरावम
हमहानयपनिवात्रे स्वाहा॥ १६॥ यः ४० दंमपनिमित्तपू॥ ४० सुत्रलिखितं नितिरापयिष्यति॥ नमो मनका
लसमय नव नव वृद्ध को यः ४० संभवे दर्शनं दास्यति वृद्ध सह सुहृत् न कस्यापि नामयति वृद्धं वृद्धं संक्रामति
नाउ ससंय विमति न त्पादयिते वा॥ ॐ नमो हगवस्य अपनिमित्तपू॥ नमू विनिचितकज्ञाज्ञायै सुभागा
या हन्ति सम्यक् वृद्धाय॥ नद्यथा॥ पू॥ २ महापू॥ अपनिमित्तपू॥ अपनिमित्तपू॥ हानसंज्ञापवित्र॥ ॐ

[illegible]

ॐ

११

पद्मगवेषात्तु गावदति य वरु विष्णु नि निर्या ॥ निग ना नो म ग य कि ना द कि ॥ क र्क पृ ८ नि पु लि ॥ न से वे ॥
अ न र ना या स म क क वि म ति सं ल स्य क ॥ ॐ न मा र ग व क अ प नि मि ना य ह न स वि मि र क न ना ना ना य क
था ग ना या र्क स म क क व धा य ॥ न य था ॥ ॐ प ॥ २ म हा प ॥ अ प नि मि र प ॥ अ प नि मि ना य प ॥ ह न स
ना प चि र ॥ ॐ र्वे स सं स्का न य नि स र्क ध र्म र ग ग ना स म र्क न स र ता व वि ग ॥ म हा न य प नि वा न स हा ॥ २०
॥ य ४ ॥ ० दं म प नि मि ना य १ स र नि र्दि वा कि नि र ता प यि षं कि र म्प मि र ता स म क क वि द यि पु नि ल्प क
॥ ॐ न मा र्क र ग व क अ प नि मि ना य ह न स वि मि र क न ना ना ना य क ॥ था ग ना या र्क स म क क व धा य ॥ न य था
॥ ॐ प ॥ २ म हा प ॥ अ प नि मि र प ॥ अ प नि मि ना य प ॥ ह न स ना ना य चि र ॥ ॐ र्वे स सं स्का न य नि स र्क ध र्म र
ग ग ना स म र्क न स र ता व वि ग ॥ म हा न य प नि वा न स हा ॥ २१ ॥ य ४ ॥ ० दं म प नि मि ना य १ स र न त्र ना र्क ध र्म प र्क
म १ मू दि ग्ध य १ क म पि का र ता य क न दा स नि ॥ न न पि सा ह म हा सा ह म ला क धा तु स फ न त्र म य प ति प र्क

११

[illegible]

大

95

[illegible]

ॐ ॥ १ ॥ महापुत्राय नमः ॥ अपनिमित्तपुत्राय नमः ॥ अपनिमित्तपुत्राय नमः ॥ ॐ सर्वसंस्कारपुत्राय नमः ॥ ॐ सर्वसंस्कारपुत्राय नमः ॥ ॐ सर्वसंस्कारपुत्राय नमः ॥
सुतावविष्णुमहानयपुत्राय नमः ॥ २६ ॥ अथ रत्नवाक्यस्य मन्त्रायां ॐ मागधाय नमः ॥ ॐ ॥ दानवलेन स
सूक्तवृद्धः दानवलाधिगता नलसिंहाः दानवलेन स चतुःशतमसिंहाः का नृनेकस्य पुत्रपुत्रविभक्तं ॥ २७ ॥ गीलवननस
सूक्तवृद्धः गीलवनाधिगता नलसिंहाः गीलवननस चतुःशतमसिंहाः का नृनेकस्य पुत्रपुत्रविभक्तं ॥ २८ ॥ क्रानिवननस सूक्तवृ
द्धः क्रानिवनाधिगता नलसिंहाः क्रानिवलेन स चतुःशतमसिंहाः का नृनेकस्य पुत्रपुत्रविभक्तं ॥ २९ ॥ वीर्यवननस सूक्तवृ
द्धः वीर्यवलाधिगता नलसिंहाः वीर्यवननस चतुःशतमसिंहाः का नृनेकस्य पुत्रपुत्रविभक्तं ॥ ३० ॥ धनवननस सूक्तवृ
द्धः धनवलाधिगता नलसिंहाः धनवननस चतुःशतमसिंहाः का नृनेकस्य पुत्रपुत्रविभक्तं ॥ ३१ ॥ सुहवलेन स सूक्तवृद्धः
सुहवलाधिगता नलसिंहाः सुहवननस चतुःशतमसिंहाः का नृनेकस्य पुत्रपुत्रविभक्तं ॥ ३२ ॥ ॐ नमो रत्नवाक्यस्य अपनिमित्त
पुत्राय नमः ॥ ॐ नमो रत्नवाक्यस्य अपनिमित्तपुत्राय नमः ॥ ॐ नमो रत्नवाक्यस्य अपनिमित्तपुत्राय नमः ॥

५५
१७

मित्रपुत्र अ पत्रिमिनायु पुत्र हन संता नापचिर ॥ कुं सर्व संस्कान पत्रिगुह धर्मिक गगन समुद्र न स्वलो व विगुह माहा नय
पत्रिवात्र स्वाहा ॥ ११ ॥ ॐ नमो वचन गवाना लमना म चरि रुधा धिस चो महास चो मा वस व वि विपष सं देव मा नृत्वा सुत्र गत्र
किन्न गत्र वचन का र ग ॥ वना ल वि रुम ह न नु नि वि ॥ आर्य अ पत्रिमिना नाम धात्री माहा या न समा फं ४ ॥ १२ ॥ कु
न धर्मा द्या दि ४ ॥ १३ ॥ ॐ नमो गवते आर्य पद्म पाल मिनाये ॥ न वं मया ये नम कृमि त्स मय र गवानु ग्रव
स्वा मिह न कि म् ॥ १४ ॥ न व ने इ ना थ पि रु द म् ॥ नमो मह ता रि रु स ये न सा द् प लि पु र्ह ना र्ह ना रि रु स ह म् ॥ न वी धि म
लो ना च महा स लो ना महा स वा रु न ना ना प पु र्ह द ग ति वी धि स त्व स न स ह म् ॥ १५ ॥ सा द् सर्व न वि नि व र्ह नि म् ॥ न नू ल
ना या म म् ॥ १६ ॥ न य म् ॥ म म् ॥ १७ ॥ या च क् म ल रु ते न मे ये न व अ स न् प ति हा ने न व अ नि दि रु ध न न व ॥
१ व प म् ॥ १८ ॥ दि ग ति र्वा धि स त्व ग न स ह म् ॥ १९ ॥ अ थ स त्व म र्ग शी क् म ल रु ता ॥ २० ॥ न म न न काल समय स्व का दि हा ना
नि कु म् ॥ २१ ॥ न न थ ग न वि हा न रु ना प सं क्रा म इ प सं क् म व हि द्वा वि हा न सि न्ना रु ह थ ग न स्य द ग ना य प र्ग पा

१७

[illegible]

[illegible]

यद्मासुक्तमनदवाचनं ॥ ननु कनयसर्वधर्मा नृपसुखिः किं मिदानीत्युच्यते ॥ अपिच
ननु त्वामश्रेयः ॥ कश्चिदवपेक्षक्यकः सत्त्वात्किं कस्य त्वेवद ॥ मंश्री नाह ॥ न स्याहृगवन्नवपेक्षक्यवदयावकः
नववधधर्मात्किं सच हृगवंपूनतपि पक्षक्यनपुमात्सत्त्वधर्मात्किं ॥ न स्याहृगवंपेक्षक्यवदययत्पुमात्त्वधर्वित
यः हृगवानाह ॥ सचपूनतपि नमंश्री ॥ कश्चिदवपेक्षक्यत् ॥ किं पर्यापनस्य त्वधर्मात्किं ॥ किं कस्य त्वेवद ॥ मंश्री नाह ॥ न स्याह
हृगवन्नवपेक्षक्यवदययत्पर्यापना नृत्पादचिह्नात् ॥ हृगवानाह ॥ सचत्पूनतपि नमंश्री ॥ कश्चिदवपेक्षक्यत् ॥ किं कस्य त्वेवद ॥ मंश्री नाह ॥ न स्याहृगवन्नवपेक्षक्यवदययत्पुतिष्ठि
न ॥ सत्त्वाधर्मात्किं न सत्त्वेवद ॥ मंश्री नाह ॥ न स्याहृगवन्नवपेक्षक्यवदययत्पुतिष्ठि नृत्पादधर्मात्किं ॥ पुति
ष्ठिनसत्त्वाधर्मात्किं ॥ हृगवानाह ॥ यस्मिन्समययत्त्वमंश्री पुरुषानमितांतावयसि ॥ ननु कुरुपुतिष्ठिपुरुषानमितांतावय
सि ॥ मंश्री नाह ॥ यस्मिन्नहृगवन्नसमयपुरुषानमितांतावयसि ॥ अपुतिष्ठि नयं नस्मिन्समयपुरुषानमितांतावयसि ॥ ह
हृगवानाह ॥ अमिपुतिष्ठि न स नमंश्री नाह ॥ सेवहृगवन्नपुरुषालमितांतावय ननु चित्पुतिष्ठन ॥ हृगवानाहयसि

अनन्ता
पुष्प
२०

समयमहती ४ पुष्पातमिनां रावयसिक ननता कृगत मूल नस्मिसमय उपचयंग चतुपचयं वा ॥ महती नार ॥ नमलगवस्तुस्मि
समयकिं किं लुगलमूल रूपचयंग चतुपचयं वा ॥ नालोप पुष्पातमिनां रावयति ॥ यस्याकस्यचिधर्मोपापचया वाञ्छवचया
वाहवति ॥ नमलगवन्पुष्पातमिनां रावना वादिनवा ॥ याकस्यचिधर्मोपापचया वाञ्छवचया यवापुष्प पसिना ॥ साहगवन
पुष्पातमिनां रावना या नैवपथ अ नधर्मी नृजहति ॥ नापि वृधधर्मी नृपादले ॥ नत्कस्मादेनो रुथाहिरेगवपुष्पातमिनां
वनान कस्यचिधर्मोपापतम न पयु पसिना यधर्मी पजस्यार पादिंदेनवान् ॥ साहगवन ना या नैव संसा नदीत्वा नृपया
तिननिर्वाण्ड ता न ॥ नत्कस्मादेनो रुथाहिः रगवन संमानभवता वत्रसमं नृपधर्मिक ४ पुनर्वा ४ संसा नदीत्वा निर्वाधमवतावता
पत्ररतक ४ पूर्वा वादिनि वान मुना नृद स्यामि ॥ साहगवन पुष्पातमिनां रावना यत्र कस्यचिधर्मोपापनं वाग्रहवा ॥ संवालि ४ सन
वासाहगवन पुष्पातमिनां रावना या न कस्यचिधर्मोपापनिर्वाधवृधिवर्तिलपस्यत ॥ नत्कस्मादे ४ नहिरेगवन नृनृया दहियत
वावदु नदीयं वरगवन नासा पुष्पातमिनां रावना या नैव संसा नदीत्वा निर्वाधमवतावता वत्रसमं नृपधर्मिक ४ पुनर्वा ४ संसा नदीत्वा निर्वाधमवतावता

२०

धर्माभ्यां दयति वा निना धयति वा ॥ सा ह गवन् प्रह्लापा न मिना लावना या न कस्य चि धर्मो न च वा पुंस्त्वं वा कना ती या ह
गवन्नेवं लावना सिवं र गवन् प्रह्लापा न मिना लावना ॥ पुन न पत्र र गवन् प्रह्लापा न मिना लावना या ने वा चि न्त्या धर्मा न प
थय न न पाद सि का न अपि उ खल पुन ४ र ग वं सु द पि न सं वि द्य न ये न प्रो थ्य न य न पार्थ न य न प्रार्थ न य न व ला वना
र ग वन् प्रह्लापा न मिना र ग वन् प्रह्लापा न मिना ला वना ॥ एवं पुंस्त्वं पश्चि न् ० म धर्मा १ अ ० म धर्मा ना हि ० ति ना पि
ना धर्मा नू य न र ॥ य षां धर्मा ॥ म गृ न वा हि न ना वा स्या न ॥ ५ वं प्रह्लापा न मिना ला वना या ग न ये क ४ कु ल पू य सर्व धर्मा ४
नो प ल ह ते ॥ न र ग वन् प्रह्लापा न मिना ला व ना क शि ध र्मा मृ गं वा हि न ना व स्य य ति ॥ न क स्या द ना अ र ग व न्न नू त्पा द स्य ॥ क
शि द गं वा ना पि न थ ना ह ते को ष्ठा वा या व त्स र्व धर्मा ॥ किं किं द गृ म्वा ५ व ल वा ना र ग न् प्रह्लापा न मिना ला वना ॥ ५ व मू क र ग व
न मं रू शी यं कू मा न रू म न द वा व न् ॥ न पु न ४ म रू गी न ग रू ध र्मा ४ ॥ म रू शी ना ह ॥ अ गृ म्वा र ग व न्ना ग रू ध र्मा ४ ॥ ना
किं पु न र ग वन् सर्व धर्मा गु न्ना ० ति न थ ग न ना हि सं वृ ४ ॥ र ग वा ना ह ॥ ५ व म न्म रू शी ४ ॥ ना १ सर्व धर्मा न थ ग न ना हि सं

अनन्ता

ब्रह्मा

२९

ब्रह्माष्टमशुभा नाह ॥ तत्की पून ४ रगवत्तु न ताया अय नायां न ही न तावा प्र ह्यय न ॥ रगवानाह ॥ साधू साधु मंशुगी न वमव
न त्मंशुगी र्यथा कथय सिन पून मशुगी न नूतनायो वृद्ध धर्मा ॥ मशुगी नाह ॥ पुन मंशुगी वत्त नूतना वृद्ध धर्मा ॥ तत्कस्माद
कस्माद हि रगवत्तु स्व केन धर्मा न संविद्यते ॥ नापत्त एव न न नूतना वृद्ध धर्मा ॥ पून नपत्त रगवत्तु सा प्रहृ पात्र मि
ता लावना मा न वृद्ध धर्मा ॥ अमा ना धन नाये सम्वत्त न पथ न धर्मा ॥ प्रहा नाय सम्वत्त न वृद्ध धर्मा ॥ न मित्री न सन्ध्या न मित्रि
न वंता वना रगवत्तु प्र हृ पात्र मिता लावना प्र हृ वा या न कश्चि धर्मा चिक य न विज्ञा नित्य ॥ रगवानाह ॥ न स्वमंशुगी वृद्ध धर्मा
चिक य सि ॥ मंशुगी नाह ॥ ना रगवत्तु चिक य य म ह रगवत्तु वृद्ध धर्मा ॥ पति मिषा हि म्यध य न रगवत्तु प्र हृ पात्र मिता लावना
कस्माद चिक य सि वि क लो न पत्त पत्ति ना ॥ न पथ न धर्मा ॥ ममावक धर्मा ॥ मप्रत्त क वृद्ध धर्मा ॥ मसम्वत्त वृद्ध धर्मा ॥ न
॥ तत्कस्माद कस्माद स वन धर्मा म्यु हृ पात्र मिता लावना या ग म नूतन ४ कूत पृथ नापत्त यत्ते ना धर्मा ॥ पथ न धर्मा नानिदि
रग न् ॥ नैरु धर्मा नानिदि रग न् ॥ नैरु धर्मा नानिदि रग न् ॥ सम्वत्त वृद्ध धर्मा नानिदि रग न् ॥ तसक्त कतया धर्मा न स म नूतन

२९

मि॥ त्वं त्वं वना र्गवन् प्रह्लापा नमिनां लावना॥ न र्गवन् प्रह्लापा नमिनां लावना गमनं यत्कस्य कलप्रसूये वं हवति॥ अयं कामभनय
रूपक्षतु नयमा नृपाक्षतुमा वंदयंति शोधक्षतु निति॥ तत्कस्माद्विस्तृता हि सरवेर्गं न कश्चिद्वर्मा यानि शोधधर्म समनूपयति॥ त्वं त्वं
व नार्गवन् प्रह्लापा नमिनां लावना वदितव्या॥ पूनतप नं र्गवन् प्रह्लापा नमिनां लावना यान कस्य विद्वर्मा स्थापका नंवा अयं
का न क्क क्कति॥ न हि र्गवन् प्रह्लापा नमिनां लावना वृद्धधर्मा अंदा विन पृथग् न धर्मा अंमा क्कति॥ नृषेव सार वन् प्रह्लापा नमिनां ला
वना॥ यानेव पृथग् न धर्मा अंतिना अं न वृद्धधर्मा अंप्रति लंर॥ त्वं त्वं र्गवन् मंशाय क्कमात्र हत म न दवा च न॥ साधू साधू म
शाय स्यं मिमम व रूपग मि न धर्मा दग य सि॥ स्त्रा विना न म ग्रा त्रिय मूडा वा धि स त्वा नाम स स त्वा नामा हि मानि का ना वग्ध व
का ना सो प ल मि वा ना च वा धि स त्वा मानि का ना यथा प त्रै ह त पु नि व धा म न न म र्ग शी ४ कल प्रह्लापा कल इ हि ना ना वा नृ क वृ ध प य
पा सि ना र वि षा ति ने क वृ धा व ना पि न कू ग स मू ला य ७ मं ग मि न प्रह्लापा न मिना नि द ग ७ त्वा ने नु सि ष कि सि षा कि न स क्क॥
सि ष कि न स क्क स मा प त्म क॥ अ पि नु ख प न मं शाय न ति क र्म न वृ ध स ह सा नि व ना पि न कू स ल मू ला र वि षा ति॥ य ४ ३० मा ग

३२

२२

किं न पृष्ठापात्रमिति तं निदगं त्वा विमाय किं नो दुगाय किं न स नो समापत्स्य न ॥ एवं मूकं मंशुश ४ कुमालह गलगव न म १५
वाच न ॥ प्रतिला किं मलगव न रुयस्य माय पाप ह्य वा न मिना पि निर्दग् ४ ॥ यति लतु न मंशुश नि किं लगवा न स्या वा च न ॥ मंशु
श नाह ॥ मखासा लगव न पृष्ठापाल मिना ला व ना व दि न वा ॥ याना क स्य सि ध र्म स्या ध्या ल व ना य पुष्प प सिंहा ॥ तत्क स्या द
त्वा सु धा हि ल ग व त्रि न म्भ ना ॥ सर्व ध र्मा नु वे ला व ना ल ग व पृष्ठा पाल मि ना ला व ना ॥ पुन न प न ल ग व न सो पृष्ठा पाल मि ना ला व
व ना या न क सि ध र्म सं किं ध क म्वा वा व दाय न वा स म नू स्य किं व ला व ना ल ग व न पृष्ठा पा न मि ना ला व ना ॥ सा वि खा ल ग व न पृ
ष्ठा पा न मि ना ला व ना ॥ अथ व ल ग व न मंशुश यं कुमालह न मा म नू य न स्या ॥ किं य क स्य मा मंशुश सु धा ग ना ४ ॥ पय्य पा सि ना ४
मंशुश नाह ॥ या व ल ग व न मा या पुन व ल चि रु चे न सि का ति र्ध ४ ॥ मंशुश म मा ल ग व न त था ग ना ४ पय्य पा सि ना ४ ॥ ल ग वा ना ह
न त्व मंशुश ४ वृद्ध ध र्म स सिंहा ४ मंशुश नाह ॥ व शि त्प न ४ ल ग व न ध र्म उ प ल य न या न वृद्ध ध र्म सं सिंहा ४ ॥ ल ग वा ना ह ॥ क स्य
पुन मंशुश न न वृद्ध ध र्मा ४ मंशुश नाह ॥ ल ग व न नु व ना व द न वृद्ध ध र्मा कृ ति ना म न स वि ध न ना प ल य न कू न ४ पुन न त लो म्भ

२३

विष्णुकि॥ हगवानाह॥ पाफा नमंशुती नसऊना॥ मरुतीनाह॥ नयथा गावदहं हगव नुसऊने वनत्किं कथाहमसऊनामन
पाप्मामि॥ हगवानाह॥ नत्कि निषर्त्तुती मरुती कधिमा॥ मुमंशुतीनाह॥ हगवाने वगावकाधि म॥ निषर्त्तु० कथं पुनरह
तिरवस्थामि हगका निप्रमानि कृत्य॥ हगवानाह॥ हनकाटि त्रिति मरुती० कस्यो नदधि वचन॥ मरुतीनाह॥ हनका
त्रिति हगवनसत्कायस्ये नद दिवचन॥ हगवानाह॥ किं सन्धाय मंशुती नववदसि मरुतीनाह॥ अंसं नख हगव काय० नेष
स कामनि नावसं कामनि रुने वस कामा अंसं काय०॥ अथ खलु आयुष्मान्सा नद्व निपूत्रा हगवन कम नदवाचत्॥ कियता
हं हगवनवाधिसत्तामहासत्त्वा हविष्णुकि वाधयय० मंषु ह्वापानमिना निर्दगग्रत्वा धिमायु कता वसिष्ठा कि नसऊ
मापत्स्यके॥ अथ खलु मेघवाधिसत्तामहासत्त्वा हगवन कम नदवाचत्॥ आसति हगायै कुरुव नुवाधिसत्तामहासत्त्वा हविष्णु
कि वाधयय० मंषु ह्वापानमिना निर्दगग्रत्वा अधिमायु कता वसिष्ठा कि नसऊ समापत्स्यके॥ नेक समाह्वता नेषैव हगवन
प्रमावाधियेषाधर्मा म नूवाधना॥ अथ खलु मरुती० कुमाल ह कम नदवाचत्॥ वृक्षयं वने हगवनवाधिमत्तामहासत्त्वा द्रु

७५५५ वायव्यं संप्रसापासमिता निर्दग्गं ॥ साधिमार्क कनायसिषकि नसवसिषकि नसकुसमापत्सक ॥ नत्कस्मादं कावृधवर्गनेह
 २३ गवत्पत्रमार्थकार नृत्पादस्येन विवचनं ॥ अथत्वरुनिताल वागव क म न द वा च त् ॥ नत्क र ग व त् वा धि स त्वा म हा स त्वा ४ पृथ
 क नाध मी न ग्म व क ध म्मा नृ पृथ क वृद्ध ध म्मा नृ स म्म क वृद्ध ध म्मा न ध्म सं वि ष क य ०० संप्रसापा न मि ता निर्दग्गं ॥ साधिमार्क
 क नाय सि ष कि न स व सि ष कि न वा स मा प त् स क ॥ नत्क स्मा दं का स थ हि र ग व त् त्रि नां सं वा ४ सर्व ध म्मा ४ अ स वि ष मा न त्वा त्ने
 स्वा मा सं व न त्र स वि ष न ॥ अथ र क्त र ग वा ना य्म क सा जि द्दि ति पु द्म मा म कु य न त्वा ॥ न वं मे व चा त्रि पु दे व मे न त् ॥ निय गा स
 क्त ल पु द्म ४ क्त ल ह हि न च र वि ष कि वा ध य ०० संप्रसापा न मि ता निर्दग्गं ॥ साधिमार्क क ॥ नाय सि ष कि न स कु स मा प त् स क ॥
 अ वि नि व र्त्त नि य र्त्त मे ल ग म न द नि पु द्म पु नि षि का मा नृ क्त ल पु द्म स च ह द क म न द नि पु द्म र ग व ता ध म्मा धा तु न हि सं वृ ध ४ स्या
 ह या सा व नृत्पा द धा तु ४ स नि नृ द्वा र व त् ॥ अ पि तु ग्म न द नि पु द्म नृ वं ध म्मा धा तु वा धि ४ ॥ नत्क स्मा दं का त्रि ४ स त्वा हि ध म्मा धा तु अ
 र वा ४ सर्व ध म्मा ०० नि वा ध त्रि मू क्क मा न स न द्या सो ध म्मा तु त्रि नि ॥ सं ता ग च्च कि ॥ नत्क म्मा ध ना ४ सर्व ध म्मा ध ना ना स त्वा

२३

वृधचित्तयवृज्जना नालमिति रदकगभनद्विपू॥ अविहृफिकपदविहृफिकमिति॥ रदकगभनद्विपूवन्नक्तकविहृपयि
 तुं संस्कृतत्वे न वाया वदसंस्कृतत्वे न वा नदका॥ चविहृफिक नदविहृफिकं॥ सर्वधर्माहिरदकगभनद्विपूविहृफिक॥ नत्का
 त्यादनास्तथाहि सर्वधर्माः शोभा इत्येव नानि॥ यस्मिंस्तत्त्वाविहृपयन्॥ यामिमिज्ञानकर्मोपसृता अचिन्त्यपुसतासायचान्य
 पसृतास्तनपसिनास्त॥ नत्कस्मादना नदचिन्त्यमिति रदकगभनद्विपूवृहृदपदमन्॥ यथाचिन्त्यसमन्तागता नेव न स्वर्ग
 गमिनानापायगमिना नपत्रिनिर्वाणगमिना॥ नत्कस्मादना नदचिन्त्यगमनागमने नपुण्यपसिना॥ यावन्नपत्रिनिर्वाणगम
 नागमने नपुण्यपसिना॥ यपिरदकगभनद्विपूवन्नक्तकविहृपयन्॥ नत्कस्मादना नदचिन्त्यगमनागमने नपुण्यपसिना॥ यावन्नपत्रिनिर्वाणगम
 दस्यमन्॥ इत्युच्यते॥ अत्र हि त्रितयं प्रतिष्ठितं सति न नदचित्तवचनं॥ उत्पन्नमधिवचनं कतमित्यधिसमाशाप्य रदकमान
 द्विपूवन्नक्तकद्वि॥ तीयाहवति॥ नत्कस्मादनास्तथा विसर्ग इत्यधिकसमाशाप्य॥ अकार रदकगभनद्विपूवृहृदना
 ह्मिन्नुदादयापत्रिहृशतं॥ अत्र द्विगभनद्विपूवृहृदना ह्मिन्नुदादयापत्रिहृशतं॥ कस्य का रदकगभनद्विपूवृहृदना ह्मिन्नुदादयापत्रिहृशतं॥

पह
२८

निगुणादयपनिरुक्त॥ अकस्मिन्कारणे दकभनहनिपुत्रहिहृनहिनिगुणादयपनिरुक्त॥ असंस्पृहगतनिकारि
नहकिनागुर्वरुच्यते॥ सानहनिपुत्राह॥ किंसन्धनमरुगीनववदसि॥ मरुगीनाह॥ नसंमगासमपहकासुव
वसानेजीवदंसधायरदकसानहनिपुत्रववदामसमपहगतनिकारि॥ काहिहृनहृनकी॥ असर्वरुच्यते॥ अनुरही
लुनिरुदकभनहनिपुत्राह॥ जी॥ सर्वस्येनदिविवचनं॥ सानहनिपुत्राह॥ किंपुनः सन्धनमरुगीनववदसि
मरुगीनाह॥ असुत्पित्तस्यार्याभीनसविद्यत॥ नकिंसुत्पित्तनि॥ रुदसंधनदकभनहनिपुत्रववदामनरुहि
लयलुहृनहृकीनासर्वस्येनदिविवचनमिनिगुनहनिपुत्राह॥ अनुरात्राकिकरुमिमरुगी॥ कस्येचदधिवचनं॥
मरुगीनाह॥ सनहदकभनहनिपुत्रअनुरात्राकिकरुमि॥ सानहनिपुत्राह॥ अनुरात्राकिकरुमि॥ सानहनिपुत्राह॥
अविनिनरुहृकेत्रिनिमरुगी॥ कस्येनदधिवचनं॥ मरुगीनाह॥ अविनीकाहिहृत्रिनिरुदकसानहनिपुत्राह॥
जी॥ सवस्येनदधिवचनं॥ नकस्मादुकात्रविनयाहि विनिनात्रचिनाविनिन॥ कस्येनदधिवचनं॥ वधुनियस

२८

मृडागगनात्पन्नानिनात्सक॥यनकेनचिधर्मसमन्वागततापत्रकिचित्पदमहदमपदसोनहृदनकाननद्विपूवधिवच
नंयइतवृधच्छति॥तथागतंरुदकगगनद्विपूवपर्यधिंदुकामनआत्मापर्यधिनवाआत्मतिरुदकगगनद्विपूवइत्येकदधि
वचनयथाआनेत्माअएकमानसंविद्यननापलएक॥तथावृद्धापएकनयामंविद्यननापलएक॥यथाआत्मानकचिधर्म
वचनीयसुथावृद्धापिनंकनचिधर्मवचनियायवनकाचित्संखासूनागवृधच्छति॥नवेतहृदकगगनद्विपूवसूकमा
हानुंमात्मनियनधिवचनमवमिहृदकगगनद्विपूवसूकमाहृदवृधच्छयनधिवचनं॥अथखत्वायुत्मानागगनद्विपू
वोएगवकमनदवाचन॥नायंएगवमश्श्रीःकुमानरुतसुथादसयति॥यथाकर्मकवाधिसत्ताआश्रितियः॥अवमूकमर
श्रीःकुमातरुतआयुमेकगगनद्विपूवमनदवाचन॥नोहृदकगगनद्विपूवतथादगयमीयथाकनविनावाहकश्रीहृद
किनापुहृदसुथादगयामि॥यथाकश्चिद्विहृदसकिनेकस्मादननेवाधिः॥कश्चिद्विहृदनापिसंवृधनद्विहृदसूगानसूगानात्ता
दिगननिनाधिनानधिनानापिदिहृदनापदसि॥अनवदमहृदकसानद्विपूवयावनावाधिःसाचवाधिर्नरावातापरावः॥नकस्मा

पुस्तक
२५

नानाधा किं हि स वाधवा नापि वाधि। वाधिमहि संवृद्धं ॥ अत्र द्विपुत्र आह ॥ नमश्चालग वगाधर्मा धातुन हि संवृद्ध ॥ मरु
शी नाह ॥ नरदक अत्र द्विपुत्र हग वगाधर्मा धातुन हि संवृद्ध ॥ नरक साधुना सुथा हि रद क अत्र द्विपुत्र धर्मा धातुन वरुग वा
सकृत् पूर कलर हि हृत् जीनीयूर्य ॥ मं प्रहृत् पात्र मिना निदगग्र ॥ वाधिमाधु क ना प्रसिष्य कि न स क सिष्य कि न सं क्रा समापत्स
क ॥ मूढा च पुनिय हिष्य कि न न सान द्विती पूयन सदा न प न मार विष्य कि ॥ महा दान न मा वि सिद्ध दान प न य स अ न द्विती पूय गी ल
संप नार पन म वि गि क गी ला ॥ शील शुन संप ध्या का य ॥ मं प्रहृत् पात्र मिना निदगग्र ॥ वाधिमाधु क ॥ ना प्रसिष्य कि न स प्रसिष्य कि न स
क्रा समापत्स पत्स क ॥ न न सान द्विपुत्र प न मया ना क्त्वा पन म न विर्य ल प न मी द्या ने ॥ पन मया ॥ य निस मया प्रहृत् या समया
समत्वा ग मा ह विष्य कि ॥ न न अत्र द्विपुत्र वा धि सत्ता महा सत्ता ॥ या वत्सर्वा का न व ना प न न सर्व ह हान न त सम ना वृग गी र वि
ष्य कि ॥ य ॥ मं प्रहृत् पात्र मिनि दगग्र ॥ वाधिमाधु क ना प्रसिष्य कि न स क सिष्य कि न स क्रा समापत्स क ॥ पुन न प न रग व
न मरु गी य कु मा ल ह न म न द वा च न ॥ किं पुन लं म र ॥ अ न व स प न च स्य न ह नां स म क्त्वा धि म हि सं वा द ॥ मरु गी ना ह

२५

सुवेदहृगवन्वा (धयं संपु निरुपमव मह मिदु यमहि संवाधं आ हरगव न्वाधिप्रार्थयामि ॥ नक्तस्माद गवाधिसत्ता नवे
खो याममेश्वरी ॥ कृमात्तल्लुग ॥ नवमूक हरगवान्मरुती यकृत्तल्लुग मरुदवी चत् ॥ साधुसाधु मरुती यस्व मिमामवन्वातिग
की नानिस्तानानि वक्तु सि ॥ यथापि नामत्वं पूर्वज्ञी नकिनाधि ना इ नूपत्तु वनि नवमूकवर्ग्यशा मरुं शा नाह ॥ तत्तु हरगव धर्म
सादय ह म नूपन म्वा निष्ठा ॥ नवमूक हरगवान्मरुती यमात्तल्लुग मरुदवी चत् ॥ पस्यामित्वं मरुं शा नि मा मयमाव का पसंयद
मरुं शा नाह ॥ पस्यासि हरगवन्वा ॥ हरगवानाह ॥ कथं पस्यासि ॥ मरुं शा ना नाह ॥ तथा हरगवन्वा पस्यासि यथा नेव पथ ऊ नायगभा
मी नेवालो जी जानगभासि ॥ नेव पस्यासि ॥ नव पस्यासि ॥ तन्ने वरुन्वा गभासि नो यत्ता कात्वा गभासि यनेव विदिता स्यासामि ॥ अथ ख
तु आ यमाच्छा नद्वि पूश मरुं शा यकृमात्तल्लुग मरुदवी चत् ॥ यत्तत्वं मरुं शा ॥ अवकयामिका न्यवंपस्याति सम्यक् वध पात्रिका न्प
नत्वं कथपस्यासि मरुं शा नाह ॥ वाधिसत्ता न्नि हरगवन्वा गभासि न्नि पूश नाम वृत्तम नूपस्यासि न्नि संवृत्त क व्निता मधर्म नस मव
पस्यासि ॥ नव हृदक गभासि न्नि पूश सम के वृधमानिका निगभासि ॥ अ नद्वि पूश आह ॥ सु था गदस्व मरुं शा कथपस्यासि ॥ मरुं शा

७५
२६

नाह॥ केवुं रुदक गभन दनि पूना लम मां मरु ना गय र्ह य॥ एवं मुके आ युष्मा सा नद नि पूना मंरु श्री यं कुमाल ह त म नद वा चर
वृ ध ० नि मरु श्री क स्मि त द धि व च न मंरु श्री नाह॥ यु प्र पु न ४ रु द क सा न द नि पू न अ ह॥ अ नू त्या द स्मि त म र्श श्री न धि व नं॥ य र ना
म नि॥ मंरु श्री नाह॥ ल व म व रु द क गभ न द नि पू न य स्मि त द व च न आ त्म नी त स्मि त द धि व च न वृ ध ० नि॥ अ पि तु रु द क गभ न द नि
रु अ प दा धि व च न मं नू य दि द मू च न वृ ध ० नि न म रु द क गभ न द नि पू न सू क तं वा ना रि वि हा व यि तु वृ ध ० नि॥ वा ग पि रु
द क गभ न द नि पू न सू क ता नि रू प यि तु मि यं वा ग नि क उ रु द क गभ न द नि पू न यः द व म द हि॥ ० दं स म्भ य रु द क गभ न द नि पू
अ वं व दा म वि नि ना रि रु त्रि त्प र्ह न॥ श्री सा श्र व स्मि त द धि व च न॥ सा न द नि पू न अ ह॥ अ धि चि रु च त्रि ती नि म र्श श्री न वं व द मि
म र्श श्री नाह॥ न थ हि रु द क गभ न द नि पू न वा धि क ना॥ ल व मु के आ युष्मा रु द नि य पू ना मंरु श्री यं कु मा न ह त म न द
वा च र॥ सा ध सा ध म र्श श्री य स्मं य था द न त्रि अ श्र वं रु क थ य मि॥ म र्श श्री नाह॥ ल व म न रु द क गभ न द नि पू न य थ रं द हि
श्री ना य वा स्मि न वा र्ह क ल्क स्मा धि गे ल थ हि रु द क गभ न द नि पू न रु ती ना म अ श्र वा ४ अ व क र्ह मी चा पु ल क व रु द रु मी वा अ

२६

ननहदकगननहनिपूयपर्यायनकीनाग्रवानचास्माहन् ॥ अथखनूतगवान्मंरुगीयकूमालरुतमनदवाचन् ॥ स्यात्मंरुगी
पर्यायावाधिसत्त्वामहासत्त्वावाधिमनुनिषर्त्तुत्वा ॥ अस्यादन्तुनांसम्यक्वाधिमहितवाधुं ॥ मंरुगीनाहे ॥ स्यात्तुल्यग
वन्पर्यायायधिसत्त्वामहासत्त्वावाधिमनुनिषर्त्तुत्वा ॥ अन्तुनांसम्यक्वाधिमहितसंबुद्धं ॥ नत्कस्मादनास्तथाहिवाध
वनूनपिधर्मानसंविद्यननावननस्यनाचनअन्तुनांसम्यक्वाधिनितिसाज ॥ वाधिनन्तुनाननकचिद्वर्मासंविद्यन
नापनस्यकयावाधिमनुनिषीदनयावावाधिसद्वसव्वत्थान् ॥ यनवावाधिमहितमहितसंबुद्धं ॥ यवावाधिमहितसंबुद्धं ॥
यवावाधिमनुत्तिरुदिनि ॥ अन्तुनहगवन्पर्यायत्तारयावाधिसत्त्वामहासत्त्वावाधिमनुनिषर्त्तुत्वा ॥ अन्तुनांसम्यक्वाधिम
हितसंबुद्धं ॥ नवमूकैरगवान्मंरुगीयंकूमालरुतमनदवाचन् ॥ वाधिनितिमंरुगीकसेनदधिवचनं ॥ मंरुगीनाह ॥ वाधिति
निलगवन्पंचानांमाननयात्तमनदधिवचनं ॥ नत्कस्मादनास्तथाहिवाधिपुनरुक्तिकान्यवनानिपक्षनकयात्तनांवत्काल
नेषावाधिनानकर्यापुनरुक्तिकान्ननकर्यानामहितसंबुद्धमानावाधिवचपत्तकीरावनासर्वधर्मववाधि ॥ नत्कस्मादनासर्वध

३५२
२७

कथापापैति कुरुनक मेचिदहि संवसानकान्त ह्यता यावद विदिता नु वमखा वापि अ पितु खलप न रगवा काना
हिनिके ४ सुपिगाना तांनि ॥ अरि सवध यावतु पथे कि कृता निनुवंसूके लगवा मरु शीर्य कूमा न हन मनदवाच ॥ क
क मरु शीर्यमाकि कय वरव तिन थाग गोम न थाग न ॥ मरुगी ग्राह ॥ ना हि दं रग वनु न कृत्वा धन न मरुग वने वर वर
थाग गोम न थाग न ॥ गत्क स्माद्ध ना सुथा हि वेवं नथ ना च न थ गा तु था च व सुथा हि रग वनु न थ ना ग था ग न विरु
पय कि नापि सुथाग ना सुथ ना विहा प य ति ॥ न कृत्वा धन ना सुथा हि रग वनु पन मा थ ना अरु वा न थ ना ॥ अरु व सुथाग म
स्मो र हि रग वनु म नुवंर व तिन थाग गोम न थाग न थ ॥ अ पितु ग थाग न ॥ कि रग वना म थ य मा न म म क न नो मो न
न थाग गोम न म नुवंर विधा ति ॥ न थाग गोम न थाग गोम न थाग न ॥ रग वना हि ॥ संम य सुम श्र आ सु थाग न ॥ मं रग
नाह ॥ ना हि दं रग वा वनु संम य ॥ संचे का चिह थाग ल प नि निधा ति स्था न थाग गोम न थाग न प नि निवां संवा ॥ नुवंसूके
लगवान् मरु शीर्य कूमा न ह न म न द वा च ॥ न न व म रग व नि उत्प न न थाग न ॥ मरु शी ग्राह स्मात्मी रग व

२७

त्रयमगमा ०० निसंखर्म्म या ना तत्प हि १ स्था ॥ नाभि म्च सत्वं मर्म्म श्री ४ गगन दिवान् का पमा वृक्षार गव न १ पमि
निविता ०० नि ॥ मर्म्म श्री ग्राह ॥ कचि र्पुनर्गव न्न कवि खया वृक्षार ग का य दि मचि न्प विखया १ ॥ गव नानाह ॥ तु वम न्त्वे म
रुशी गाह ॥ न न हि र्गव न्न न गगन दिवान् का पमा वृक्षार गवा न् ॥ १ पमि निर्वृ ना शा न्त क स्मा ६ का सुथा हि र्गव न्न न क वि
खया वृक्षार गव का य दि द मचि न्प विखया १ ॥ न चाचि ना उत्प य क वा नि नृध वा न स्मा ६ ग व न्न वा पिसं वृध न ये पी न पि
पि न अना ग न्द नि न था ग न् अह न् १ सम्य क वृक्षार विषा नि अरि सं वृध न् व क ॥ न क स्मा ६ ना न्द्र चि न्क ना अ दि ना वा
अना ग ना वा पु र्पु र्प ना वा ॥ न स्मा ६ ग व न् विष म म् क वा ता क स नि व स शा पु प च य कि न्द्र ग व न् ता क स नि व स य रा म व क
नि उत्प न् क था ग ना या वत्प नि नि र्वा स्य नि वे नि ॥ न व म् के र्ग वान् ॥ म र्म्म श्री य क्मा ल ह व म् ते द वा च न् ॥ न न हि म र्म्म श्री
नि द न् था ग ना चि न्प न था ग न् स्य वा श न् उ दा ह न् नृ ह न् न वे व र्दि क स्य वा पिसं वृध न् म हा सत्वं स्य चार्ह ना वा त्रि ना पु व स
॥ न क स्मा ६ ना सु था हि न् अ स्था ने वा न ह्म स्य नि ॥ ने व द्ध नि को अ कि ॥ न क स्मा ६ ना सु था हि न् चि न्प म वि न्त्वे नि वे

पृष्ठा

२८

स्यंमरुशी नाहा नृचि स्या नानिचि स्या नाह गवन्न सर्वधर्मा ता को वा नृहा सि निवा ॥ पु नि को ध नि वा ॥ नृगं ॥
यत्थेवमरुशी कृ था ग ना नि चि स्या ॥ नृथेवपथग्न ना अ पि नि चि स्या ॥ मरुशी नाह ॥ पथग्न ना अ पि र ग व न नृथे
व नि चि स्या ॥ नृग वा नाह ॥ एवमनृमरुशी ॥ नृक म्मा द ना कृ था हि सर्वा नि चि स्या नि ॥ मरुशी नाह ॥ नृक म्मा द ग व न व
मा हा यत्थेव न था ग ना नि चि स्या ॥ एवपथग्न ना अ पि चि स्या ॥ नि ॥ न नृह ग व पथग्न ना स म पि नि च्चं स नृक म्मा द
ना ॥ नि चि स्या हि र ग व न सर्वधर्मा ॥ य क थि ह ग वे नि नि र्वा ता य म्मि वा वि ह स्य के नृह ग व स कृ क म्मा द ना र्थे व नि चि स्या
ना द व प नि र्वा ना य प म्मि वा वि ह स्य के नृह ग व स कृ क म्मा द ना र्थे व नि चि स्या ना द व प नि नि र्वा ता नृम ना हि र ग वा ना सि नि
चि स्या ना या ना ना लं य पि नृह ग व न व मा हृ त्रि म प थ ग्न न धर्मा ॥ नृथ आ र्थ धर्मा ॥ नि ॥ नं ॥ द म्म च नी या ॥ क स पा न मि
त्रा ति ना व ल्प र्थ पा स ध न न ॥ प म्म नृहा स ॥ म ॥ प थ ग्न न धर्मा ॥ नृथ आ र्थ धर्मा ॥ नि ॥ नृव म्म कृ ह ग वा अ र्थि या यं कृ मा
तृ लु म न द वी च नृ ॥ नृह सित्वं मरुशी ॥ नृथा ग न सर्व स ता ना म ग्मं ॥ मरुशी नाह ॥ नृह नृय म हं नृग व स कृ था ग न सर्व स ता

२८

नामगुप्तं संवदिह काचित्सत्तपत्रिनिषाकिः स्थात् ॥ हगवा नाह ॥ ॐ कुसित्वं मंरगी ॥ तथगनमचिन्त्यधर्मसमन्तागद ॥ मंर
गी नाह ॥ ॐ कुयमहरगवन्नतथागमचिन्त्यधर्मधर्मन्तागनं ॥ संवेत्तं चिदचिन्त्यधर्मसमन्तागनं ॥ हगवानाह ॥ ॐ
चसिपुनत्तमं रंशीनवमिमभवकासुथागननविनिता ॐ कि ॥ मंरगी नाह ॥ ॐ कुयमहरगवन्नवमिमगीवकासुथागनन
विनिता ॐ नि ॥ संवेत्तं चिदचिन्त्यधर्मादुविनयकृच्छ्रतृगववृक्षात्पाद ॥ कस्यचिदपकात्रतवा अ पकात्रतपप्रपसि ॥
नक्तस्मादुकासुथाहिहि ॥ ननुवं धातुनसकी ॥ अषधधुयइताचिन्त्यधर्मादुसुमिचधमोतमावकनातात्वयावन्नपृथगन
नतात्वेमूपनएन ॥ हगवानाह ॥ तत्त्वमंरगीनवमिचुसिअनूदनपृथकृत्तं तथगन ॐ नि ॥ मंरगी नाह ॥ अरावहगवे
नपृथकृत्तं तथगनसुनेनदनेरुनपृथकृत्तं नेददनेरुनपृथकृत्तं नाअवनेवदनेरुपृथकृत्तं ॥ अपिबुत्वत्पुन ॥ हगवानाह
कश्चिधर्म ॥ समदागच्छतिनशीयननुवं वनदुपृथकृत्तं ॥ ननुचविजंपजीफन्नविवर्धनतपत्रिहीयन ॥ हगवानाह ॥ किं स
मंरगीनवं वदसि ॥ ननुअप्रवीजमवत्रापि तं नविवर्धनतपत्रिहीयन ॐ कि ॥ मंरगी नाह ॥ तथाहिलगवन्नचिन्त्यं नं नअव ॥

वैकचिकमवप्रतिलिनि ॥ नवंमूकमर्शुग्री ४ कूमासहगव नमनदवाच नृ ॥ नहिरगव नचिन्त्यं पुरातिचि
त्समवहवत्सवेदवेदचिन्त्यप्रतिलया ॥ अपि तु न क्लिंचिद्यत्राचिन्त्यसर्व ॥ सहास गव नचिन्त्य ४ ताचाचिन्त्य
गद्यानासद्य नवागद ४ गच्छतिद्वेष ॥ रगवा नाह ॥ समापदसे पुनसत्वं मर्शुग्री नचिन्त्यं समाधि मंरुग्री नाह ॥ नाहिदं
गव न्राह गव नचिन्त्यं समाधिं समापय ॥ तत्कस्माद्वनासुथाहिरगव नहमवाचिन्त्य ४ समाधि ४ समाद्यह गव नचिन्त्य
माहिंसवेदाहं चिन्त्य ४ ॥ समाधिति निरुगव नचिन्त्यं चिन्त्य मंरु ॥ तत्कमचिन्त्यं समाधि समापत्स अपि तु खलू पुन
रगव नहत्स पूर्वमापिकर्मिकसोवसमूदा चात्रमचिन्त्य ४ समापलवो ऽति ॥ नमरगव नहर्हि रूयो वसमूदा चात्र ४ स
मूदाचा ॥ अति अचिन्त्य समाधि समापय हमाति ॥ तद्यथापि नामरग वन्निष सा नार्थस्य पूर्वमादिकर्मिक ह मासिकमान
स्य सर्वं समूदा चात्राहवकिण्म कीला न्यवविश्वयपिति ॥ सयदापापित्त वधेतिषा न्राहवति नदान तस्य पुननेवसम
दाचा नृत्यय ॥ किंमहं ह्याग कीला न्यवविश्वयमिति ॥ यदिदं बालवधे मसिजि नत्वा ॥ अथचपर्यं वा कोननिवा

७५*

३०

लवधनाया नदादयन्नेव विधनि ॥ लवं मवरुगव नरु मपूर्वमवसमूदावा नो रचि न्यसमाधिं समापदह मिनि ॥ नदामनमाधिं
समापन्नाने तं समाधिं विहनामि ॥ नदानसमावृत्त्यु वंरुति ॥ अतना समाधिना विहर्तव्यमिति ॥ तत्कस्माद्विनायक यदा अततस
माधिं नाविहनामि ॥ नदानदयव समाधिं नयुक्त फिक ॥ अथ खत्वा यष्मा नगानद्वनी पूजा रुगव क म नदवा च ॥ अयुहि रुगवत्
मर्त्यु श्री कृमात रुगा न विगमिनि ॥ अथ नाचि न्यत समाधिं नाविह न नू अस्मि पृ न र्गव न्न स्याद चि न्या त्मा धन न्य ४ ग न क न ४
समाधि त्रि नि अथ खत्वं मर्त्यु श्री ४ कृमात रुगा न यष्मा नं गानद्व नि पू व म नदवा च ॥ कथं त्व द न्य गानद्व नि पू व गानिष ग न क न खान्
अचि न्य ४ समाधि त्रि नि ॥ यद य्मा यष्मा गानद्व नी पू व त्वं माह ॥ अस्या न्माद चि न्या त्मा धन न्य ४ ग न क न ४ समाधि त्रि नि ॥ स चे ह द क
गानद्व नि पू व ल वा चि न्य ४ माधि ४ संविद्य न इ प ल त्प न स्या द स्या द चि न्या त्मा धन न्य ४ ग न क न ४ समाधि ४ गानद्व नि पू व आह ॥ अथ वि
मर्त्यु श्री नचि न्य ४ समाधि ४ न संविद्य न ना प न स्य न ॥ मर्त्यु श्री आह ॥ नथा धी ख रु द क गानद्व नि पू व अचि न्य ४ समाधि ४ ने खा र चि न्य ४
समाधि न संविद्य न ना प ल स्य न ॥ अवि रु द क गानद्व नि पू व कश्चि नाचि न्य ४ समाधि ४ त्ति ॥ सर्वे सत्वा अपि रु द क गानद्व नि पू व आह ॥

३०

चिन्त्यस्यसमाधर्माहीने॥ नत्कस्माद्विनासर्वहिचिन्त्यमचिन्त्याचिन्त्यानाश्रयमचिन्त्यसमाधिसुखासवसत्वाश्रयचिन्त्यस्यसमाधित्वा
हित॥ अथखनुरगवान्मर्शुग्रीयंकुमानरुतमामकुयनसम्॥ साधुसाधुमंरुगार्थस्यसर्वथाभावावन्पातिगंतिनानिसुनानिननिर्द
गसियथापिनामस्तुपूर्वजिनरुगाधिकानाश्रयनरुवित्रचत्रितवस्त्रचय्यस्तिकिकमर्शुग्रीनवरवतिप्रह्मपात्रमिनायास्तित्वा
वमाह॥ मर्शुग्रीनाह॥ सचत्मरुगवन्नेवस्यातु॥ प्रह्मपात्रमिनायास्तित्वावमाह॥ त्वमपिस्थाइपंतंरुस्तित्वावमाह॥ अत्मसंस्तुयास्तित्वा
वमाह॥ यावहावसंस्तुयास्तित्वावमाह॥ नत्कस्माद्विनासर्वहिचिन्त्यमचिन्त्याचिन्त्यानाश्रयमचिन्त्यसमाधिसुखासवसत्वाश्रयचिन्त्यस्यसमाधित्वा
मित्वास्तुनस्यादथवाश्रयनत्रप्रह्मपात्रमिनास्यातु॥ अपिउखलपुनरुगवन्नात्मस्तुनप्रह्मपात्रमिनास्तुनसमस्तुनं॥ त्वंस्तु
नमचिन्त्यंस्तुनंनकसचिधर्मस्यस्तुनं॥ नत्कस्माद्विनासर्वहिचिन्त्यमचिन्त्याचिन्त्यानाश्रयमचिन्त्यसमाधिसुखासवसत्वाश्रयचिन्त्यस्यसमाधित्वा
तामियंप्रह्मपात्रमिनाश्रयचिन्त्यधुनेतुधिवचंतंयइतुप्रह्मपात्रमिनानामयन्धचिन्त्यधु॥ ४॥ १॥ नत्कस्माद्विनासर्वहिचिन्त्यमचिन्त्याचिन्त्यानाश्रयमचिन्त्यसमाधिसुखासवसत्वाश्रयचिन्त्यस्यसमाधित्वा
नवधर्मधु॥ ४॥ समुदावात्रधु॥ ४॥ यचनि॥ ४॥ समुदावात्रधु॥ ४॥ साचिन्त्यधु॥ ४॥ यन्धचिन्त्यधु॥ ४॥ संश्रुत्तधु॥ ४॥ यन्धचिन्त्यधु॥ ४॥

[illegible]

पृष्ठा ४

३२

॥ म॥ श्री गुरु ॥ यत्नं व न संसाधनी ॥ अविष्णु किमपि निर्वीत धर्मा ॥ सुधिमा ॥ यत्नं सत्काया न च पिना येषां नागवेषमाहा
तजिना सुखे साधना नैव कृत्य ४ जीयन पत्रिकुय स्वागतिय संसागान्न संतिका कान संसा न संत्वा ॥ अकृदियने वमार्त्त विनहि
नानमाग्न संहा पत्त्या दय किने २ स्य लखित स्यार्थ माहा स्य कि ॥ नुवे मूक रगवान्म ३ श्री यंकू मानरु नमन दवा चन् ॥ साधु साधु म
३ श्री १ मूल विना ० यं वाक् अथ खलू न स्या खलाया मायुष्मा न हा क स पा रगव क म न द वा चन् ॥ अविष्णु न नाग न ध निरुत
कचिदस्य गति न स धर्म विनय स्या च गं हि नाया ४ प ह्वा पात्र मि नाया ४ स ॥ अना ना अविमा ४ न ४ ॥ अह्ना ना ४ प निग्रहि ना नावा ॥
नुवे मूक रगवान्मायुष्म न मरु का स्य प मे न द वा चन् ॥ ० हे व न का ध प प र्ब दि लि रु धू पा स का य २ ना ग न ध नि ॥ अ स्य ग म्ही न स
धर्म विनय स्या सा च ग मि नाया ४ प ह्वा पात्र मि नाया ॥ अना ना अविष्णु धिमा न अह्ना ना ४ प निग्रहि ना ना वा र विष्णु कि ॥ न द थ
यि नाम का ध प ग रू प ति वा ग रू प ति पू श वा स न स रू म मू त्य न म नि न त्वे न न ४ न ३ ४ खि ता ३ र्म ना ना रु म ना रु वे ने व पु ति न य
न सु खि त ४ ॥ सो म न स्या ता रु व न् ॥ वि ग न प र्क व स्त्रा म न सि का न ४ ॥ नुवे म व का ध प ना सां रि रु रि रु धू पा ग का पा सि का ना मि मा

३३

गमि नां प्रह्लापा नमि नामज्ञा नाम नृत्य नां प्रह्लापि निरर्वा या वद ता नाम गृह्णाम वरु विष्णु नि॥ कथं व पत्रा म ०० मा म व नृपा
गमि नां प्रह्लापा नमि नामज्ञा नाम नृत्य नां प्रह्लापि निरर्वा या वद ता नाम गृह्णाम वरु विष्णु नि॥ कथं व पत्रा म ०० मा म व नृपा
विष्णु किं सुखि ता सु मनश्च विगत पर्यावस्तु नमन सिका ॥ ८॥ च वं चं वा चं रा विष्णु क॥ अथ नृ वृद्ध दग नमरु न धा ग न पयुः
पा स न च य तु नामा समाहि त्रिय गमि नां प्रह्लापा नमि नामज्ञा नाम नृत्य नां प्रह्लापि निरर्वा या वद ता नाम गृह्णाम वरु विष्णु नि॥ कथं व पत्रा म ०० मा म व नृपा
मु य विंश आरु म न स र व नृपा नदि पो नै नि जा तं वा वि द्वा न स र्जी रु न द द्यु त चित्र त व गा यं पा नि जा तं ८ का वि द न ॥ सर्व प
त्रि सु त्वा र विष्णु ती ति॥ ८ वं म व का ग्ध प ना हि रु हि रु ॥ पा सि का पा सि का ०० मां ग म्ही नां प्रह्लापा नमि नामज्ञा नाम नृत्य नां प्रह्लापि निरर्वा या वद ता नाम गृह्णाम वरु विष्णु नि॥ कथं व पत्रा म ०० मा म व नृपा
या वद ता नाम गृह्णाम वरु विष्णु नि॥ कथं व पत्रा म ०० मा म व नृपा
गमि नां प्रह्लापा नमि नामज्ञा नाम नृत्य नां प्रह्लापि निरर्वा या वद ता नाम गृह्णाम वरु विष्णु नि॥ कथं व पत्रा म ०० मा म व नृपा
रु म न स र्जी रु न द द्यु त चित्र त व गा यं पा नि जा तं ८ का वि द न ॥ सर्व प

सहस्र
३३

पत्रिरुत्त गंगमिषा किय इत् सर्ववृद्ध मपत्रिरुत्त नया मपिय कास्य गम्नि नां प्रह्लापा नमिता या वद जागता वा नूत्त चा नथा
गन स्यात् य न स्यात्पुत्रि पच निषाति ॥ अनागत नित नद पि कास्य प वृद्धा धिष्ठा न न वृद्धा नूत्त व न ह्यन वा ॥ नत्क स्यात्सुहृत्
गध पय ॥ मां गम्नि नां प्रह्लापा नमिता या वद जागता वा म नूत्त चा ॥ अथा कित्ता य के सा पु थ म क ११ व १ नद्य थ पि नाम कास्य
पमनिका नाम नि नत्त पथ नय न आरु ना हव कि निष्ठा न तु ग न वा ना स्या म नि नत्त प थ के द ग तं पूर्वा नू पूर्व दृष्ट मन
नमनिका न दम नि कौ नत्त तु वं म व कास्य प यं ॥ मां गम्नि नां प्रह्लापा नमिता या वद जागता वा म नूत्त चा ॥ अथा
न संश्च नंदिता ह विषा कि उद ग ११ नि स्ये म न स्या जा का नाय कास्य प न सां पु थ ११ व १ य न का ष प न वं म्मा च ला
विष्ठा न तु न द व न व हा ष स्वय दि द म ११ गी यं १ कू मा न तु के सा पु ह्लापा नमिता निर्दं गं या वद जागता वा नूत्त चा मि ति ॥
पूर्व से म ११ गी १ कू मा न तु ना १ प र्यु पा सि ता ह वि षा ति ॥ नद्य थ पि नाम कास्य प कश्चि द व पु नू षा १ न्य न नं ग म न ग नं वा नि ग
मं म्मा ज न य दं म्मा के न चि द व क र्थं थ ग ता ह व न् ॥ अथा प न न का न ह व न् ॥ अथा प न न का न ह न स्य कश्चि द व पु नू षः

३३

उपसंक्रमस्य नग्नस्य वर्त्तुलाषट् ॥ नखां चानामनमनियकात्तजनपदकामनियकात्तानां पूष्कतिश्चानामनियकात्तानां उद्या
ननामनियकात्तानां उत्सददददगगनामनियकात्तानां पूष्कलनामनियकात्तानां च वर्त्तुलाषट् ॥ सनतचूत्वा तुष्टिर्विन्दतु ॥
सोमनस्य जात ४ पुन ४ पुन नखाषट् ॥ पुनदवकावहपुनखपत्रिकीर्तयस्वतिसंपुनखपुनवतिस्त्रुगगगहवाते दनतप
वमने नपुनषननग्नकातिचाना नौमनामनियकमजनपदनामनियकात्तानां पूष्कतिश्चानामनीयकात्तानां उद्याननाम
नियकात्तानां उत्सददददगगनामनियकात्तानां पूष्कलनामनियकात्तानां ॥ तत्कस्मीदृशसुथाहि संचकृत्वा तुष्टिश्च
त्तनाहवत्सदग ४ पुनितिसोमनस्य जात ४ ॥ पुनं मेवकासापयिर्मस्तुश्रीक ४ मात्ररुते ४ पर्यापासिताहविष्यत्यतिस्त्रु
पसंक्राकीरविषाकिपत्रिपूष्कलनां मिमागमिनां पुनहपनमिनां नृत्यनाश्रुत्वा उदात्रपुतिपामाप्रमृविषाकि ॥ उ
दात्रपुतीपामाप्रमृत्यत्स ४ पुनवाचवाविषाक ॥ पुनदवकावचूत्वा मरुतममेवपुत्वा पात्रमिनानिर्द्धगं यावदजा
गलात्तत्तमिति ॥ पुनं सूके शायमा महाकाशपादगवत्तमनदवाचतु ॥ ४० मानि नखां हगवत्तुश्रुत्वा नां कलपूषानां

उद्गा५

३८

कूलरहिहृत्ताक्षे ३ नागनक्षत्रि आकाशसिद्धा निनिमिगानिरविषाक्तियानिमानिरुगवंगनिदृष्टानि ॥ रुगवानाह ॥
जुवंमनत्काश्वपयथावाचलाषम ४ मानिकषामनागनक्षत्रिग्रहानाकूलपूजा ॥ कूलरहिहृत्ताक्षे आकाशसिद्धा नि-
मिगानिरविषाक्तियानिमानिमयितर्हिनिर्दिष्टानि ॥ अथ खलु मर्शशी ४ कुमारहृत्ताक्षे रुगवक्तमनदवाचन ॥ अनाका-
लस्य रुगवक्तधर्मस्य अतिंश्रुत्ताका नागवक्तस्य हृत्ताक्षे पात्रमिताया वदविनिमिराया आनासिद्ध निमिरुत्ताका
थंरविषाक्ति ॥ याचरुगवक्तधर्मदगनासा अनाका नागसिद्धाया वदविनिमिरा नलथरुगवक्तनाका प्रस्थासिद्ध स्या
वदविनिमिरुत्तनिर्दिष्ट ॥ अरविषाक्ति ॥ जुवंमूके रुगवानाश्रयिं कुमारहृत्ताक्षे रुगवक्तमनदवाचन ॥ रुगवानाश्रयिं मर्शशी क-
कुमारहृत्ताक्षे कुमारहृत्ताक्षे आकाशसिद्धा निमिरातिरविषाक्तियन्मांगमी नां पुष्पात्रमिताया वदत्यन्त-
तामनूनादग्धमानामपिमाश्रय कया वल्लेया वाक्काक्तियन्महिमर्शशी ४ पुष्पात्रमिताया पत्रिदिपनादववा ॥ रुगविष्पना
पत्रिदिप नादववायानिमर्शशी ४ पूर्ववापिसत्तवात्रिकां वनं नाकगलमूले त्रियमनूतनाममकु वापि नरिसंवृक्षानि

३८

कुशलमूलानि समदाने तु कामेन कुलपूत्रेन वा वलरहिना वा ॥ यं मवपुष्पापात्रमिना ॥ अतवा ॥ अग्निमा के वा पिषीतवा ॥
त्रयिन वा वाचयितवा उपयकु वा ॥ स्वाध्यायवा ॥ पूर्वलयितवा ॥ पर्यवा फवा ॥ यामनसिवर्तवा ॥ लावयितवा ॥ यावत्पुष्पा
पात्रपदियगंधमास्यविलयपनचूर्णवीवनकुशधजघा ॥ पनाकावेजयति हिंदीपदानप्रह नि हिश्रयजा हिर्मथा ॥
कायथवनपूजयितवा ॥ सत्कर्तवा ॥ सर्वसावकपक्षकवृक्षमुमिमनि तु कामेन कुलपूत्रेन वा कुलरहिना वा ॥ यं मवपु
ष्पापात्रमिना ॥ अतवा ॥ यावत्सत्कर्तवा ॥ ० ॥ यथा मशुग्रीववर्तितं कुरुमावकाकिर्हवति ॥ यवं ॥ अतमामनवत्तपूत्रे
वा कुलरहिना वा ॥ यं मवपुष्पापात्रमिना ॥ अतवा ॥ यावत्सत्कर्तवा ॥ यमशुग्रीवकविधर्मास्तुर्वातनूत्तादसमनयो धिमा
कु कामेन कुलपूत्रेन वा कुलरहिना वा ॥ यं मवपुष्पापात्रमिना ॥ अतवा ॥ यावत्सत्कर्तवा ॥ सर्वधर्मा अग्निं ॥ श्रुती नीहि वृद्धा
स्तथा गतं ॥ मनिदगमधिमा कु कामेन कुलपूत्रेन वा कुलरहिना वा ॥ यं मवपुष्पापात्रमिना ॥ अतवा ॥ यावत्सत्कर्तवा ॥
नक्तस्माद्वानहिसकश्चिद्वर्म ॥ संविद्यत उपलप्यत या हि वृक्षतयनवा ॥ अतिसंवृक्षतयनवा ॥ मवाथर्गतिमधिमा कु काम

पृष्ठ २१

न कुल पूजन वा कुल रहिता वा ०० यमवपु ह्यपात्रमिना ॥ अत वा यावत्सत्कर्तुं वा यावत्सत्कर्तुं वा न हि कचि धर्मा या न वाधि
त्रिष्टु वमधिमा कु काम न कुल पूज त वा कुल रहिता वा ०० यमवपु ह्यपात्रमिना ॥ अत वा यावत्सत्कर्तुं वा सर्व धर्मा न विक ल्ययि
तु काम न कुल पूजा वा कुल रहिता वा ०० यमवपु ह्यपात्रमिना ॥ अत वा यावत्सत्कर्तुं वा न कस्मा ह् न कर्तुं हि य ह्यपात्रमिना कस्य
चि धर्म पत्रि निष्ठा कि र्जनय विषय स्त पय नि दुर्गय ति वी र्व धर्मा न सुं क्रि य क न व दाय न क ०० य वं म व र्ति तु काम न कुल
पूज न वा कुल रहिता वा ०० यमवपु ह्यपात्रमिना ॥ अत वा यावत्सत्कर्तुं वा ॥ सर्व धर्मा ना ति ना ना ग वा न प स्य त्वा ०० य वं म
धिमा कु काम न कुल पूज त वा कुल रहिता वा ०० यमवपु ह्यपात्रमिना ॥ अत वा यावत्सत्कर्तुं वा ॥ न कस्मा ध्वा नो न हि म र्श ॥
न न त्पा दा इ ति ना ना ग ना न प स्य त्वा न ॥ न कस्मा ध्वा नो न नू त्या द ग म व ग न ॥ हि म र्श ॥ श्री सर्व धर्मा ॥ लु वं नू ण पु सर्व धर्मा पु न
नि ४ ग स य ना ग कुं काम न कुल पूज न क चो क ल इ हि ना वा ०० य म व पु ह्य पा त्र मि ना ॥ अ त वा या व त्स त्कर्तुं वा ॥ य थ म र्श ॥ श्री ॥
त्रि प त्रि व र्त्त स द्वा द ग म का ल स ध र्मा व क स्य प र्व न ना म् व ति ॥ न कुं तु का म न न दू प त्रि ष तु का म न न द्वा धि मा कु का म न न र व

३०

ननु कामत कलपूर्वतवाकल इति गावा य ०० म व प ह्म पालमि ना अमनवा यावत्सक र्त्तवां सत्ता मेणासु निठु कमन सत्व संसा
यां वा सुहा ॥ ३ कामन सर्व सा क नसा धर्म विवदिठु कामन सर्व सा कानूपल धिं वाव वा इ काम न कलपूर्व तवा कल इति गावा ०० याम
वप ह्म पान मिना अमनवा यावत्सक र्त्तवा यावत्सर्व धर्मा नूपाद मववा धू कामन कलपूर्व तवा कल इति गावा ०० व प ह्म पालमि
ना या जिखि रु वं म नू प न क्क या ज न ॥ अथ खलु मरुती १ क माल रु ना रु ग व क म न द वा च नू ॥ निग्गु ता या रु ग व नू प ह्म
पा न मि ना या १ क रु ॥ ४ क नू स त्मा १ ॥ अकि द्वि स म थ या रु ग व नू प ह्म पा न मि ना या अ समुत्ता पि का या अ वि ना सि
क या न सा क थि ध र्म सा य हि का पा न नि य हि का या नि थ क्क या या नि र्था पा ना १ ॥ खलु व म ज न मा ना १ खलु व म प सा
मा ना या क स थि ध र्म सा द थि का या १ सर्व ध र्मा म ना त्म क न नि या या क न र्त्त यो ना या १ सर्व ध र्मा अं म न क त्वा का त्रि का या
१ सर्व ध र्मा अं म ना ना त्म का त्रि का या अ कि ना या अ रु या अ वि ना सि का या प य ज्ज न ध र्मा अ म र्त्त क र्मा अं प य क र्त्त अ वा धि
स त्व ध र्मा अं म पि च न दा ती का या १ न हा त्ति का या १ अ इ १ क ति का या न हा त्रि का या न सं स र्त्त स्या य हि का पा न नि र्वा धि

७ ह्य ५

२६

सप्रिहं कार्यं ह काया न वृद्ध धर्मा नापयिकान विनासि काया शा न चिन्ता या न का निष्ठा न वि का निष्ठा १ सर्व धर्मा श्रौती
वा सादि काया न नित्राधि काया ना चेदि काया न गमिका या ना गमिका या न निर्ज मि का या न वि वि क का नि का या ना
वि वि क का नि का या न दय का नि का या द य का नि का या या व द ला वा या र ग वं न य कृ पा न मि ना या ४ के गु ना ४ के नू र्ग
सा ४ वं मूर् के र ग वा न म श्रु शि य कृ मा ल रू न म न द वा च न ॥ न वं म वा स्यां म श्रु शि य कृ मा ल रू न म न द वा च न ॥
या वं द ला वा नि ल्य फ ४ ॥ अथि तु ख तू पू न ४ म श्रु शि वा धि स त्व वा धि स त्व स मा ल्ये जि क्रि तु का म न वा धि स त्व स मा धि
नि ष्या द य तु का म न य तु स मा ल्ये स्रु त्वा सर्व वृ ध र ग व का दृ ग्ध के न वा च वृ द्ध ज ग्ना ति बु डं का म न च न वा च ना म व
या नि ह्य तु का म न न वा च वृ ध ना के र ग व ना म नू र्ना पू ज क र्त्तु का म न न वा च ध र्मी द ग ना या म व न हि का म ना धि मा कं का म
का म न नू र्हे व प्र ह्म पा न मि ना या सि शि न वे जि जा या ज न ॥ अथ ख तू म श्रु शि ४ वृ मा ल रू ना र व नं म न द वा च न ॥ के ते या र ग व नू का
के न न य न पु ह्म पा त्र मि ना ॥ र ग वा ना ह ॥ अ नू त्प ना नि वृ द्ध ता नू म श्रु शि ४ वृ मा ल मि ना नू च न ॥ यदि द मा दि श्र क त्वा नू अ नि ४ ज न न

३६

त्वान् अकलनियत्वात् ॥ यावदहवत्वात् ॥ यश्च हवः स एह पात्रमिना ॥ अनेन कात्र ॥ नमः श्री ४५ ह्यपात्रमिना हावना वाधिसत्त्वा नां प्र
ति कां श्री कथा ॥ एतच्च वाधिसत्त्वा नाम हासत्वात् अभचन ४ यः सर्वधर्मेष्वभचन १ ॥ अथ वमा ॥ नमः श्री वाधिसत्त्वा महासत्त्वा अभचन यः
ना अभचन ४ सर्वमानिकसुत्तमाद्वा नात्र दूना दूषणं च न सुते खड्ग च न अग्रभचन ४ नि ॥ पूनत्र पत्रं नमः श्री ४६ कुमालहृत्वा हावकमग
दवाचन ॥ कथंचनमा ॥ हावना वाधिसत्त्वा महासत्त्व ४ जीपुमनूनां सम्यक् वाधिमहिसंहात्वा ॥ नवंमूके हावान् नमः श्री ४७ यं क
मालहृत्तमनूदवाचन ॥ एह पात्रमिना यांचनमाना नमः श्री ४८ वाधिसत्त्वा महासत्त्व ४ क्रियमनूनां सम्यक् वाधिमहिसंहात्वा ॥ अस्मि मरुं
नकवृहना महाधियः समाधौ च नमा ॥ वाधिसत्त्वा महासत्त्व ४ क्रियमनूनां सम्यक् वाधिमहिसंहात्वा ॥ नवंमूके नमः श्री ४९ कुमान
हृत्वा हावकमनूदवाचन ॥ कथंचन व नकवृह ४ समाधि वाधिसत्त्वा महासत्त्व नावनर्हव ४ केन का ॥ नेकवृह ४ समाधिरिदं च न
हावना हा ॥ नकवृह ४ मिमरुं गी न नृत्पादसौ नदधिवचनं ॥ एकेवचनं समाधिमवर्तु कामनकुलपूरी ॥ वा कुल इहि गावा पूर्वमेव
एह पात्रमिना पत्रिपुष्ट वा ४ नन ४ पश्चादकवृत्त समाधिमवर्तु त्रिष्टुकि ॥ नक्तस्माद्वा नात्र कापाहिमः श्री ४९ न नृत्पाद १ ॥ अथ प्रति

३५
३७

पाशाञ्जनापनियः॥ अचिन्त्यः अचिन्त्यः अचिन्त्यः अचिन्त्यः अचिन्त्यः अचिन्त्यः अचिन्त्यः अचिन्त्यः अचिन्त्यः अचिन्त्यः
निगयना नि कर्तुं ना नि॥ असं सग्राता म न वर वि न वं सर्व नि मि ता म न सि का न न प र्या ष्ट व ह्वा नि खि दि न वं न व क न था ग ना म न
सि क र्त्तु वं ॥ सर्व धर्मा ग्य म न सि क र्त्तु वं ॥ अ नू प न म्भु या ण ना यं व न था ग नं म न सि क र्त्तु वं ॥ ल स ना म ध र्मा ग्नि न वं ॥ म व द्वा मा ध य
श्रु त्वा प र्य य स्या दि पि स न था ग नं ॥ दि ग मा म्खि क र्त्तु नि खि दि न वं न म व न था ग नं म न सि क र्त्तु वं ॥ न न म न सि क र्त्तु ना नि ना ना ग न
पु न्पु त्प ना व द्वा र ग व ना म न सि क र्त्तु ना र वि ष्य कि ॥ न क र्त्तु ना र क मि दं न था ग नं तं य था म र्त्तु गी त क र्त्तु ना ग न स्या प म यो व द्वा गु ॥
अ पु म यं पु नि ल नं न वं म र्त्तु गी त क र्त्तु ना म धि मा ग म ल क र्त्तु ना द स्या प म यो ध र्म प र्या य वि ष्य षा ॥ य ति का जि न वा य स प र्त्तु स्या की
य च न था ग नं न र्त्तु ॥ सं म यं व द्वा र वि ष्य ना व क ॥ र क र्त्तु ना र ना द न धा नि ना सा व ना म ध र्म प र्या य ॥ य ति ना र कि ॥ ॐ यं र व न र्त्तु न न क
वृ ह्म समा धि नि षा य या व द स्या य ॥ य मा ल स्या ता व द व ति स्तु न ग नि दानं ध र्म व ग य मा न ॥ य नां प ति कि र्त्तु ना र्त्तु ना व द चि न्त्तु ग न प
प ति की र्त्तु नां समा दा य व र्त्तु ध म ॥ य था य थे ना समा दा य व र्त्तु धा न था य था स्या समा धि गु ना न्द अ थ य र था य दि क र्त्तु न च वि पि ना नि

३७

विदिष्यन्ति तस्य सत्त्वं न नखमाधि न संकुं ॥ पतिनिष्ठा पयितु मूल लं हृष्टिका वस्तु दृष्टि के मा वहा वदस्ती के ॥ स्था द था पि
नाम मर्शु श्री ४ कस्य चिन् प्र नृषस्य मर्शु श्री मनिन त्त्र मने य म न वदा पितं व ह मने क शि प व वं द न् ॥ कि म न न य हा न प्र न
षा ज्ञानिया अ प म या च वा स्य मनिन त्त्र स्य ॥ १ ॥ अथ खल स प्र नृ स्य न मनिन त्त्र दया द वदा प दार्थ ॥ अ व का य स ग व हा प
नृ ख ० दं मनिन त्त्रं न की ह्य सं सि ॥ अथ खल स प्र नृ स्य न मनिन त्त्रं गृ हित्वा अ वदा प क न त्ते न वदा प य न् ॥ अ व न मनिन त्त्रं म व
दा प मा न प कि मूल म् व द् ॥ यथा यथा न मनिन त्त्र म वदा प य न् ॥ तथा तथा स्या मनिन त्त्रं ॥ न्य ग्ध न् ॥ अ वं म व मर्शु ग्री र्य दाय दा सं
कूल पू वा वा कूल र हि ता वा अ वं स मा धि स मा प त्प क ॥ अ व न निष्ठा कि ॥ न दान दा स मा धि र्ग ॥ नृ द अ निन त्त्रै न सौ कं वि दं मी दं ग ना या न
पुं ह्य पा नं मि नो दं गं ना य ॥ न यथा पि नाम मर्शु श्री ४ सूर्य म सु ल ह्य न क म्भी स ल स प र्य का या न न मि हि १ मू न १ ॥ अ वं म व मर्शु श्री न क
गृ हं स मा धि सा ग म्मा व ति र्य प ति ल ह्य न ग ॥ का वि ध र्म द ग ना या न पु ह्य पा न मी का द ग ना अ वं म वं ग म ह न ना सो क वि ध र्म म्मा ता नि
नृ द प र्ग ध न् ॥ न यथा पि नाम मर्शु श्री अ न स ख दि रु महा स मू द स च त्वा ल १ प्र नृ षा उ द क म त्प न जि ष य १ ॥ स र्व क द क न स म वा

बृहत्
३८

लि पयु पइ न ल व न सं न वं म व म रू शी र्यो क शि धर्म द ग न म या द सि ता सर्वा सा ल क न मा य इ न न त्पा द न सा न् र हा व न सा वि म
मु कि न ग न नि त्रा ध न ग म या पि म धि रू शी ४ वृ ल पू व ७० ह स म रि धि सि ह ना य य म व ध र्म द ग यि षा ति ॥ न त् सर्व म क न सा म न द ग
मि षा ति ॥ य इ न न त्पा द न स म वा हा व न म व वि ना ग न स म व वि मू क्री न स म व नि त्रा ध न स म व ७० मं म रू शी ४ स मा धि मा ग म
क शि त् स या ध र्मा द सि न सं सं क ल पू या कां क मा आ ल व न् नि दि ति इ प दि ७० ॥ ए वं हि म रू शी ४ सं क ल पू व ७० मं स मा धि मा ग म
या का वि द ग ना सर्वा कां म ग म न त्पा द न ल वा म्मे व द ग यि षा र्प न प न म् या न पु न न प न र्म रू शी ४ ना म सं मा धि मा ग म वा धि स त्वा
म हा स त्वा ४ क्रि पं वा धि पा क्रि का न् म्पा र्प नि प र्प क्रि प म वा न रू नां स म्पा कं वा धि म रि सं हा त्पा न ॥ पु न न प न म रू शी वा धि स त्वा म
स त्वा ना त्म क्ष ना या वं न ध र्म क्ष ना न त्पा दं प सं ति ॥ ना नि त्रा ध न के क लं ना लं ए वं क्रि का पि म रू शी वा धि स त्वा म हा स त्वा ४ क्रि प
म न रू नां स म्पा कं वा धि म रि सं हा त्पा न ॥ या वा न वि क य द न रू नां स म्पा कं स वा धि न सा पि क ल पू व सो वां जा क्रि वा धि स त्वा ध र्मा नां
च पु ति न म्पा य न च वा धि वृ ह त्वा यं सं पा था न ७० नि ॥ ए वं मि मां म रू शी ४ जा क्रि न स क ल पू व स क्रि क ल पू व सा क्रि प म्वा द म्पा न रू ना

३८

पांसयक वाक्षो सर्वधर्मा वृषधर्मा ॥ नियतं वंमधिमा ॥ न तचावत्रिय न नमपहं मेवेव हि कंचदाम् नूह नायांसमक्ष वाक्षो ॥
 नृविनहिनय सर्ववृद्ध धर्मा वकाव ॥ यस्यां वक्रलपुत्रस्य वाकृत इहि नावा ॥ मनिर्द्विगंशुत्वा न स्याद्व नायितत्त्वम्वा काजायितत्वे
 वा ॥ एवमूकसंश्रयी कृमालहृत्तलगतवकमनदवाचन् ॥ किं ह दुनिया नलगवत् नृनृनां सम्यक्वाधिशा ॥ तगवा नाह ॥ नाहिदंरु
 गवमंश्रयी नेवानूहनां सम्यक्वाधिह उ विर्यो ना ॥ नत्कस्माद्व नानध नृत्वा ना रावा वाह उह दु निर्यो नावा ॥ नस्माद्व नानागतत्वात्स
 र्वधर्मा ॥ नस्मात्तु हिमंश्रयी यं नृहगमि नयां पुहपात्तमी नाया ॥ हिं वारिहृतिवा उपाग कावा उपासिकावा नावत्रियिषा कि ॥ याव
 नसत्तिपिषा कि न नमस सत्र नेगनात्मममायुषवृजिना सुषां चाहं भस्मा ॥ यामंश्रयी ॥ वृत्तपूजा वाकृत इहि नावा ॥ नृहगंमि नयां पुह
 पात्रमियां तसिषा न नासे वाधिसत्त्वसिग्ना मां गि न ॥ नयथापि नासमंश्रयी र्यक विदरुतग्रामा वीरग्रामा मरुत्तुत्तोषधिव
 नस्य नमा विनाहय कि सर्वं न महापृथिवि नि सिप्यु वंमवमंश्रयी र्यक विद्वाधिसत्त्वानां महासत्तां नाकृगलधर्मा ॥ सर्वं न पुहपात्रमि
 नायनिष्ठ हिना विधिवी नृटि वेष्टे न ना मापय क न वि स वाद यत् नृहनां सम्यक्वाधि ॥ एवमूकसंश्रयी ॥ कृमालहृत्तलगतवकमनदवाचन्

अपवेत्तारुत॥ तस्माह रगव नवपृष्ठं वंदय सर्वधर्मा विनूधा काथा॥ तत्कस्माह गस्तथा हि न काचित्सत्त्वा पलपि १॥ उत्पादन
विनूध १॥ नापि सा केथ केनचित्सत्त्वे न सकनमाह तं॥ तत्कस्माह गस्तथा हि न काचित्सत्त्वा पलपि १॥ पुनत्रपत्र रगवन्॥ अह
तस्मै वंदयं म नूत्पनाहि नामसाधर्मदग नाह त॥ तत्कस्माह गस्तथा हि रगवन् अतस्मादस्मा १॥ सर्वधर्मा स्तथा धर्मा गनाया
नाहं गामुल्यय धिगमनिदिद १ अहं हर्मि च तपुथगय नधर्मा यथा नविनासिना १॥ पुनत्रपत्र तस्माह रगवन् वंदयं नदं
धर्मद सियां कश्चित्सपत्रि निर्वतपत्रि निर्वाति॥ पत्रिनिर्वाति वा॥ तत्कस्माह गस्तथा हि रगवन् त क नयं नू पलपि त्वात्सत्त्वा
उवंमहं रगवन् पृष्ठ १ समा नवतं वंदयं॥ पुनत्रपत्र रगव नू या समा किकादिमागमा नां पहापानमिना (अतु काम १॥ पत्रिप
कृत् कारु वां य रगव का साह कथा पवृत्ता रूपनि तस्माहं मवं वंदयं स चैतुत्वमि कसिना कथां (अतु तन्मा चमान समा कृ पय (अप
मि कृ तिमा चविह मत्पाद य (अपामिनि॥ माहसि रप नूषमा या पनूष सपहा कृ दगो पहा मत्पाद उवंमिय धर्मदग नाग का अ
ग का अहा तं स चन्॥ त्वं रप नूष कृ दसि मां धर्मा दा स ना (अतु नदचकि कृ तय पिना मा का सग कृ निपदं उवंमिय ग का धर्मा

यह ५५

दशनाम उं सं चाम त्वं लपुत्र त्वं ॐ ह्र सिमां धर्मदगना ॐ तु न मा द्य यमा नम स्व मा द्य यं ॥ तत्कामादना त्रीहिका विदिह
द्वयपत्रिकिर्हना पत्रिकीर्हना ॐ द्वयपत्रिकिर्हना वा ॥ सं च वि च्छ सिमां यं व धर्मदगना ॐ तु न मा द्य यमा नम स्व मा द्य यं ॥
विनासु यद्वि कृणानि च मा सम नि क म वृं ध्मा थ मा ध्मा ल म स्व पृ थ ज न धर्म थ मा च ल मिया म रु ग व न ॥ ॐ तु क
म १ पृ कृ त्म ह म वं म नू सा स्य त्म नू तु नि का य य यं स च कृ ल पृ थ वा कृ ल इ हि ना वा प त्रि पृ कृ वं नि कृ त्रि वि ग म
स्य अ स्यां पु नि ला न मू द मा पु नि षि त स्य ष अ इ रु त्रं प ह्म पा न मि ना या वं द जा ना ले वा नू स्य त्रं द ग य यं ॥ ल वं मू के रु ग
वा न म स्य य कृ मा न रु त म न द वा व न ॥ सा धू सा धू मं रु जि १ सू ला षि त ॐ यं वा कृ ल वं चो रु न व द स्य कृ ल पृ थ स्य वा कृ ल इ हि
तु वं नि थ ग न ड कृ का म व प ह्म पा ल मि ना ल व यि ने वा अ ला व य ज न न थ ग न प य पा सि ड का मे नि कृ ल पृ थ न वा कृ ल इ हि
ना वा ॐ रु व स ह्म पा न मि ना ॐ रु व म नू प न मू या ग न ॥ रु थ ग न ग म रु नि वा प द स्य तु को मि त कृ ल पृ थ न वा कृ ल इ हि ना वा ॐ रु
व प ह्म पा न मि ना या सि डि त वं म नू प न मू या ग न ॥ अ नू रु नां म म् कं वा धि म हि तं वा धू का म न कृ ल पृ थ न वा कृ ल इ हि ना वा ॐ रु व

५५

पुष्पापानमिनायां गिजिनवां मनहि संस्कारया गन सर्व समाधिको गत्र पनिष्ठा दयितु कामन कुलपुत्र न वा कुल इ हि नावा
ॐ हे व पुष्पापानमिनायां गिजिनवां पुष्पापानमिनायां गन ॥ यावत्सर्वा का न वना पनं सर्व ह ह न पनि निष्ठा दयितु कामन
कुलपुत्र न वा कुल इ हि नावा ॐ हे व पुष्पापानमिनायां गिजिनवां मला वया गन ॥ कल्पा ह गी सुथा हिया वत्सर्वा का
न वना पनं सर्व ह ह न म क न म न स न म न वं सर्व धर्मा ॥ सति ॥ गन नान संः कथि धर्मा यान गनि ॥ स य व म नू ग क का
म न कुलपुत्र न वा कुल इ हि नावा ॐ हे व पुष्पापानमिनायां गिजिनवां या वं द ला वया गन ॥ सर्व धर्मा अति ॥ स न ता म
कथि धर्मा य ॥ सति ॥ स न ना ॥ कल्पा ह गी न न स न ता सर्व धर्मा ॥ न वं मा ह नू काम न कुलपुत्र न वा कुल इ हि नावा ॐ
हे व पुष्पापानमिनायां गिजिनवां या वं द ला वया गन सर्व सुता वा वै धाय च न कि ॥ न कथि सर्व सुता यान वा धाय च
न कि अग सं सि दि तु काम न कुलपुत्र न वा कुल इ हि नावा ॐ हे व पुष्पापानमिनायां गिजिनवां या वं द ला वया गन ॥ क
ल्पा ह गी सुथा हि सर्व धर्मा वा धि समा य थं हि सर्व धर्मा वा धि समा सुथा वा धि यथा ची वा धि सु था सर्व सुता यथा

अह
२९

चसर्वसत्त्वास्तथाचमिश्रविद्यमानत्वात्सर्वोचत्रिनचानिनिमित्तानिचवाधियाचवापिननूपादापिसः॥ अजातिन
पिसायासमिदिदुकामनचवरूपप्रसवधमपुननकुलपुत्रुतवाकलरहितावाग्देवपुत्रपानमिनासिद्धिनवा
यावदलावात्स्यादयागतयदपिचमरेश्वरीसुथागतविकुर्विकवसुथागतविक्रिठितनदपिप्रहृष्टपानमिनापद
गिति॥ नक्तस्मादगनिर्दगताहिसात्रदगपित्रीपुष्टापानमिनाअवेवर्हिंकांस्तानहमरेश्वरीवदामिभिरिवावा
रिहृष्टावाउपागकावाउपासिकावाग्देवपुत्रपानमिनागृहचतुष्टयदगमथापुमासमावमपुद्गुहीषकिपर्यवा
प्यकिधनपिषकिवचपिषकियावत्संपकासपिषकि॥ काश्चननवादायनथत्वापुतिपयंकनियत्तास्तुक्त
पुत्राश्चकुलरहितश्चकाश्चयवदितवंनवूहविषयस्तिनय००मांगमिनापुष्टापानमिनायावदकातालावनूत्तत्रय
त्वाताप्रसिषकिनसंनुसीषकिनसक्तुसमापत्ताक॥ उरुत्रिचाधिमायेकनियत्तास्तुहविषकिनसर्ववूहधम्मपुत्रमा
मपहमरेश्वरीमृदास्तुपयामिब्रह्मनूत्तागतविहृतासर्वेनहहिसपुतिक्कतामिमामृदास्तुपयामि॥ समगा

२९

[illegible]

पुष्प २
६२

पुष्प २ कूल इति हि हि अत्र त वा दवता पसंहा न च वाय मस्या कमिति ॥ १ ॥ वसूकं रगवानगकु स्यवानामिदममदवाच
रु ॥ २ ॥ वं न कू को गिक सर्व व धर्म पत्रि निषा नि सुषां कूल पूया ॥ ३ ॥ कूल इति हि हि ॥ ४ ॥ च ड व वा नियता थ न प त्रि को
जि क वा ज नू ह जा या ॥ ५ ॥ सम क वा ॥ ६ ॥ अथ ख ल म र ॥ ७ ॥ कू मा ल रू का र ग व क म न द वा च न ॥ ८ ॥ अ धि नि ष्टु सुं ग न ॥ ९ ॥ मं
ग मि न पुष्पा पा न मि ता नि द ग न वा कूल पू या ॥ १० ॥ कूल इति हि हि ना चार्थ य स म न क न रा षि ना च यं वा कं ॥ ११ ॥ अथ ख ल म र
ता या वृ ढा नू ल व न ष षि का न म हा प थि दि वा ना अ नू र ॥ १२ ॥ स म न क न पु च ति ना यां च म हा प थि यो ॥ १३ ॥ अथ ख ल म र ग वा न सो व ना या
स्मि न म क ना नू ॥ १४ ॥ स म न क न या वि ष्टु न व र ग व ना स्मि ने ॥ १५ ॥ ख नू र म वा व ना यां पि सा ह म म हा सा ह म् लो क सा दु र्म हा व रा स
न स्रु ॥ १६ ॥ हि दि मं पुष्पा पा न मि ता नि द ग म धि नि ष्टु न ॥ १७ ॥ र ग वा ना ह ॥ १८ ॥ वं मं र ॥ १९ ॥ कू मा ल रू का र ग व क म न द वा च न ॥
२० ॥ मा नि र ग व नू र्ध नि मि का नि त था ग न स्य मं पुष्पा पा न मि ता नि द ग म धि नि ष्टु न ॥ २१ ॥ र ग वा ना ह ॥ २२ ॥ वं मं र म र ॥ २३ ॥ ने
स्य पुष्पा पा न मि ता नि द ग म धि नि ष्टु न ॥ २४ ॥ मा नि र्ध नि मि का नि नू रि ॥ २५ ॥ र्ध नि मि ष्टु न वं म धि नि ष्टु ना य पुष्पा पा

६२

[illegible]

पृष्ठा*
५३

गिस्म ॥ अथायस्वम्यार्क्ष निपूया वृक्षावलावेन आर्यवलाकि न स्वन वापि सत्त्वमहासत्त्वमनदवाचन् ॥ १ ॥ अथायस्वलाकि न
स्वन कृष्णावा कृतइहि नावाग कि नायापहृषा न मिनाया चर्याश्च ॥ २ ॥ कामन कथं ववना क स्मा ॥ अथलाकि न स्वन आ
ह ॥ य ४ खलू वल कृतइहि नावाग कि नायापहृषा न मिनाया चर्याश्च ॥ ३ ॥ कामन कथं ववना क स्मा ॥ अथलाकि न स्वन आ
रूपगु न्यं न्यं वन रूप पाप थ कृष्ण न्यं नायाप थ कृष्ण न्यं ॥ ४ ॥ न व वद ना सं ह्य सं ह्य ना वि ह्य ना नि ग न ना ॥ ५ ॥ न व ग न पृथुः
सर्वधर्मा ॥ ६ ॥ न्या ४ खलू कृ ना ४ अ नृत्प ना ४ अ नि नृत्प ना ४ अ च ना ४ अ च ला ४ वि मे ना ४ अ न्या ना ४ अ स पृत्ति ४ न स्मा कृ हि
सा नी पृत्ति ना ना या न नृप न वद ना न सं ह्य न सं ह्य ना न वि ह्य न न च कृ ४ न ग्रा न न द्या ॥ न जि ह्य ना न का य न म ना न न
पा न स द्या न ॥ न न सा न पृथु वा न धर्मा ४ न च कृ धा दु ४ न व या व न धर्मा ४ न व ना वि द्या कृ या या व न कृ ना म न ॥ कृ या
न इ ४ ख न स मृ ड या न नि ना ध ४ न मा र्ग म न ह्य न न पा फी ना पा फी ४ न स्मा कृ हि ग न नि पृथ अ या फि ला न वा पि सत्त्वमहा
सत्त्वमहृषा न मि ना गि स्म वि ह न कि न चि ह्य न म न मा द्वा द न रू ना या स म्प कृ वा ॥ ७ ॥ प र्या सा मि ना न नि द्या ॥ ८ ॥ पा फा म्प

५३

अथ वल्लि ना सर्ववृद्धे न पि प्रह्लापा न मिनायितु अनरुनाया समुक्तां वाधिमति संवक्ष नस्मान हि कुलपुत्र ह्यन वं पश्य
पालमिनामनु महाविद्यामनु ॥ अनरुनामनु ॥ अगसमा मनु ॥ सर्वइत्थ पसंमना मनु ॥ सत्यमधत्वात् प्रह्लापा न मिनाः
यायू को मनु ॥ नद्यथा ॥ कुंगनगन पानगन पान संगत वाधिसाहा ॥ ० ॥ अवंगमनीयु गगमिनायां प्रह्लापा न मिना
यासिजिन वाधिसत्त्वं महासत्त्वं ॥ अथ नरुगवान् सोमाधि वृद्धाय आर्यावना किन ज्वने तं वाधिसत्त्वं महासत्त्वं नंसा
धुका नमदात् ॥ साधुसाधु कृतपुत्र अवंमनन गगमिनायां प्रह्लापा न मिना त्रिदिक्कद नूमाय सर्वे न थाग नै त्रिनि ॥ ॐ ॥
ठूदमवाच नरुगवान् सोमाधि वृद्धाय आर्यावना किन ज्वने तं वाधिसत्त्वं महासत्त्वं नंसा च सर्ववति पर्वत्स
दवमा नृणां सूतग नूतग चर्वथ नाकारुगवना लघिन मत्तन न्दत्रिनि ॥ ॐ ॥ आर्यपच विंगति का प्रह्लापा न मिना
नाम धान निपत्रि समाफ ॥ ५ ॥ कुं नमो नरुगवत आर्य प्रह्लापा न मिनाये ॥ अवं मया गुरुम कस्मिन् समय नरुगवा ज्ञाता
ह विहन निस्मा ॥ गढकूट पर्वत महागति रुस पगने न के वाधिसत्त्वा का निनियत गत सहस्रे ॥ गङ्गा सौवमला कपान

पृष्ठ ४

४४

नपुमरेय्यदवमानूषासूनकादिगनसहस्रेष्टपुमरेय्यपनिवृत्तः॥ ग्रातत्रगकंसिंहासननिषर्त्तुष्टगवान्धर्मदगम
निष्ठा॥ आदिकल्पानमध्वकल्यानं परम्यवसांनकल्याणं सर्वसुखं॥ न कवनेपनिपूर्त्तुपनिष्ठं पर्यवदातं वक्ष्य
य्यस्युकागतिस्मृशा॥ अथ खल्वार्यावलाकिरुग्धनावाधिसत्त्वामहासत्त्वः॥ उल्लायांसनादकासमूहनांगकृत्वा
दक्रिनजानूमल्लुलपृथिव्यापनिष्ठापयनरुगवांसुनाञ्जलिपुत्रमपहसितवदनाहत्वा रुगवकमनदवाचन॥
दगयतु रुगवंतु प्रह्लापात्रमिनास्वल्पाक्रनां महापूज्यस्यां सर्वनमातेन सत्त्वा नां सर्वकर्मवन्तानि ऊपयिष्यन्ति॥
नियंदाधिपनाय नरुविष्यन्ति॥ यच्च सत्त्वा मनुसाधुना ह्युक्ता कथां चाविद्यनमनु सिद्धवन्त्रिकि अथ खलु रुगवान्नाम
वलाकिरुग्धनाय वाधिसत्त्वामहासत्त्वामहाका नूनि काये साधुका नमहा नासाधुसाधुकुलपुत्रयस्तु सर्वसत्त्वहिनायः
सूखायपुनिपन्नसर्वसत्त्वार्थदीयना तुं मधिकस्तु न हित्वं कुलपुत्र गुरुसाधुचसूक्तु मनसि कुरु लुपिष्यहं॥ नपुह्ला
पात्रमिनास्वल्पाक्रनां महापूज्यस्यां सर्वसत्त्वां सर्वसत्त्वाः सर्वकर्मवन्तानि ऊपयिष्यन्ति॥ नियंनवं वाधिपनायः

४४

। आरविषादि॥ यसत्त्वा मनुसाधनं शुद्धा न पांचविधु न मनु सिद्धं त्रिनि॥ अथायी वला कि न्गव ना वाधिसत्त्वा महा
सत्त्वा एग व न म न द वा च न॥ न न हि सुग न ता पि तु सर्व सत्त्व हि नाय सुखाय च॥ अथ खलू र ग वां सु स्या म्ब ला यां सर्व स
य मा च नि ना म स मा धि स मा प य ते स्मा॥ य स्यां म मा हि न या उ र्गा का ग म ड वि व ना क ला द न का नि त्र सि का नि त्रि यु क्त ग न स
ह म्पा ति नि श्र त्र वि स्म ण॥ ने श्र त्र सि हि ४ सर्व वृ ध कृ श नि स्मृ ता रू व न्॥ य वं सत्त्वा सु या स र या स्य क र्त्त वं नि न ग न
नू र ना यां स म्पा कं वा धि॥ या व त्ता न का सत्त्वा ४ सर्व सत्त्वा स म्पा र्ण ता रू व न्॥ सर्वा नि च वृ ध कृ श ति ष द्वि का न प वि च त्र
दि वा नि च द्रु न चू र्ण व र्षा ति त था ग न पा द मू ल पा व र्ष न्॥ अथ खलू र ग वां सु स्या व ला यां मि मां य ह्म पा न मि न ल ष क म्
न य था॥ वा धि सत्त्वे न महा सत्त्वे न सर्व सत्त्व ए ४ स म चि त्ते न र वि न वां॥ मि त्र वि ह न र वि न वां कृ न चि ह न वि न वां कृ
न वं दाना च र वि न वां सर्व पा प वि न हि ना च र वि न वां शू दं च प ह्म पा न मि ता हि द पि मा व र्त्त यि त वां॥ न मा न त्र न या य॥ न म
ग क मू न य न था ग ना या र्त्त सं म्पा कं वृ ध य॥ न य था॥ कुं मू न २ महा मू न य स्वा हा॥ अ स्यां प ह्म पा न मि ना या ना ल त्म या न

हिमखितवन्ति न अथ खल्वप्यवलोकिन्स्वनावाधिसत्त्वा महासत्त्वा हगवन्कं मनदवाचत् ॥ कनकात्रयानर
गवन्त्रियं पुष्पापानमिनां संजिफा ॥ हगवानाह ॥ अलोपायत्वा यपिसत्त्वा साहस्रपीमां पुष्पापानमिनां स्वस्याङ्गा
त्रयिष्यन्ति वाचयिष्यन्ति लिष्यन्ति लिखाययिष्यन्ति न सर्वा इत्यापायनवाधिसैपनानां रविष्यन्ति अतनं क
न ॥ कलपुत्रसंजिफपुष्पापानमिनां च वंमूक आर्यं वनाकिन् अथवाधिसत्त्वा महासत्त्वा हगवन्कं मनदवाच
त् ॥ आर्यं हगवन्पुत्रमोथर्यसुगन ॥ वाचैर्गैदवरुगवना सर्वसत्त्वहिना यस्वस्वाययधर्मपय्यायादसिनाम
दे पुष्पापानमिनां च सत्त्वा नाहिना यस्वस्वायचत् ॥ ४०५ मवाच हगवानवाधिसत्त्वा माहासत्त्वा ॥ साचर्मावतिपर्वस
दवमानूखासुत्रगनूतं गन्धर्वलोका हगवनाखितं महासत्त्वा त्रिनि ॥ ॥ ॥ आर्यं स्वस्याङ्गा हगवन्त्रियं
पानमिनां नामधेननिपत्रि समाफ ॥ ६ ॥ ॥ नमो हगवन् आर्यं पुष्पापानमिनां च वंमयाश्रुतम
कस्मिन् समय हगवानाजगत् विहन्ति स्म ॥ गृह्णन्त्येवमहमाहिं सद्ये न सार्ध ॥ ननु खल्वहगवानां य

अहो
५६

वृद्ध

अथ सूत्रं निमोसं कुयने समं ॥ यकचित्सूत्रं अवकः मावयीसि जिउ कामने ०० यं भवय ह्यपात्रमिना ॥ अ
नया ॥ उरुहितं वा ॥ धनमिना वा ॥ वाचमिना वा ॥ पर्यावाफ वा ॥ ०० हे वं प्रहृषा पात्रमिना योड पायको गत्य समना
गनेन वाधिसूत्रे नमहा सत्वेन सर्वधर्मसमदागमा ययाग कत्रिनि यं ॥ तत्कसाह ता ॥ ०० ह्यि पु ह्यपात्रमिना
विसूत्रे न सर्वधर्मा निदि ॥ ०० ॥ यत्र वाधिसूत्रोति जिउ वा यागमा न व्यमिति ०० नू ह्यनायां समं क वा ॥ धमि जि
दु कामने ०० यं भवय प्रहृषा पात्रमिना उ पां य को गत्य समना गनेन वाधिसूत्रे नमहा सत्वेन सर्वधर्मसमदागमा य ॥ या
ग कत्रिनि यं ॥ तत्कसाह ता ॥ ०० ह्यि पु ह्यपात्रमिना यां विसूत्र ॥ सर्ववृद्धधर्मा निदि ॥ ०० ॥ यत्र वाधिसूत्रे नमहा
जिउ वा ॥ यकचित्सूत्रं ग लधर्मा ॥ वाधियका ॥ अवकधर्मा वा पुत्य क वृद्धधर्मा वा वाधिसूत्रधर्मा वा वृद्धध
र्मा वा नमि का ग लधर्मा वा वाधियका धर्मा अवकधर्मा पुत्य क वृद्धधर्मा वा वाधिसूत्रधर्मा त्वं ॥ यत्र पु ह्यपात्रमि
ना यां नू कर्मा नू प्रविष्ठा ॥ संग हं समवगनेन गच्छ कि ह्यगवानाह ॥ नयथा ॥ सूत्रं दानपात्रमिना जिनपात्रमि

५६

गङ्गा कि पात्र मित्र विर्य पात्र मित्र धन पात्र मित्र पुरुष पात्र मित्र ॥ अर्ध आत्म सून्यता ॥ वहिर्ध आगु न्यता ॥ अर्ध आत्म वहि
ध आगु न्यता ॥ अगु न्यता सून्यता ॥ महागु न्यता ॥ अर्ध आत्म वहि ध आगु न्यता ॥ महासू न्यता ॥ पत्र मा र्थगु न्यता ॥ संस्कृत सू न्यता ॥ अ
संस्कृत सू न्यता ॥ अर्ध क गु न्यता अनव नाग गु न्यता ॥ अनव नाग गु न्यता ॥ अनव कान सू न्यता ॥ पुरुष गु न्यता ॥ महा
गु न्यता सर्व धर्म गु न्यता ॥ गुल जन गु न्यता ॥ अनूप म गु न्यता ॥ अर्ध व गु न्यता ॥ त्वरा व गु न्यता ॥ अर्ध व त्वरा व गु
न्यता ॥ चत्वारि सुत पस्कृतानि ४ चत्वारि मम कृतानि ४ चत्वारि उद्विष्टानि ४ म नन्दियानि ॥ पक्ष वलानि ४ सफ व
धालानि ४ आर्या कर्म मार्ग १ ॥ चत्वारि ध्यानानि चत्वारि पुमाणा नि चतस्र आरूप समाप नय ४ ॥ अर्ध विमात्र नवा
नूपर्व विहान समाप नय ४ ॥ सर्व धन ति सुख दान न धन न चत्वारि वैश्वानरानि ४ ॥ चतस्र पक्षि संविद ४ ॥
महामेदि महा कर्तृता अर्ध दशाव निक वृष धर्म १ ॥ अर्ध नापति रूल संके दागमि रूल ॥ अर्ध नागमि रूल ४ अर्ध रू
त ४ ॥ सर्व हेताय अर्ध मय सुकृत कृत धर्म ४ वाधियज्ञ ४ अव क धर्म ४ अर्ध क कर्तृ धर्म ४ ॥ यत्र प्रह्लापा न मित्रा

पृष्ठ २
५७

यां ४ अना गता ॥ अनपुर्विका ४ ॥ संग्रहं समवसनं गच्छति ॥ सूरुतिनाह ॥ अहं अहं इति वग्राहवत् ॥ यः
पुष्पापानमिता ॥ यः हि नामकं वृत्ताधर्मा ४ वृत्तिपञ्च ४ अ व क धर्मा ४ पत्य क वृत्तधर्मा ४ वृत्तिपञ्चधर्मा ४ ॥ वृत्त
धर्मास्ते कियन्ते पुष्पापानमितायां अ कर्गता अनपुर्विका ४ संग्र ॥ हं समवसनं गच्छति ॥ रगवानाह ॥ अत्यन्तमक
त्वा सूरुते पुष्पापानमिता ॥ सूरुतिनाह ॥ अहं अहं इति वग्राहवत् यः पुष्पापानमिता ॥ रगवानाह ॥ अत्यन्तवि
शुद्धं लोसूरुते पुष्पापानमिता ॥ सूरुतिनाह ॥ अहं अहं इति वग्राहवत् यः रगवंतु पुष्पापानमिता ॥ रगवानाह ॥ अत्य
न्तविशुद्धत्वा सूरुते पुष्पापानमिता ॥ तस्मात्तर्हि सूरुते आकाशमपमापुष्पापानमिता ॥ सूरुतिनाह ॥ अहं अहं इति वग्राहवत् हव
गवन्तु पुष्पापानमिता अनलियुक्तन ॥ रगवानाह ॥ नवमवत्तयथा वदसि ॥ इति धिमाया पुष्पापानमिता अनलियुक्तनपनि
नकृगलमूलस्त्वधसा अनविकन ॥ सूरुते नहि नपय नपापमि श्री यमहिने नपापमि ॥ सर्वहं वदन्त नपापमि ॥ समाका
पकन ॥ सूरुती नकसमत्वा गतन ॥ आदिकर्मी कन ॥ अत्यन्तप न अपनिपक्व कजा गय न ॥ इति सुसंवलनी यन कसि

५७

द न हि न स त्व न हि न हि मू क के न कूल पृ ष्म ष् अ न रि यू के न ॥ त स्मा व हि सूरु क इ न धि म् च्यां पा ह्य पा न मि ताम् च के ॥ ए
 न न प न सूरु क य ४ क चि त्क ल पृ ष्ठा वा कू ल इ हि ना वा ० मा य ह्य पा न मि तां ग मि ना ल य कि ॥ धा न मि ष कि वा च यि ष
 ति प र्य वा प्पा कि ॥ सा इ ति ना ना ग नृ प द्म त्प त्रा ना र ग वा नू वा धि स त्ता धा यि ष कि वा च यि ष कि ॥ त स्मा ह रि सूरु क कूल पृ
 ष्ठा वा कू ल इ हि ना वा ॥ अ ध्वा स प ने रि क् वा कू स मा कू वा धि का म् ॥ अ रि ह्य प ह्य पा न मि ता स्य न र्या उ रु ही त वा धा न मि न वा
 वा च यि न वा प र्य वा प्पा वा ॥ त ना रि सै प वे स नू र ना स मा कू वा धि म सं हा त ठू ति ॥ ० ॥ ०० द म धा च ह्य ग वा ना ल स ना
 ज्य ध्वा न सूरु कि न च रि क् वा वा धि स त्ता य सं द व मा नू षा सूरु ग नृ ग न्ध व श्वा ला का र ग व कू ल खि तं म के न द त्ति नि आ र्म
 र ग व ति अ ह ग ति का य ह्य पा न मि ता प त्रि स मा फ ४ ॥ ० ॥ ०० न मा ४ स फ वू ह त्प ४ ॥ उत्प त्ता व धू म णा न प ति व ल कू ल
 मा वि श्वी ति ना म्ना य म्मा मि ति स ह आ न म न न गु ना ना य ना सि क्ता ना ॥ य ना वा फे जि न त्व द ग व न व सि ना पा न ला वि क् मू न तं व य
 ह्य न वा त्रि प म मि न स क ल ह्य ग व कि रि ने क् ॥ १ ॥ द ग य वि श्व ना त्ता म्हा ति ए न व न य ४ पु षा गा र नू षा ज व र्वा ना मा य

सफर
५८

नासित्कलननिधिर्यस्य यानि संघाफा यनवा ४ पत्र हिरुपट् नापु नापुलु निकस्य मूत्र तं वन्दे हान नासिगिरिव
मिरिव लुपा फसं सान पात्रे ॥ २ ॥ या जाता नाप मायां पविग कय संसाम न्य पाथि विना मायुष वी सह मा निरु म द न म न
क य स म्ब स ना ना ॥ जित्वा कुगा न लाषा न म न म धा ग क य न सान स्य मूत्र न व द धर्म ना जं लु व न हिन क न वि श्व तु ना म ध
य ॥ ३ ॥ जे मा व त्या य जा ता म नू ज य नि स मा या व सि वि वं जे मा य व न र्वा य ना नि पु व न गु न नि ध र्य स चा सि द न न ॥
जे न डं ने न ल प्प ति ह व वि व ध क न हानं ए जे ४ गि नि ष व द १ ह सि ष्टि का य सु ग न म नू म नं कु क्कु च न्द म् नि द्य ॥
५ ॥ ग्म ल व त्या ष्टि जा नां न न प नि नि हि न जी न य स प सु ना य स्या यू नां सह मा ल्प नि ग य व ए नू ए मि सु दा यू र्व लु व ॥ व
ध त्वं य न न त्वा च ल व न गु नि ना इ र्म न पां फ म गु न व द ग्मा सि ता न क न क म् नि म पि ध्व लु मा हा न्ध का न ॥ ७ ॥ वा ना न स्या
व नि ष ष्टि नि य नि म हि न वि पा वं जे हि जा ता य स्या त्वा यू सह मा ल्प नि स य सह ना वि ग नि र्व त्स ना लं य न ना ग्म ध म् न वि ह
व ज न नि धि सा नी ता हान दि फ्या तं व द व द नि य म् नि व न वृ ष र क स्य प ना क ना थ ॥ ७ ॥ या जा ता ४ अ वि ग्म ल ४ क पि

५८

लवनगमकनाडडवंगयस्योसिदयन कंकगकमिहदांसर्वसाकेकच (अजिष्णाश्वत्थमृत्तमृत्तचिमपिसदा नरुत्रायं वाधिसु
वन्दगमकसिहसूननननमिनं वृद्धमादिनवध ॥ १ ॥ जातिविपुषगपुनपवनमहितकदुमलागहित्वावधत्वंयः
कनिष्ठाकमिगुननिधिआगवृजसामले ॥ अष्टावद्यायमानिष्ठापितरुगवतलाधिसंगमायुर्वन्दमेवयनाथंठुविः
नपूनवनावस्मिनेनंमृनिडं ॥ ८ ॥ मुत्वावेसफवृद्धासकनमृपगगांसफसफार्कलसामयचाष्टममठुनपूनगतरु
वितेलाकनाथं ॥ यत्पुष्पसंपुमृगुगतिरुलददहिनामेवसर्वेचित्वासंस्तपासाभूतय ॥ वचनातिवितिसपुयाकु
॥ ० ॥ ०० निसृगतावदानसफवृद्धमुक्तिसमाफ ॥ ० ॥ ०० ॥ ०० ॥ ०० नमा ॥ सर्ववृद्धवाधिसला नोमलामूलहानकाभनेका
सस ॥ १ ॥ सर्वदिनासिसमानिष्ठावनदाममयंठुअष्टदालम्बनमगाममसर्वदाभनेकनस्यवयषदाअननभ्रस
मनानकधर्माकखन ॥ महाविनापहसम ॥ असहमहावलेकर्ण ॥ २ ॥ महावलाकिनेहह ॥ वज्रवशाकैयधन ॥ २ ॥ २ ॥ मणुल
वनाग्रविकसकृत् ॥ २ ॥ २ ॥ सर्वनथाहिदाल ॥ २ ॥ अश्वनी ॥ २ ॥ रुद्रस्वाहा ॥ ० ॥ ०० निसृगतावदानसफवृद्धमुक्तिसमाफ ॥ ० ॥ ०० ॥ ०० ॥ ०० नमा ॥ सर्ववृद्धवाधिसला नोमलामूलहानकाभनेका

धनसि
२७

निसमाफ ॥ ० ॥ ॐ नमो वृक्षाय ॥ ॐ नमो रगवत वेत्राचनपुरु कठु ना मायतथा गगा यो हत सम्यक् वृक्षाय
॥ तद्यथा ॥ ॐ गुम्फ २ समय २ गत २ दानु समा नृप अना न वेत न म्व ज सा रवति महानेन निला र म्व निना कूल निर्वो
॥ सर्व वृक्ष नां विष्ठा विष्टि न स्वाहा ॥ ०० ति वेलाचन नाम धन निसमाफ ॥ १ ॥ ॐ नमो रगवत आर्य शी अश्रा सा
यतथा गगा यो हत सम्यक् वृक्षाय ॥ तद्यथा ॥ ॐ कंक निश्वा क निश्वा च निश्वा च निश्वा च निश्वा च निश्वा च निश्वा च निश्वा च
सर्व कर्म पत्र पत्राति म स्वाहा ॥ ०० ति अश्रा सा नाम धन निसमाफ ॥ २ ॥ ॐ नमो रगवत नृप कठु ना मायतथा
गगा यो हत सम्यक् वृक्षाय ॥ तद्यथा ॥ ॐ अमि न २ अमि ना र वे अमि न स ह वे अमि न सिद्धि अमि न मिनि अमि न ग
गल कि र्ति क न सर्वा र्थ सिद्धि न सर्व कर्म क सु क ल प्रय क नि स्वाहा ॥ ०० ति अमि ना र सा नाम धन निसमाफ ॥ ३
ॐ नमो रगवत अमाद्य सिद्धि यतथा गगा यो हत सम्यक् वृक्षाय ॥ तद्यथा ॥ ॐ सीद्ध २ सीद्ध पन म सिद्धि स्वाहा ॥ ०० ति
अमाद्य सिद्धि नाम धन निसमाफ ॥ ४ ॥ ॐ नमो वृक्षाय ॥ ॐ नमो रगवत चन्द्र वज्र काटा य ॥ तद्यथा

॥ हन २ कृ २ तिष्ठ २ वध २ हन २ अमन हं हं हं हं स्वाहा ॥ ७० ॥ नि अमन हं कामधन निसमाफथा ॥ १७ ॥ ॐ न मा ८
श्रीमहनाथाय ॥ ॐ न मा अलपं के नाय क मति दहन दयाय मरुती पदा नाय चड का किमनि वृ धिप्रदाय देव
पुरु कं वोगुह साय मरुती वानिव लपदा ये स वे स लो ना के सानि कूल पू लि कूल प्रजा कूल ॐ श्री ४ धी ४ हं हं स्वाः
हा ॥ ७१ ॥ नि अलपं चमं रुती ४ साधन नामधन निसमाफ ४ ॥ १८ ॥ ॐ न मा श्री ४ गं क सिंहाय गनय था ॥ ७२ ॥
निगु नि विजयं स्वाहा ॥ न मा सु व्र धाय सु विगु ध वा ध य विगु दं मी धं पति नानू व्र धय ॥ सहर्म पू त्या प ग ता नू ध य
ह ग वा य गु आप नि गु ध व्र य ॥ अहा अहा व्र ध मन रु न ज सं अहा अहा सा ग ल म नू ल ॥ अहा अहा व्र ध मन रु न ग
च न डा इ म नू पृ ष मि वा नि इ लं ॥ अहा अहा का नि क ल था ग न ४ सा के कूल न नं दु स र्था ॥ य न द ग ल खि नं सु
प्र मू ल म स व र्ष स लाम नू य ह र्थ ॥ ग न रु ४ ग क म नि क ल था ग न ४ स लो रु म ४ सा क पू न य वि वृ ४ ॥ गं मि न ग न
विल क स मा धि ४ य द न वृ क ति न व्र ध ग च ल ॥ गु न्या का य क ल थ सी व का ना वि हा न गु न्या धि प दा रु मा ना क सर्व

आम्रलि
१०

धर्माश्च कृतिश्च गुणश्च ॥ सत्त्वापि गुणश्च ॥ मनोगात्रविद्यत ॥ निरुक्तं निरुक्तं जितं स्मृतं मिनिरुक्तं ॥ गमामि जि
नस्य दर्श ॥ सनतं च निरुक्तं पुनिधीकः ॥ सम्बद्धं च सचदर्शनार्थं ॥ स्थापयति निरुक्तं च निरुक्तं निरुक्ति ॥ अकः
नपाप्मि जितं स्या दर्श ॥ अदक कारुत्थि नायक लं अति ॥ अकः कुरु मिसूगनस्य दग ॥ ३ ॥
सनावनाय द्विजसजनि लं ददहि मदर्शनं यगीतलं ॥ सत्त्वा ॥ सद्गुरु सुवर्णपदं ॥ अयं ज्ञायमानं कुरु
कनायकं ॥ ४ ॥ ॥ दददि मदर्शनं मोम नूपलं याहि जगगदवदं सिनं ॥ गुन्याश्च काया सुथग्रवका
ना आकासगुणा गगनं स्वरावा ॥ ५ ॥ मायाम निरुक्तं चन्द्रकल्या सर्वे च सत्त्वा सुविन ॥ स्वरा वामहाकगु
ना ॥ स्वये नाम कस्या ॥ १० ॥ ॥ निरुक्तं वरुणाय कलदवना सुति समाफ ॥ ० ॥ ॥ कुं माया जालसपत्रि
वानय ॥ ॥ ॥ निरुक्ति माया जालमकुं गथा ॥ ० ॥ ॥ कुं नमो ॥ मेरी सिंहय कुं नमो ॥ श्रीमेरी यवाधिसत्त्वय
महासत्त्वय महाकारुनिकाय नमो ॥ गवतं अक मूनये तथा गगायां हं क सम्यक् वृद्धाय ॥ नयथा कुं अजित १ अयना

जं ०

जिन कर्म हन २ महामेघी वना किते कन २ महाममसिद्धि हन २ महाममभुन विजसमन २ अस्मा कसममसिद्धि वां धि २ मह
वाधिसाहा ॥ ॐ माहि २ महामाहि स्वाहा ॥ मनि २ महामनि स्वाहा ॥ ॐ निमे द्विय पु निस्स नामसु ॥ ० ॥ ॐ नमा
१ श्रीमेघि नाथाय ॥ लव विद्यानसंपन्न ४ संया कं वृक्ष यं सर्वसत्त्वार्थ प्रविशति रायपुष्प पदिय गन्धने वीच संसागा
इ ४ रवाकु नमनू लनाय सु मा कं वा धोपनि काय ॥ ॐ आ ४ मेघ ये र स्वाहा ॥ ॐ निमे द्विय नाम अ नति समाफ ४ ॥
२३ ॥ ॐ नमा ४ गी लाक नाथाय नमो घपा साय नम ४ ॥ एवं मयां क्क नम कस्मिं समय रगवान् प्राक न क पूर्व न विह्य
निस्स ॥ अथ वला कि न ग्व तमा रु वने ॥ अने के गल गतमाने चमो का स का निम क क नो नात्र त्व वृत्र समय क
लाति रसध नसाई अका द गति हि रिस मरु मे नवन व विरु थ वाधिसत्व की टि नि य क स न सु र मि ४ प रि व न ४ य न
न क न ४ थ त मरु ग्व ल व ष का यि कां द व प अ न धि तो के धर्म ड ग य दि र्म ॥ अथ खत्वा य्या वला वि न ग्व ना वाधि
वाधिसत्त्वो मह सत्त्वो स्थाया सना द कां ग मरु ना सं ह क ला द त्रिन जानू सं सु लं प था वाप नि का पाय न रग वा से नाग

विचित्रिकातिकर्मरुगवन्तुहनिगलग्रहिमिस्त्राकायसांनकाखदवनेवाकमयहनिर्वन्मनगाउननरु
हकावालांखाभावा॥संज्ञपनोरुगवन्काकेयपीठयावाचिरुपीठयावाइ॥स्त्रपदगतिनवाहकर्मपत्रिभयंग
युष्मददानेगच्छन्ति॥प्राजावगुहसत्त्वानाग्रहाधिमकीकाना॥यदिदंरुगवन्चनमृ॥पर्वदश्चत्वात्रावर्तमाहि
वासाहनापियेठुदमादयममाद्यपागदय॥अथकिउरुहीषान्तिधनमिषान्तिवाचयिषान्तिनिषिषान्तिनि
षापयिषान्तिपर्यवापान्तिअथत्वांचसत्त्वानाग्रहावयिषान्तिआर्यापवादके॥सधर्मपदिकव॥अविचिपनय
न॥सर्वधर्म॥वृद्धवाधिसत्त्वाय्यमवकष्येकूवधयुक्तिरुव॥सवाधियतिसात्रीगच्छपायत्वांसेवनमापदकनसे
वगावरुगवन्॥कोपवासकायदवजन्मनिगुहानिपत्रिभयंगमिवाहवन्ति॥अकाहिकनरुन॥वाहाहिकनवा
ग्राहिकनवा॥चातुर्थिकनवाहनेनसपाहिकेनगाने॥अहिसूनेनवा॥दकगुनेनवा॥नासागुलेनवा॥अनागु
दकाष्टगुलेनवा॥अनासूनेनवाक॥अगुनेनवा॥हृदयगुनेनवा॥उदनगुनेनवापा॥अगुनेनवाक॥अगुनेनवा॥अह

एतस्मिन् न वा अलाग्रह निगुन न वा अ निगुनि ॥ अ न ग लि र्य सु नि ग ना ना म्ना स ता क र्त्तु प र ह्नि सा क
 र्त्तु नो य दा स्या नि ॥ १० मा न च म कु प दा नि चि न यि ष्या नि ॥ अ प नि शि य न ४ अ र्प न ४ अ वि के ल्य क न अ स
 प र ४ अ चि ले ग म न ४ अ क ल न न ४ नि ल प न स म चि ना नि अ प र ४ वि ल हि न प च क न ॥ अ न न यो ग न वृ ध
 न स्या नि स ग यि न वा ॥ न द वा द स स्या दि ग्ना वृ ध स ह्म स म्प त द र्ग न का न यि ष्या नि ॥ अ ह य द न र्म ना व क नि षा
 नि प या न या व त्प स क नि षा त क त्वा गृ हि स्या यि ष्या नि ॥ किं व र्त्त ना र्ग व न न यो न्य मु प्र यो वा अ ष नि ॥ स्व मि र य
 न वा प ना न द ए वा उ च ग्ध न ह त ना वा ॥ ग्म षा नि स न व र्ग ग व न्पा ति न ना र्म व स की र्ग न स्या न र्ग व न न वा क र्त्तु प र
 ह्नि स न स्या नि य नि ष्या नि ॥ न य थ पी ना म स र्ग क शि ले व प ल ष थ द न म्वा क र्त्तु नि वा अ क र्त्तु यि हा ष मि
 ला यो ल जि ला या वा पि स्या अ त्मा न ले प थ न ॥ न च न स्या च न स क र्त्तु न क स क लु नि का या ग व र्ग व नि ॥ अ न ना ह मा क
 र्त्तु न नि ला षि ना वा न्ध ना रि कु मि ष्या नि ॥ अ पि च स ग न्ध ए व स य व म व र्ग व नि न द म दि य मा य वा स द्द व य य ४ क शि र्द

१०

ॐ उ त्सापया लं॥ यावत्माया गच्छ नापि पूजयत्तेषां रगवन्नपदं क संसत्ता नास चवं वृत्तं लहनु ॥ १ ॥ विष्णु कि॥ यत्र यत्रापि
पत्न्य क इ विलहिता श्रु विष्णु कि सिलसमाधिपुहृत् पूज्य संस्कारंगं च तसो गच्छि कमव क नोति य ॥ कश्चि रंगव कृत ॥ २ ॥
वा कूल इ हिता वा रि रु वा रि रु ति वा उपाग का वा उपासिका वा तद न्या वा कश्चि त्स ख ॥ अ मा ध्या ग द्दय म्दिग्ध उक्ता क
म्या म्प वा स कुर्यात् ॥ स फ वा ना न मा ध्या पा ग द्दय म्दिग्ध उक्ता क म्या म्प वा स कुर्यात् ॥ स फ वा ना न मा ध्या पा ग द्दय म
ना ना पये र्प नि व ल्पये ॥ त स्म र ग व न्द फ नु व न्द म्मा वि ग ति न न सं सा प्ति का कि त्वा ॥ क त म वि ग ति र्य इ त ता ग म्मा
स का य ना त्प त्सा के ॥ उत्प न्ना अ स्मा ना ग १ क म्मा व स न गी पु ष ग म या स कि ॥ सिग्ध म ना इ ग्ना इ अ श्रु विष्णु कि ॥ व इ ग न पि
य श्रु विष्णु कि गु फ न्दि या र्थ पु ति ल क्क अ स्म र विष्णु कि ॥ उत्प न्ना अ स्मा र्थ नि वो ना प मा ष कि ॥ अ ग्नी ना न द क्क नाः
द क न ना ग सं क्क कि म न सा पा प ह नु ॥ क म्मा ना अ स्म र्ता र विष्णु कि ना स ना व क्क यं र विष्णु कि ॥ न वा व द्दि प्ति र्ता
र विष्णु कि ॥ स फ वा ना न मा ध्या पा ग द्दय म्दिग्ध उक्ता क म्या म्प वा स कुर्यात् ॥ स फ वा ना न मा ध्या पा ग द्दय म्दिग्ध उक्ता क म्या म्प वा स कुर्यात् ॥ स फ वा ना न मा ध्या पा ग द्दय म्दिग्ध उक्ता क म्या म्प वा स कुर्यात् ॥

धन ॥
१३

वाउपगमिषाकि ॥ न वाजाहनागजा परकुंग डूवति ॥ सर्वसत्त्वानांच पिया हविषाकि मनश्रायच हविषाकि ॥ न वास
गकुरय हविषाकि ॥ उत्पन्न आस गकुरयंथा धुं प्रसंयासकि ॥ न वास मनष हय हविषाकि नच कारादरुयं
नच गकि निरुयनयासकि वाक्के ॥ अपक ॥ हविषाकि नागिनान विषननगमि ॥ कानक निषाति ॥ दवाचास
गततंसमितं जहावर्गुकि यस्मात्कि ॥ यद्यथापयसा के पुत्रतु वीतहि नश्च हविषाकि ॥ मेष्टिक नूनाम
दितापकाया ॥ १००॥ विगन नृगंसापकि काकिरवां ॥ आप नान दुधर्मापनि ससा न कतमानधे ॥ मनन का ले श्री
श्रार्थावलोकितगव आहिरूप तसमूखेदगं नदासकि ॥ सुखन कालं कनिषाकि नरुग कदृष्टि हविषानहसु विरु
पं कनिषाकि नपाद विरुनाचा नपसा वनमश्च नट १ काल कनिषाति ॥ सुपासु नसुति हविषाकि ॥ न ॥ ॥ मुख ४
कानक निषाति मननं का नरुयपुल नश्च नरुवषाति ॥ य दुवासा वृद्धे पुपनिधि सु तापयकि हविषाति ॥
वित्तिहिनश्च हविषाकि ॥ कल्याणमिर्विदिनदिनेनिका लयी स्वात्रायनिवर्हमिदं ॥ मयमाह पना गश्च न कत १० संका

जं ३

[illegible]

धानि
३८

लोत्रद नात्र पुमवस्य सर्वं त आगतस्या र्हनस्य क्वं वृद्ध एतद्गवतः सः॥ नमः सर्वं वृद्ध एतद्गवतः सः॥ नमः सर्वं वृद्ध एतद्गवतः सः॥
अगताया॥ नमः सिंह विक्किदि न त्रागाय नथा गनयनमा इमि ताहाय नथा गनय॥ नमः सुप्रतिष्ठितमनि कूटमा
जायसु अगतय॥ नमः समक नश्च द्धत श्री कृत नाजाय नथा गनय॥ नमः दीपसिन्धु नथा गनय॥ नमः गीतिविनव
अगताया॥ नमः विष्णु वायन अगताया॥ नमः कुकुब्ज नाय नथा गनय॥ नमः कनकमूनय नथा गनय॥ नमः क
अपाय नथा गनय॥ नमः गभ कं नून नथा गतायां हने संमो कं वृद्धा य॥ नयथा॥ कुं मून २ महामूनय स्वहा॥ कुं सम २ महा
समयन २ मां सर्वसत्त्वा नां च स र्वपाय पग मन स्वाहा॥ नमः सुप्रति कीर्तिनाम च याय॥ नमः समक्ता वलस विष्णु
संभामर्षियत अगताया॥ नमः एड केतु ध्वज श्रियं नथा गताय नमः नक्षत्रपुलागव न त्रागाय नथा गनय॥ नमः एड निरु
तरे खड्ग नागाय सु अगताया॥ नमः २ विका कग्रामिने नथा गताय॥ नमः वृद्धाय॥ नमः धर्माय॥ नमः संध्याय॥ नमः शक्ति
नाग नपुत्र स च एव वृद्ध एतद्गवतः सः॥ नयथा॥ स्मृतिवर्द्धनि गतिवधनिधु नि वद्धनि पु ह्ना वधनि प्रतिहा नवाधनिध

जं

नवद्वनिसमर्थवधनिसमाधिवधनिसर्ववाधियह धर्मवधनिसकवूधधर्मपनिपूत्रतिय स्वाहा॥ नमोनत्तययाय॥ ॐ नमो॥ ४३॥
ब्राह्म्यावितोविक्रमनायवाधिसत्त्वायमहासत्त्वायमहाकात्रलिकाय॥ नमोमहास्त्रामयाफाय॥ वाधिसत्त्वाय॥ ५३॥ नमस्तुत्वाय
दंमार्थावलाकिरुग्गवमूखाकीर्णसमाध्यापागं नागं नामहृदयनथागतं समूखं लापितं महतापर्वदमस्त्रइहमिदानीमावर्षी
षासिष्ठाकुमकुपदं सर्वसत्त्वा नां च त्रकातवकु॥ नमथा॥ ॐ वधश्चिविश्चरुश्चमनश्मिनिश्चमनश्महाकात्रनिक स्वाहा॥ सं
ॐ धनमकु॥ १॥ ॐ गनश्मिनिश्चमनश्चरुश्चिविश्चविनिश्चिनिश्चिमिनिश्चिसिश्चकनश्चमहापर्वदस्त्र स्वाहा॥ दवनासं
ॐ धनमकु॥ १॥ ॐ वधश्चोधश्चोधिश्चोधयश्चकनश्चिसिश्चकनश्चमहापर्वदस्त्र स्वाहा॥ नथागतमकु॥ १॥ ॐ कन
श्चिनिश्चकनश्चमहास्त्रामयाफाय स्वाहा॥ नि। वगनमकु॥ १॥ ॐ चनश्चसर्पश्चविचनश्चनृत्तश्चनृत्तश्चिनिश्चनृत्तश्चनृत्त
निश्चनृत्तश्चहहिमहाकात्रलिकाय स्वाहा॥ आकर्षणंमकु॥ १॥ ॐ महापण्डपनिवेगधनश्चिनिश्चधनश्चनृत्तश्चमनश्चचनश्चचन
श्चनश्चमनश्चलनश्चहनश्चहश्चिश्चहं॥ १॥ ॐ कालकर्मवगधनधिमिश्चधनश्चनृत्तश्चमनश्चचनश्चचनश्चचनश्चहनश्चनृत्तश्चमिगनसहस्र

[illegible]

ਖਾਨਦਾਨ
੨੬

वहलं स्वाहा ॥ ॐ नमो लोके कर्त्तुं ॥ ॐ इन्द्र स्वाहा ॥ नियतानियतवादन्यागुरुसम्यक् न कर्म ॥ ॐ गवतः ॥ पवित्र
यकुरु स्वाहा ॥ ॐ पमरु स्वाहा ॥ ॐ वरु धर्मसेवाय स्वाहा ॥ ० ॥ पाठनासिद्धिस्तु मनुष्यकर्मानिहवकिन्ति
कात्रजापनपक्षेन न र्याति विष्णुध्यानि ॥ सर्ववर्मावनविष्णुचकलाति ॥ अंगुर्धूपनसिमाबंध ॥ रक्षादके
नगर्षपत्राकिलकाद्यैः सर्वज्ञानपूजकं वंशयित्वा सर्वव्याधिष्वुक्तं तस्मै कर्मापनिर्गमनाय ॥ कारवा
दहृद नंगमुत्तमकासुत्तमउदत्तमनवागमदकं विरवनागनं हिकया ॥ उदकं तवा ॥ चक्षुना कैग ॥ अतः सुयुक्त
वर्णवन्धयित्वा ॥ सिमावन्धयति ॥ सर्वत्रागुर्धुकेनादकनवा ॥ तस्मै कनवासर्वग्रहपूज्यचन्द्रि केसुत्तमं ॥ सर्व
ज्ञानपूज्यत्तमं ॥ सायै किं नारुत्तमलाहलिंगं त्र्यहं मध्यापिण्यतिष्ठ ॥ चक्षुलाग ॥ अदकं पत्रावदकं ॥ हहिमहा
कारनिकं ॥ स्वतमहं महाहं तमहं ॥ कनर किं ॥ कनर ॥ धनर ॥ हनर ॥ वनर ॥ सनर ॥ कनर ॥ कनर ॥ किं ॥ कनर ॥
ममहाविष्णुध्यानि ॥ नमो लोके कर्त्तुं ॥ ॐ इन्द्र स्वाहा ॥ नियतानियतवादन्यागुरुसम्यक् न कर्म ॥ ॐ गवतः ॥ पवित्र

असि जगाम कृदा ॥ महारुग कमला लङ्का कनका ॥ अनामसमाधिमात्रपु कं पावह सत्त्व संक निप निपात्र नका ॥ महाकात्र
निकं सर्वकर्मा वलन विगुध क ॥ सर्वहृन् नप निपूत्रकं ॥ सर्ववाधिय निविमात्र ॥ सर्वसत्त्व समाश्रित नक नि ॥ नम
मुने स्वाहा ॥ अमाद्यय स्वाहा ॥ अमाद्यपागय स्वाहा ॥ हाममनु ॥ अजिगाय स्वाहा ॥ अपनाजिगाय स्वाहा ॥ अमिनागाय स्वा
हा ॥ मानस नप मर्द नाय स्वाहा ॥ अरुयपु दाय स्वाहा ॥ जमाय स्वाहा ॥ विजयाय स्वाहा ॥ जयविजयाय स्वाहा ॥ वनदाय स्वाहा ॥
अकान्त मय्यग्रम नाय स्वाहा ॥ अर्द्धवै मत्रर्म कूत्र नमा सुने स्वाहा ॥ हृदयमनु ॥ कुं न न २ हं हृद स्वाहा ॥ कुं जय २ हं हृद
स्वाहा ॥ कुं यमिहं हृद स्वाहा ॥ कुं इजय स्वाहा ॥ कुं श्री ४ जे लोक विजया माद्यपागय हं श्री ४ हं ४ हं हृद स्वाहा ॥ उपहृदयमनु
॥ कुं वसुमति स्वाहा ॥ कुं ज्ञाना किक स्वाहा ॥ कुं वरुं ले २ स्वाहा ॥ कुं जाला किक जिं ४ कुं ४ हं हृद स्वाहा ॥ नियमानि यन वेदनि
यासुहृत् भलगवन कर्म ॥ लाला वन ४ यत्रिय कूत्र स्वाहा ॥ कुं यमह माय स्वाहा ॥ कुं वधधमी स्या य स्वाहा ॥ ० ॥ पठि माहि
रु स्यामनु स कर्माति हव मित्री कानगाय नप ॥ न कर्माति विगुध यवि ॥ सर्वकर्मा वनन विगुधि व कनाति ॥ अर्द्ध नृधप

अनं
१७

नसिमाव श्व॥ रुमाद केन गंघा पत्न्यादिना कि ल कथे ४ सर्वज्ञेन सुसूय कं व श्वयिन वं ॥ सर्वथाधिपूष्य नतेन सुद कं वाप
त्रिजपादा न वं ॥ का खिद्ये छेद न समु न न शं सुयन उदन सुयव आद के विष नासन मिर्हिक मा ॥ उद के न वं ॥ च ह नो ॥ ७४
न सुव र्त्त वं धयित वं ॥ द न सुलं कल विन द न व सु सिमा व क्ष प च न गी क सु प्र म क विस नि वा ना त्य नि ज पा च तु पू र्व दि न कि
ल के पू च तु दि ग त्रि र पा न वं ॥ सि मा व न्ध व कि ॥ सर्वत्र शा सूयं क ना द के न वा ॥ रु म कि न वं स र्व श ह र्ष प क्ष न कि क
सूय क ॥ सर्वज्ञेन सु ॥ सुय कं ॥ स ये कि ना रू क लो ह लिङ्ग ग ल य सै ह र्ष म ध पि प त्रि य न ॥ च रु ना ग न्ध कं प ला सो द
कं म ध र्द क वा ॥ सर्व क ति के स ह वि वा दा णा र वा न क्ष द कं प त्रि ज पा मू र्त्त प ह न यि क वं ॥ प त्र वि र व य ना र्त्त ना कू प द वा
न शा सु र्त्त क ल गं सु य पि त्वा ग वि नां सु चि व रु पा वि न न म ह नि पू जां कृ त्वा वा च यि त वं ॥ म हा सा नि रु व कि ॥ न न वा द के न
स क व स र्व स त्वा नां न शा क ना र व नि स र्व रू प ड वा प स ॥ ४ ५ सा मा कि ॥ मू दि का च द न नि त क ह द य क वि ग ति वा ना न
त्रि ज पा क र्त्त वं स व नि र्वा न या मि त्र प यि च कि ॥ ग न न गाय न म ह न ज प क्षि हा म न स र्व स त्वा न ज व न न हा म न स र्व य ह रू

जं ७

ननका॥ जयाविजया अथनाजिमानां कनिश च नां कलि॥ वात्रुति अहयपानिच्छिद्यपातिगन्धपिपगतं वक्राविष्
काकी॥ सामनाजिसूनन्दाचेति॥ यथासैरुवनाइवृह नगनवात्रासत्रिजपमनि कृत्वा गितसिवात्रयितवां॥ वात्र
नागत्रनात्रिं विलज्जस्वयंपत्रं सोलाग्धकसं॥ अलक्षिपसमनंप्रदक्षेननमसिनां वृद्धनसर्वत्राकृत्वा
वनिविषाग्निनां कमनिविषकृतं नोपयन॥ उत्पन्नार्पितपीजजनपिषाकि॥ श्रीद्वयुगमयिषाकि॥ ग्रहायुगमयिषा
किवानमप्यासनिष्कृतं वात्रिं॥ कत्रविनयासर्वकर्म कलंगी शार्थावला कितञ्च नहृदयंपत्रमसिद्धसमाधितवे
तानिकर्माणि कुरु॥ अथसाधयिषुमिच्छन्निधि॥ पदइत्येकैवर्षे केवदसुनिमामातिरवार्थावला कितञ्चलाजना
मरुदध्वात्रिं शयचकर्मकनयनिवासा॥ पञ्चपतिवगधन॥ सर्वात्रकात्रविरुषितं कृत्वा पाषाणिकेन चित्रकलेन
चित्रायितवां॥ तन॥ साधकतनसाग्रोपनिर्गमयनमल्लं कृत्वा श्वरपूजावकिर्त्त॥ अक्षगन्धदकपूर्वकं
४ स्त्रायितवां॥ अक्षद्वयपहनाश्वरुषिर्नूपकत्रनात्रि॥ वनिमान्नेस्रधित्रवर्जित॥ अक्षद्वयपदहनाविद्याअष्टसह

नमः कस्मिन्समयेरुगवान्ग्रावस्थां विहृतमिस्म ॥ जनवने न्नाथपिपुसा नाम नवत्वरुगवा नायुष्मन्मानन्दमासकृत्यः
निस्मा ॥ उक्तं ज्ञानमां नन्द ॥ ४० ॥ माषडं नीमहाविद्याधानयनपर्यवाप्तुहि नत्कसाहता ॥ ४० ॥ यमा न्दुषुजनिमहाविद्याया उचैहि
महर्षिं कहिमहा नूलावहिलखितां ॥ ननु वृद्ध नरगवत्कावुस्मा नाचसप्रतिनां स के तदवा नामि न्दं धिधितनापुनमात्राः
जनविन्द कनमहा नाजन विनपाजनमहा नाजन विनवत्तनचमहा नाजन ॥ ननु मनुष्यदा निरुवन्ति ॥ नयथा ॥ दपति
नदन्ति किमधुमति ॥ पलुनः का लुनः यश्च कश्चिदानन्द ॥ ४० ॥ माषडं नीमहाविद्यामरुहयन्ति वाचयिष्यन्ति मनसि कति
कि पर्यवाप्तुकि नृजनं संपूतं वंजनं वधिमुच्यते ॥ नाथरुयाता ॥ नो नरुयाता उदकरुयाता पुण्यधिकरुयाताः दवरुयाता
यक्रुयाताः गन्धर्वसूतगन्धर्वकिन्नरमहात्रयमनूषामनूषारुयेत्यष्ट ॥ सिंहं व्याद्यदि पत्रिजयेत्तद्देगं सिंहं मृगं महिषं सब्र
४० ॥ १५ ॥ ४० ॥ मां मनुष्यदा वं किञ्च मिथ्यकि ॥ सफासा सफासा ॥ ४० ॥ ननु ४० ॥ मां निमनुष्यदा निरुवन्ति ॥ नयथा ॥ ४० ॥
लउकः काकोन ॥ सकचिक कसि ॥ ननु वनिजसवति नमो वृद्धाय ॥ नमो धर्माय नमो ४ संघाय ॥ नरगवत्काहिकं कलसा

धम्मलि
६०

प्रतिपा गालयन् ॥ दहि ककलपति व्यागय लषते ॥ दहि ककलपति व्यागय ॥ लषते ॥ वधवकस्य मरुमरु कसिना
रुं यसिंहं नृदिना गस्य द क ना गय मरु ना गस्य ॥ जिह्वा ना गस्य ॥ उदन मरु न स हृदय मरु न स्य ॥ नृना हि कस्यः विगुचि
कस्य नाह मा न स म नू प म मि ॥ सत्वा वा स त्वनिका य क ॥ य ० माहि म नू प ना नि ॥ ॐ मा जित क र्मा ॥ ॐ मति प म
रुं ॥ देह स्य यित्वा ॥ यकिना म विम ना द व व र्ष स र्वा न ति सू का व नि प्र व ॥ स्या प य न वि ग्ध क र्हि क मा स्य ॥ ॐ प ॐ
मना ह न न म क म क य ध कि का टि का टि तु स्या नि रु त तं एत ॥ आ न न द धो ना म स र्ग य ल षि त क मी वि पा कं ॥ नू द म वा च
ह ग वा ना रु ना न्ना य्वा न दं ल ग व न्ना ल षि तं म र्ण न द न्नि ति ॥ आ र्थ व ठ रु नि महा विद्या ना म धा त लि समा फ ॥ ३९
ॐ न मा नी ल क ॥ ला के गे ला य ॥ ॐ न मा आ र्थ व ला कि न न ना य वा सि सत्वा य म हा सत्वा म हा का नू नि का य ॥ न य धा ॥ ॐ
म ति प म र्म ॥ ॐ सर्व वं ध न चू द न क ना य ॥ सर्व पा प स म्प दा ष न क ना य ॥ सर्व धा वि षु स म न क ना य ॥ सर्व लु प ड व
वि ना स न क ना य ॥ सर्व लु य षु ड ल य ॥ न स्मि न स स्मृ ते ॥ इति आ र्थ व ला कि न न ना य स र्ग व नि न कं तु ना म हि दे म आ

६०

[illegible]

सर्वकर्मावननानिममलगवतिसहस्रावर्तिः ४ सर्ववृद्धवलाकि नचरु (अत्र जिह्वा म ना विह्व न वि (अ धनित्वा न यथा ॥ ॐ सूत्रं
सूत्रं नरु नरु सं मरु नरु नरु नरु ॐ सर्ववृद्धा धिष्ठि न स्वाहा ॥ ॐ सर्ववृद्धा वना कि न स्वाहा ॥ ॐ धर्मधनु ग क स्वाहा ॥ ॐ अरु वगव रव
वधर्मा वध ध नि स्वाहा ॥ आय सहस्र वर्त्त नाम धन ती समा फल ॥ २५ ॥ ॐ न मा लो क नां था य ॥ ॐ म नि प म्भ ॥ का न ध
न या ग व न क म ल ध ना ज ण मा ना वे रु कि या या क र्म गि धी नः क ल पू व द द य या न क चि रू प वी धं अ नु ग ना न या नि हि
म क रू न त्वं मं कु ल गी लु धं ॐ म नि प म्भ का ग उ ष ग रू ल य द पा तु वी ला क ना थ ॥ ॐ ॥ म य मा मो ह ड का लं क प्र यः
ग्री क उ ष पा प या च न का लि त्वं द वा स न व ग न ग ति ना ष ष श्रा वा न ना साः उ द का ध र्मा का मा अरु य म्भ रू ल द यि ना
ना पि सि दि ग उ क्क म्भ नु नि ल रु नि क म नि म य रू च ड स्व ल वा ॥ म ॥ नि प र्मा म्भ नो नि सि ह न कि न ना स कि का
प म्भ सं हः पा थि ग अ चि ना नि स क ल ग न नि धि रु म प म्भ वि का गं उ वं सा ना य मा क्क न व व न ति ना ना क वा ल क र्मा
सर्व ह्ने ला क ना थं सू न न न रु नि ना पा तु वा र्जे न रु तं ॥ ति ॥ प म्भ प मा सू धि न अ प न हि नं ह न दि फी प वी ध य म्भ

अत्र लि
६२

एषा नानाका लोका कलन नूदिना पापम का धर्मो मां मश्री रू नदी पंक्त वति न वगु न लाषिका सर्वला का लीकाना ला क
नाथं पन मगु न क नं गान लि तस्य वाधं ॥ प ॥ मना हियं सम कं सकल समुदिना मिश्रता गुणल कया या वा ॥ ३३ ॥ मा
ना सुक न सुख रु संताहि मा धं य क धं ॥ या व ह ना मय विनि र व समुदिना वा क वा न कु न का क शि त दि र्घ सु धि न म नू ह
दय धि ना पा तु वा ध र्म चि र ॥ मे ॥ इ हं ग ना न य क च क थ स ह ल ना ह ल लो क वा ॥ ३४ ॥ वा धि य हा त्रे य न वि क
त न लो सर्व क थ पु सा नं ॥ वि धा ना वे ध ना थ अ ति क न न रं गं का यं सि धि च का यं ॥ स नू वा अ म ना यी य ष क न क थि ना मि श्र
वि क्रा म शि तं ॥ इ ॥ स म्प कं वृ द्ध मा ना त य स क ल ह ना लो क ना थ पु र ण वा य तू थं प थ मा ना प ह सि त द द या ग न्य ना मा क
ला हा आ ए क ल्या न ह तु क थि क न न रं ना यां त यां त वि ल षा ला या ना मा नि ना ला अ नू ल स रु न ना गु द ना द ह द वा ४ ॥ ति
थ मा इ न ॥ ८८ ॥ न स फ मि श्र न न स य क ष ७ क न स व स मा फ ४ ॥ ३५ ॥ ॐ न मा लो क ना थ य ॥ न म स्त वा धि स त्वा य म हा
स ला य ना धि नि ॥ आ र्म्य व लो कि त ग म य म ह ग्वा य म रू गि य ॥ १ ॥ प म ग्री रू धि ता ग म य स द र्म व न दाय न ॥ न म व स क ना य

६३

उवनहृदि कनायक ॥ सर्वदा जगदात्म सर्वतदानदाय च ॥ सतसहस्रायकाति नमः ॥ ३१ ॥ वडवामृत
पर्यन्तं गसिदिगमननाय चः सर्वधर्मा नूपाय धर्मप्रियाय सूर्ये ॥ ३२ ॥ सर्वसत्त्वमहर्षसंसाहकनाय च ॥
मत्स्याय मूर्जजनुतामात्मसनकलाय ॥ ३३ ॥ ह्यननागर्हमांगाय धर्मार्थप्रियाय न ॥ नत्तग्रीरुषितं जाय ससु
भगीयुदाय च ॥ ३४ ॥ सर्वननकहृमिनां संगावकनाय च ॥ ह्यनग्रीसंपुलामाय ह्यनलक्ष्मिपदाय च ॥ ३५ ॥ सामने
४ सासूत्रदेयलाके ४ संप्रजिनाय च ॥ नमस्कृताय तत्कायवदिताय तमसदा ॥ ३६ ॥ ज्ञानयदानदलाय पात्रमिताय
पदसिजसूर्यनाचनदिफाय धर्मदीपकनाय ॥ ३७ ॥ कामरूपाय गभर्वसूत्रपाय सूर्यपितृहमनागभिरूपाय पत्रमा
र्थवियागविभुत ॥ ३८ ॥ ज्ञानिगम्भीरधर्माय ससूत्रवर्गस्थाय च ॥ सर्वसमाधिपाफाय स्वर्गतिकनाय च ॥ ३९ ॥ सं
विच्छिन्नगम्भीराय मुनिपुङ्गवगन्त्रिपि ॥ वक्षवद्वेधनां समागूनकाय च ॥ ४० ॥ सर्वलावा नूपाय समुपवि
तकानि ॥ वक्षवद्वेधनाय चिन्तामनिसूर्यपि ॥ ४१ ॥ निर्वानमाग्नसकनगंदर्गनपदाय च कृतप्रतिवादिः

अननि
११

निर्याच्छाषकानि॥ १५॥ कृशीरुगायंलोका नाहेषाठुकनिर्वाहिना॥ सर्वाधिवाधिमूकानापत्रिमाचनकानि॥
॥ १५॥ सन्धायनन्दनागन्धयस्त्रासुविनविभुत॥ श्रीमतामाद्युपागस्य नृपसंदर्शनायच॥ १६॥ सर्वमकु
गनाहिकोप्रोयसदुष्पदयावजयानिमहायकविदापनकनायच॥ १७॥ प्रेलाकउसत्वा नांरिषनमूर्हिष
त्रि॥ ॥ कृतवगाउकृष्णालुनक्षत्रादिदिदद॥ १८॥ निनात्पलसूनशायगमित्रधित्रवृधय॥ सर्वधिनाथ
यसर्वक॥ आयहात्रि॥ ॥ १९॥ रूविविधर्मसुवाधिसाअपचिंतायच॥ माकूमार्गहिनृदायप्रचनधर्मविभुत॥
२०॥ प्राफसंवाधिसच्चित्तंसन्माअपचिंतायच॥ प्रादिइर्गनिकृगपत्रिमाकृतकनायच॥ २१॥ पत्रमानूनगा
संवासमाधिदधननम॥ नमाम्हेलाकनाथायवीधिसत्वायनसदा॥ २२॥ महासत्वायसधर्मगुणसंपत्तिदाय
ननमामितजगच्छास्त्रासदाहंगनतवृजन्॥ २३॥ कृजामिसननंरकृकनस्यसिदजगन्पुला॥ कृकबमपत्राधत्तयः
सयापुष्टकहवन्॥ २४॥ ००तिग्रीमदयावनाकिर्गवेलस्यजमनाजमुनिसमाफ॥ २५॥ कुंतमाला

६३

क तथा य ॥ नमहंरगवक्षुः सुवलाकिनग्वनायन ॥ पमहंरमहसायसूप्लादकनायच ॥ १ ॥ पमसायपम
शीपत्रिवृत्समूहय ॥ संग्रहपमहसायजगदाग्वमदायिन ॥ २ ॥ एथिविवननायसुगंधपचचक्र ॥ जिननत्तकी
त्रिणयचि कामतिविरुषित ॥ ३ ॥ ॐ निमहग्वनकनसुवशा नमहंरगवक्षुः सुवलाकिनग्वनायन ॥ महसायज
गहर्लपाशदायमहात्म ॥ १ ॥ एथिविवननायसुगंधपमधनायच ॥ पमशीपत्रिवृत्तायसूचननकनायच ॥
२ ॥ धर्मधनायनाथायदगहमिश्रनायच ॥ सुनिर्वृतिमहायानसंप्रसिद्धतायसर्वदा ॥ ३ ॥ ॐ आर्यावलाकिन
ग्वनसुउमामहग्वनसुमाफशा ३८ ॥ ॐ नमो ४ समकुहडाय ॥ अथखनसमकुहडावोधिसखमहसखजगान
वलाकधनुपनयनानहिलापनहिलापवृद्धकृत्तपनमाननरु ॥ समाकलाकल्पसंनानहिधागयमानारुयस्यामा
माययागमथहिर्गितनप्रतिष्ठानमकार्षिन् ॥ १ ॥ यावर्कविद्गदिसीलाकेसर्वहियंशगाननसिंहा ॥ नानरुवद
मिसर्विअस्पष्टान्कायनुवाचमननप्रसन्न ॥ २ ॥ ॐ नमो ४ पमकायपुनामसर्वजिनाकनामिपुनामसर्वजिना

धननि
६५

रि म्पन्नमननः रुद्रचनिपनि। धनवलन ॥ ३ ॥ ७ क न ग्राग्री नमयं वृकान् वृद्धसूगाननिषर्त्तुं कुसध ॥ ८ ॥ एवं मया न धर्म
न धनुः सर्वधिमृचमपूर्त्तुं जिनरि ॥ ९ ॥ १० च नृजयं वर्त्तुं समुद्रा सर्वस्वनागसमुद्र नृगहि ॥ ११ सर्वजिनान्गुना
नृहनमानस्तान्सूगानास्वसि श्रुता सर्वान् ॥ १२ ॥ पुष्पवनेरि ॥ चमाल्यवनरि ॥ वायविनपनचक्रवनरि ॥ दि
पवनरि ॥ चप्रवनरि पूजनकृत्तितानकनामि ॥ १३ ॥ वस्तुवनरि चराचरवनरि चूर्त्तयदरि ॥ चमनसामरि ॥
पूर्वविजि। कृविपूहवनरि पूजनकृत्तितानाकनामि ॥ १४ ॥ याचनूहृत्पूजा उदा नानाधिमृचमिसर्वजिनाः
ना ॥ रुद्रचनि श्रुधिमृकि वननः वदमि पूजयामि जिनसर्वान् ॥ १५ ॥ यच्च कृतं मयि पापहृत्तया नागकुक्ष्यपु
माहवस्य न ॥ कायगुवाच मननकथे वयं निदगयामि श्रुतसर्व ॥ १६ ॥ यच्च दगदि जिपूषजगत्या लोका श्रुलोका प्रत्येक
जिनानां ॥ वृधसूगानथ सर्वजिनां नां न नृमादधिमि श्रुतसर्व ॥ १७ ॥ यच्च दगदि गी साकप्रदिपा वाधिवि वृध
सुहृत्तया फा ॥ नावहं सर्वि श्रुधमि नाथा चक्र श्रुनूह नृवलनये ॥ १८ ॥ यद्विचनिर्बुदिदगदुकामास्तान-

६५

इयावमिषाञ्जलिहृत् ॥ कृत्वा प्रजापमक लयिहृत् सर्वजगत्पतिताय सुखाय ॥ १२ ॥ वन्द्य पूजन दशन नाय अन्
मादन दधनया चतनाय ॥ यच्च सूर्यमपि संचिन्तय किंचित् वापि पिनामय मिच्छे सर्व ॥ १३ ॥ पूजितान् कुञ्जितान्
कूर्वाय च मयं विदग्दिशितान् कयचानागन्तुं लघुणोत्पूरु मना तथ वापि विवृद्धा ॥ १४ ॥ यावत् कश्चिद्दग्
दिगाश्च ग्राम्यनिगुधरव कुडका ॥ वापि कुम्भगन्तुं हिर्निर्गन्तुं वृद्धसूने हि च हाकुपुष्ट ॥ १५ ॥ यावत्
कश्चिद्दग्दिशि सुखास्तु सुखिना ॥ संदला कुञ्जनाग ॥ सर्वजगत्पतिताय चामिर्मि कृत्वा च ॥ लो कुपुदक्षिन्निर्गन्तुं आग ॥
१६ ॥ वापि च निष्कृत्वा च नमा ॥ लो विजातिस्मत्सर्वगतिषु ॥ सर्वसूत्रमसूत्राय पपति यवर्जिता अह्नित
वया ॥ १७ ॥ सर्वजिना ननु सिद्धयमा ना ॥ लुच निपति पुनय ॥ गीलच निविमत्रापनिगुद्धा निगुम लुमा चिं ड
चनय ॥ १८ ॥ देव नृक हि च नाग नृक हि यन् कृत्वा लुम नृक नृक हि ॥ यानि च सर्व नृकानि जगत्पतिना नि सूर्याहं
दगपि धर्म ॥ १९ ॥ यत्वरूपा तमिता स्वहि मूक वापि चित् मजा तु विमृश्य ॥ यपि च पाप धर्मो वा वन निरुः

अनति
६७

वृषत्रिकयूतातु अस्मत्त्वं ॥ २० ॥ कर्मनुकृतातु प्रपथा गाला कगतिष्विमुक्ति चनय ॥ पमयथागत न अस्ति
फ ४ सूर्यागतिगगलच अगगक ॥ २१ ॥ अचि अयाय ३४ खानपु संमको सर्वजगत्सूखिस्थापयमा ४४ सर्व
जगत्सूहिनायचनयः याव नूतु यथादिगता ॥ २२ ॥ सत्त्वचनि अन्वर्हयमानो वाधिचत्रिप निरुनयमान ॥ ह
दचत्रिचपलावयमान ४४ सर्वि अनागत कल्प चनय ॥ २३ ॥ यमूगतागत ममयाचय न हि समागमूनि सखया
॥ कायपुवाचतुचनन नो या एकचत्रिपति धातचनय ॥ २४ ॥ यपिचमिश्राममहित कायाः हृदचत्रियनिदगयि
ता ४४ न हि समागमूनि सखया न य अह न विनागपिजातु ॥ २५ ॥ संमुखनिष्पम हंजिनप ॥ २६ ॥ वृषसूकाप
त्रिनिर्वृत्तनाथात् ॥ न पूच पूज कनय उदात्रा ॥ सर्वि अनागत कल्पमखिन्न ॥ २७ ॥ धानयमान जिनात सुधर्मव
धिचत्रिपनिदिपयमान ४४ हृदचत्रिचविष्णु धयमान ४४ सर्वि अनागत कल्प चनय ॥ २८ ॥ सर्वल्यष्वसंसात्रमा
त ४४ पूषतुहातु अशय प्राफ ॥ २९ ॥ लुपा मवसमा धिविमा ४४ सर्वगु नैरुवि अजय काष ॥ ३० ॥ एकन जागित

दंज

श्रीपद्मशः सुप्रनक्ति अचिक्रियवृद्धः वृद्धसूगानतिषर्कूमः पश्चिमवापिचरित्रचनमा ॥ २ ॥ एवंमस्य
षनसर्वदिग्गसूगानपथ्यपुत्रियध्वपुमा ॥ वृद्धसमूहपिङ्गुसमूहानाहनिचानिकः कल्पसमूहः ॥ ३० ॥ अकस्म
नागसमूहः नृगसूवर्जिनानस्वनागविगु ॥ सर्वजगत्स्ययथागयद्याषां वृद्धसमूहसूतिमा मननित्यं ॥ ३१ ॥ नृपचर
उ यद्याषनृगसूवर्जिनानां चकनयपनिवर्हयमानाः वृद्धिवलनं अहपुविनायं ॥ ३२ ॥ अकस्म
न नृनागनसूवर्जिनानां कल्पवृक्षगह्वरपुविनायं यपिचकल्पवृक्षमानाः स्फोटनकारिप्रविष्टचनयं ॥ ३३ ॥ येचरयध्वगता
ननसिंहगता इपश्चिमचकनन ॥ नृपचरगमिगमाहानिनिर्णयः मायगतनविभाजनन ॥ ३४ ॥ येचरयध्वसू
प्रविपूहा ॥ स्फोटननिर्हचकनजालमनुवमलाषनसर्वदिग्गसूदालुनिगुविपूहजिनानां ॥ ३५ ॥ येचरनाग
नलाकपुदिपाः नृपविवृक्षनचकपुर्हि यपिचदगननिष्ठपुसादिगतनसंप्रपसंकुमिनाथान् ॥ ३६ ॥ अदिव
लनसमकजवन ॥ यानवलनसमकमुखन ॥ चर्यविलनसमकगुलनः मेषीबलनसमकगतन ॥ ३७ ॥ पृथ

अनलि
६६

वलनसमकगहनः शालवसनः संगतनः पहाडपायसमाधि वलनः वाधिवलनसमदापयमानः ॥ २८ ॥ कर्मवलपति
अधयमाक्षेः सवति यत्रिमर्दयमानः ॥ मानवलनः अवसाकं यमानः ॥ पूनयिरुद्रचत्रिवनसर्वः ॥ २९ ॥ अद्रसमूहः
विश्वधयमानः ॥ निधिसमेदेषैः यैः मौनैः सत्वे समूहविभाचयमानः ॥ धर्मसमूहविषयमानः ॥ ह्यनसमूहविगह्य
मानः ॥ ३० ॥ तर्कसमूहविश्वधयमानः ॥ निधिसमूहपूनयमानः ॥ वृक्षसमूहपूजयमानः ॥ कल्पसमूहचनयमखिव
॥ ३१ ॥ यचरुयधगनानिनाः वाधिवनिपुनिधातविजावाः ॥ नानरूपनियसविश्वधवान्ः रुद्रचत्रियविश्वधियं वाधि
॥ ३२ ॥ यष्टकयः सुगुसर्वजिनाः यस्याच नासमकलदः ॥ तस्यविश्वधसरागचत्रियः नामयनि कृष्णं कृष्णसर्वः ॥ ३३ ॥ काय
तुवाचमतस्यविश्वधियविश्वधयद्रुविश्वधियादगनामनहविश्वधः तादगनाकुसममननः ॥ ३४ ॥ रुद्रचत्रियसमकगु
लयः मरुगीयपनिधाचनयः ॥ सवीश्रनागनकल्पखिवः पूनयिनाहियसर्वीश्रसुखः ॥ ३५ ॥ मानपुमाथरुवयच
नियमोचप्रमाधुवयगुणाः नान्ः यमानूचनिययाधिहित्वाः जानयिसर्विकृविश्वधुर्वी ॥ ३६ ॥ यावगनिपुनरुस्यर

६६

वयाः अनाश्रुत्वा तन्निष्कृत्येव ॥ कर्म उक्त्वा गतुयावततिष्ठः तावन्निष्कृत्य ममपि निधनं ॥ ५७ ॥ यश्च दगदिसिद्धिं न क
नन्तश्च को न देशजिना नो ॥ दिवचमानूषसोख विमिष्यतश्च न ज्ञापमव स्य ददया ॥ ५८ ॥ यश्च लूमपनिनामनना
जं ॥ अस्त्वसर्जुनपदमधिमुक्तिं ॥ वाधितनामपार्थयमानाः ॥ अथ विणिष्ठु वदिमूयत्वा ॥ ५९ ॥ वार्द्धितननरुवकि अपाया
वार्द्धितननरुवकि कुमिताशाद्रिपुसपञ्चनितं अमिताहं पस्य समुद्रचत्रिपुनिधनं ॥ ६० ॥ लोहसूचसृजिवतु नषाः स्वागत
नन्तमानूषजन्मशायाह गसोहि समकलद सुपितथान विनिष्ठु वकि ॥ ६१ ॥ पापकपके अतननिपानि यत अहो
नवलातकनानि शास्त्रो मूहदचत्रिहत्तमानश्रिपुपत्रिमुननि असाषा ॥ ६२ ॥ हानतु नृपतुलकननग्यः वर्धुतु लभ
हानतु नृपन ॥ निथिकमानगतहिनधुषाश्रुजितरुकि वसर्वयिलाक ॥ ६३ ॥ श्रिपुसगच्छानि वाधि कुमदुःखत्वे निधि
पनि सत्वहिनायः वृधिय वाधिपवर्धयिचक्रं षषमिपा नृसेन्यकसर्व ॥ ६४ ॥ या लूमूहदचत्रिपुनिधनं धनयि वाच
यिदगयिगावा वृधिविज्ञाननिया इव विपाकधिविधि ॥ षमकाज्जननथ ॥ ६५ ॥ मरुगीनिधयथा नतु सूनरसा च समकल

प्रम क स्मि नमपरागवा नापी वना कि नग्ग ल स्र हगमन पा नन कप वगसिख नसना ना नत्त वृत्त सहस्रसमा धिव व कि स्त
जाम्बून व सर्व र्त्त काये नागसा ॥ ना ना नत्त मय विमा नरु मिपदग विह निस्मा ॥ अ न के श्च द व नाग यद्ग स नग वृत्त कि न
महा नग म न्णा म न्णा का नि त्रिय न ग न सह मे ४ सा र्ध यद्ग प न्ना गवान् पू न स्त न स्र ग म न्द्र क ना मा नि ४ ५ जि ना
अर्चि ना अ प चा यि ना य नि वृत्त धर्म द म य नि स्मा ॥ आ दी क ल्या न म ध क ल्या न प र्य वसा न क ल्या न स र्थ स व ज न क व लं य
नि र्त्त पा न गु र्द व श च र्य संप्र का नि स्मा ॥ अ थ र व ल व मा या द ना ४ आ र्या व ला कि न ग न स्तु न व कि स्मा ॥ ह र ग व र्त्त ४
कि न क न नि यं ४ अ प नि हि न ल न ४ अ न्ना प स र्थ प त्रि कि न र व स मा ग न स म व ह्ना न म वि मू क वि ह स वि मू क प ह्ना
४ अ ग न या म हा ना ग सर्व व ना व सि प न म पा न मि ना प्र प त्रि र्त्त पू र्त्त ह्ना न स र्त्त ४ उ नि र्त्त व का ना न ४ प न हि न
य त्त्त ४ म हा क न्ना व द ह्द य ४ प न्ना प न म स ल व त्त्त ४ सू व प द ४ सू र्त्त ह प स र्त्त य सा अ न क स लो ह न ४ ॥ कु ग ल ह न
प नि ह्त्त ४ सू ग ना त्म ४ यि क व न क वां ध व ४ ॥ वि ग न ला ग म वि ग न द्ध ण वि ग न मा हा वि म स प हि न ॥ अ वि ध पा न ग ४ ५

धनसि
६६

उरिहृष्टा फः ना लमधपनिहृल ४ द्वादिग लहापुनखत्रकनधन ४ अगाथन व ४ ना लहना गभ ४ (गंतां ॥ सर्व ॥ वर्क
कुयविपातु नवगु नमूर्ति ननाग कगः वा न नजनाधन ४ अगाथापापाग धमूर्दी ४ ॥ अमिता हजिनपु क नमिह
लिनवा मपु ४ काच नादिपठि न (गंता ४ ॥ विपुन नगा ४ तिहृदिन लाषी ४ ५ पुन हिनमनिक यरूप विगार्दक
य ४ ॥ दग हृमि पुमिहृ न ४ दग पनमि ना पुन ४ ॥ अष ४ ५ सिल ४ ॥ अचि न्दगील सिंहविका ननम ४ ५ सिंह विकमम ४ गंतिन नाद
४ सिंह ना ४ विग नाद ४ कामलत लिन गभ ४ ५ वरु नग नि ४ दनि गावह सू ना हि ४ ग मि न ना हि ४ अच च न्दाल क ते निनक ४
विषि लना न विवाका पुन म्वा ४ ५ नि न न ह ४ ५ उगु गभ नासिक ४ क न सा का ति गी व ४ दि र्घी गभ पुन न्द सि म्द र्गार्सन ख ४ ५ जाल
वन र्द हृ सु ४ चका लका न पा नि ४ क पा नि धि हा ल नि ह ४ ५ ५ अ पु वि ग गभ न ४ व अ ग मि न ख न ४ ५ द य न म पि य ग म ४ ५
म नि यो द ग ति यो ४ ५ गाम् नाद काच न व ४ ५ म नि य के म नो क क म ल क न ४ क म ना ह व ४ क म ल स म्द ४ क म ना सु न ४ क प न
मृख ४ क म ल ह ४ क म ल न्द ग ४ ५ ५ ५ जि न धन ४ विद ४ ५ ५ ५ अ धन ४ प अ धन ४ पु वि न धन ४ पूर्वा हि ना सि ४ अ मि

६६

नवर्वविंशति कल्पसूदृगं कल्पसूदृगं सर्वसत्त्वधनिकं न सर्वव्याधिपसंमनःपीनिकलं सर्वसत्त्वपञ्चिषाः र्वधनिर्मानि
नकायचसूगानवगधनः के कलामकूपसर्वसत्त्वसमानं नृगपूषः नृगकृषः नृगकननियः नृगकृगलः नृगनि-
श्रयः उत्तमविर्यः संसानतिष्ठाकः सधर्मदावनाद्यातिषकः नानानृगनचनः ॥ नृगनिकृत्तः नृगजयवकानयवकास्मृतिव-
क्तः महाविकृतः नृगनवक्तः मेघियवक्तः गिनवक्तः दयावक्तः गानवक्तः ॥ स्फुटिवक्तः लघवक्तः नृगवक्तः अर्थवक्तः अर्थवक्तः
दाना नृगसंस्यानाक्ताना नृगधर्माः संवक्ताना नृगलाकानां सास्त्रानां यनिपूषीचक्षुः मत्तुलमूर्खः सर्वत्र त्वषचिगां निमेषः
वगः सर्वपूर्वसूयी सूर्यासहस्रातिन कनगाः नृचित्रगतिनः वक्त्रादिनमस्तुतः ॥ ॥ यः कश्चिदाप्यावलाकि-
नृगवल्गनामाक्षिरुनृगनतम्बुजायहानक्ष्मणः ॥ तस्य पक्षे नृगार्थितिकर्मावतानि पत्रिज्यंगकुकिः ॥ सर्वमत्तुलपविष्ट-
रुवन्ति ॥ सर्वमन्तुनितस्य सिद्धिः ॥ अनन्तकल्पकेटिनिपूतगनसहस्रातिरगतिनृगानां अविचिनपविगतिः ॥ तस्य च
मन्तनकानसमयसूखावस्था लोकक्षुब्धपयधने ॥ गान्ती गान्ती अर्मावलाकि नृगवन्ति नृगवन्ति ॥ सनृगपनम

त्रमिगापूज्यो॥ॐ सर्ववित्सर्वपापविश्रामधनिहा नावत्ताकिनीपुनिधिपानमितापूजंकींइंरु॥सर्ववित्सर्वपायगन्धना
पायपात्रमिगापूज्य॥ॐ सर्ववित्सर्वपापविश्रामधनिहा नावत्ताकिनीपुनिधिपानमितापूजंकींइंरु॥सर्ववित्सर्वपायगन्धना
सर्वपायगन्धमाचनिर्हंरु॥ॐ सर्ववित्सर्वपायगन्धमाचनिर्हंरु॥ॐ सर्ववित्सर्वपायगन्धमाचनिर्हंरु॥ॐ सर्ववित्सर्वपायगन्धमाचनिर्हंरु॥
सर्वपायगन्धमाचनिर्हंरु॥ॐ सर्ववित्सर्वपायगन्धमाचनिर्हंरु॥ॐ सर्ववित्सर्वपायगन्धमाचनिर्हंरु॥ॐ सर्ववित्सर्वपायगन्धमाचनिर्हंरु॥
चनेहं॥ॐ हानकेतुहानावर्हिहं॥ॐ अमर अमरपुत्र अमितवनिहं॥ॐ चक्रक॥किनीस्वाहा॥ॐ ह्रदवनिह्रदननस्वा
हा॥ॐ हाननिमहाकालनिस्वाहा॥ॐ वज्रगर्हं॥ॐ अजयकर्मवत्रनविश्रामधनिस्वाहा॥ॐ निलनकटस्वाहा॥ॐ समनह्रद
हंरु॥ॐ ह्रदवज्रसमयहं॥ॐ वज्रकालाननाकीहं॥ॐ अहिषिषिउमाहंरु॥ॐ वज्रकालाननकीहं॥ॐ
वज्राननादहयचमथनजहंरु॥ॐ वज्रहृदयवत्रग॥ॐ सर्वानस्वाहा॥ॐ वज्रहं॥ॐ वज्रग॥ॐ वज्रपा
जकी॥ॐ वज्रपुत्रकापटमिनिच॥ॐ श्रीवज्रकाटिभूटमट॥ॐ वज्रसिनभूटमट॥ॐ वज्रकर्महं॥ॐ वज्रवन्धव॥ॐ व

अनंती
२०

अचरुहं॥ ॐ सर्वविभू कायका कचिरूप नाम न वज्रवधन कना मि॥ ॐ सर्वत आगत पूजा प ह्ना नाया न मान नित्या
नयामि॥ सवन आगत वज्रसत्त अहिषि वाधि छिन्नसामा॥ ॐ सर्वविभू सर्वत आगत वज्र कर्मा या न माने नित्या गया
मि ॐ सर्वत आगत वज्र कर्मा कू नू यामा॥ ॐ सर्वविभू एषा पूजा मद्य समूह रुत नं समय हं ॐ सर्ववित्ते वृध पूजा मद्य स
मूह रुत नं समय हं॥ ॐ सर्वविभू आला क पूजा मद्य समूह रुत नं समय हं॥ ॐ सर्वविभू ग म पूजा मद्य समूह रुत नं
समय हं॥ ॐ सर्वविभू वा॥ अ म पूजा मद्य समूह रुत नं समय हं॥ ॐ सर्वविभू पूजा हा ग्वा ना म्मा व नि कि ता सी म्मा नू ह
न पूजा मद्य समूह रुत नं समय हं॥ ॐ सर्वविभू वस्मान का न पूजा मद्य समूह रुत नं समय हं॥ ॐ सर्वविभू वज्र मद्य स
मूह रुत नं समय हं॥ ॐ सर्वविभू महा वज्र नू ह व दान पात्र मिता पूजा मद्य समूह रुत नं समय हं॥ ॐ सर्वविभू अ नू
ह न पूजा मद्य समूह रुत नं समय हं हं॥ ॐ महा वा अंग दान गि ने पात्र मिता पूजा मद्य समूह रुत नं समय हं
ॐ सर्वविभू नू ह न महा वज्र रु कि पात्र मिता पूजा मद्य समूह रुत नं समय हं॥ ॐ सर्वविभू संसान प नि वै ह्ना मान नू ह

ॐ०

नमो हविर्ग्यापनमिना पूजामद्य समुद्र रु लनं समयं ॥ ॐ सर्ववित् नरु न सोख विहान ध्यान पात्रमिना पूजामद्य समुद्र रु लनं
समयं ॥ सर्वविद नरु ना कृग च्छेदमहा प्रहा पात्रमिना पूजामद्य समुद्र रु न न समयं ॥ ॐ सर्ववित् सर्वपायग न्धना स
निवज्जगत् न्धपात्रमिना पूजामद्य समुद्र रु लनं समयं ॥ ॐ सर्ववित् द काय नि द्यो न न पूजामद्य समुद्र रु लनं समयं
यं ॥ ॐ सर्ववित् वा क निया क न पूजामद्य समुद्र रु लनं समयं ॥ ॐ सर्ववित् चि रु नि यो क या मि पू जामद्य समुद्र रु ल
नं समयं ॥ ॐ सर्ववित् तिष्ठ वज्र द टा म रु व ह द य म प्र य च्छे वि धि त सर्व सि धि कै र्दं रु रु रु रु रु ॥ ॐ वं मु षि व ॥ ॐ स
र्ववित् नृ रु र्दं रु र्दं ॥ ॐ सर्ववित् आ ध र् सर्व पा प न प न यं ॥ सर्ववित् सर्व पा प वि ञ्म ध नि र्दं रु र्दं ॥ ॐ सर्ववित् सर्व व
न वि ञ्म ध न म् रु र्दं रु र्दं ॥ ॐ म न र् महा म न य सा हा ॥ ॐ न मा रु ग व ते सर्व र्ज नि ष त्रि ञ्म ध न ना जा य न था ग ना
या रु त स म्म क्क वृ द्धा य ॥ न य था ॥ ॐ आ ध र् सर्व पा प वि ञ्म ध न गु ढ वि सु द्ध सर्व क र्मा वि न न वी ष ध न सा हा ॥ ॐ सर्ववित्
वज्र चक्र ॥ ॐ समयं ॥ ॐ पु नि च्छे व ज्र ॥ ॐ पु नि च्छे व मि ति महा व ने ति ॥ ॐ वज्र स त्त्व मय क य व रु द्धा य नि स

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

२९

[illegible]

वज्रकर्म्मकृता हवं॥ अ० ज्ञानयुक्ता कपिनः २ हह हि विना निविनूपा न स्याय माय स्वाहा॥ सर्वरुत लय कन कन स्वाहा ह ह सि
विना निविपात्राय स्वाहा॥ सु सखा मधु व स्वाहा॥ कं कू व त्राय स्वाहा॥ कं कू रं रं शिव स्वाहा॥ उ र्द्व ब म ॥ स्वाहा॥ कं सूर्याय
ग्रहाधिपय स्वाहा॥ च त्राय न रूपाधिप तय स्वाहा॥ अ० धा पृथिवी स्वाहा॥ कं अमृत त्व ४ स्वाहा॥ कं नागा त्व ४ स्वाहा॥ कं सर्वथा
गचिरु मृत्पादयामि समुद्र रु तनं समय ॥ असमाचन समित्तान धर्मिन ४ कनू ॥ त्म का ४ जगत् इव हानय ४ असमन्त सर्व
न सिद्धि दायिन ॥ असमाच समवे त्राय धर्मि ४ न गग ॥ समापत नान विद्यत ॥ गुत् कन ॥ कनिक ष्य सिनिका रू द स त्व ४ पु व न
सिद्धि दायकं॥ विगतो पु न पू असम क सिद्धि पू गत नाम वै री नं व गत धिना पु सिद्धि वल नित्राध ४ धर्मि ना जगता र्थ सा
धनं यत्रा ४ समिहिनिसुत न वित्रा च निमहा रू पा त्म नानि त्रा धर्मा नानि त्रा धा त्म क नू नाः चात्रि काय नाग ॥ वज्र गति ला क व न
न सिद्धि दायका ४ अमिता भू न पू समा फित मता ४ सु गत गत ष्य पि अदा म धर्मा ना नि समया ग्र सिद्धि व न दो द कु म ॥ व न दान ना
सु गति गता सदा सक व ना नि लो क व न सिद्धि दायका सु गता नि जगति ना ना वना ॥ कं ॥ अधने २ कं क कं निनि ॥ कं न त्व कं

धननि
२३

असाय ॥ ॐ अमृत २ ॐ पूष २ महापूष ॐ सर्वपापहरनवर्गहृद ॥ ॐ सर्वपापविशमधनवर्गहृद ॥ ॐ सर्वकर्मव
ननिहृद ॥ ॐ सुवीनासनिमवननिहृद ॥ ॐ सर्वद्विगमधमवननानिमहृद ॥ ॐ इतरधक
हनश्चलनोनिहृद ॥ ॐ सनश्चसनावननानिमहृद ॥ ॐ हनश्चविननानिमहृद ॥ ॐ सवावननानिमहृद
॥ ॐ हनश्चसवावननाभीहृद ॥ ॐ ८८ २ सवावलनानिमहृद ॥ ॐ किन्द २ सवावलनानिमहृद ॥ ॐ दह २ सवावन
नानिमहृद ॥ ॐ दह २ सर्वनलकगतिहृद ॥ ॐ पच २ पुनगगंतुहृद ॥ ॐ मथ २ सर्वनिर्यज्जतिनयहृद ॥ ॐ
सर्वपापविशमधनिनिधर्म २ धूपय २ हृद ॥ ॐ सर्वइगतिविशमधनिपुष्पविलाकिनेहृद ॥ ॐ सर्वपापविशम
धनिहृद ॥ ॐ सर्वपापगतिनागनगन्धहृद ॥ ॐ ननकगतिगि कर्षनिहृद ॥ ॐ सर्वननकगतिगि
निहृद ॥ ॐ सर्वपापविशमधनिहृद ॥ ॐ सर्वपापगतिगहनविनासनिहृद ॥ ॐ ४४ ४४ वहा ॥ ॐ वननहिमहाका
नृत्तिकोयह ॥ ॐ पूष २ महापूष ॐ अपनिमित्तपूष २ अपनिमित्तपूष हानसं हानापचिमापका निमित्त

ॐ ३

हा ॐ अमन् २ अमन् ॥ हव अमितविक्रान्तमिनि सर्वकृत् यं कनि स्वाहा ॥ ॐ कं कनि २ नाचनि २ विनाचनि २ सर्वकर्म
वत्तनानि सर्वसत्त्वानाच स्वाहा ॥ ॐ नत्त २ महानत्त नत्त सत्त वे नत्त किन ॥ नत्त माना विष्ठ ॥ अद्य २ सर्वपाप नष्ट ॥ अ
माद्यामपुतिहनहनसर्वावन ॥ विभागनिहन २ इन्द्र ॥ ग ४ इन्द्र ॥ एगव न वज्रय ३ इन्द्रिसमय ॥ वज्रसमय इन्द्र ॥ ॐ पुनि
वज्र इन्द्र ॥ ॐ वज्रसमय इन्द्र ॥ ॐ वज्रसाहासाद्याय समय इन्द्र ॥ ॐ वज्रदग्धहा ४ ॥ ॐ वज्र अरिषिके आशा ॥ नत्ताहिषिके गौ ॥ पञ्चम
जाहिषिके ही ४ ॐ वज्रमूडाहिषिके अ ४ ॥ पञ्चमूडाहिषिके की ॥ कर्ममूडाहिषिके अ ४ ॥ वजाहिषिके इन्द्र ॥ गौकां अ ४ ॥ ॐ वज्रक
र्महिषिके अ ४ ॥ ॐ वज्रचक्राहिषिके गौ ॥ ॐ वज्रचक्राधिपनिस्त्रिमसिहिषिके ॥ ॐ ॐ ॐ इन्द्र गौकां अ ४ ॥ ॐ वज्रधातुवनी नृहि
षिके इन्द्र ॥ ॐ नत्त क्षान्ति ॥ हिषिके ॥ ॐ वज्रनथागतानि हिषिके ॐ ॥ ॐ नत्त क्षान्ति ॥ हिषिके गौ ॥ ॐ पञ्चक्षान्ति ॥ हिषिके की ॥ ॐ
कर्मक्षान्ति ॥ हिषिके अ ४ ॥ ॐ सर्वनथागतानि हिषिके इन्द्र ॥ ॐ वज्रगुह्य हिषिके इन्द्र ॥ ॐ नत्तगुह्य हिषिके अ ४ ॥ अ ४ ॥ प्रह्लाद
हिषिके इन्द्र ॥ ॐ समायाग हिषिके इन्द्र ॥ ॐ वजाहिषिके इन्द्र ॥ ॐ वे ४ ॐ ध ४ ॐ वि ४ ॐ ज ॐ वज्रसमय इन्द्र ॥ ॐ व ४ ॐ पुनि

३५

[illegible]

五

[illegible]

21

॥ ॐ नमोस्तुतं कावगाय ॥ ब्रह्मेहं बहिराधिमानिहोति यत् ॥ नमः ॥

॥ ॐ नमो नमो नमो ॥ नमो सर्वव्यापी सत्त्व ॥ नमो ब्रह्महृदयपूजाय नमो ॥ सफल ॥

॥ ॐ नमो जिह्वा लीन राजाय नमः ॥ गता या ह कस्य क्व

॥ ॐ नमो हगवते सर्वपापहर तव शायनं तथा गता मां हं न सम्यक् कृतं यथा तथ

九

[illegible]

٧٤

[illegible]

२दह२पच२मथ२सर्ववृक्षानां वलनासय२चिन्द२हिन्द२तुत्र२विष्ठापय२सर्वसकृत् ॥ सर्वनामसादिनामनूषामनूषवल
वन्ध२संकाचनिकाचलिम्बागय२गङ्गाय२रुद्र२हन२सर्वसुखं सर्वमनुसर्वजगत्सर्वनामसादिनामनूषामनूषवल
सर्वपदवापसंगमपायास्तथा॥ आर्यः अमिता नामधेयः श्रीसमाफ॥ ॥ ॐ नमो नलगयाय ॥ ॐ नमो वृद्धाय म-
कात्रिकाय तनति कृतहृदयाय ॥ ॐ आ॥ सुगतवज्र उवाहा॥ स्वाहा॥ आर्यः गुणवज्र नामधेयः श्रीसमाफ॥ ॥ ॐ नमो
लगवतरेषमकेयूर्यपुत्राजयतथागतयाहं समस्तवृद्धाय ॥ नमः ॥ ॐ लेश्वर २ महालेश्वर सूरेश्वर स्वाहा॥ ॥
आर्यः लेश्वरनामधेयः श्रीसमाफ॥ ॥ ॐ मनिप २ ॥ ॐ नमो लगवत आर्यः पत्रमगुनवेमहाकात्रिकाय ॥
कमूनयेन थागतयाहं समस्तवृद्धाय ॥ नमः ॥ ॐ मून २ महामूनय स्वाहा॥ आर्यः गङ्गाकमुनिनामधेयः श्रीसमाफ॥
॥ ॐ नमः ॥ सफसफिनासमस्तवृद्धकदिनां ॥ नमः ॥ चने वृत्रचन्द्र स्वाहा॥ आर्यः वृत्रनामधेयः श्रीसमाफ॥
॥ ॐ नमो नलगयाय ॥ ॐ नमो समस्तवृक्षानां ॥ ॐ ध्यामकयुतः जय २ विजय २ जयवाहिनि । सर्वलक्षणपसकंति

ॐ नमः सर्वरूपस्य साहा ॥ सर्वसत्त्वा नाच सर्वरूपस्य साहा ॥ सहायमां देवन्दा ॥ ध्याय कयूतनामधनशी अपनाजिगननकः
चिन्तु ॥ अत्रिकल्पनाकल्पवागीग्रहस्य ४ विवाहस्य ४ सर्वरूपस्य ४ विषयि ॥ ध्याय कथा गंतका धनयित्यां मा नृपस्य सा
उरुचूठक ॥ वात्रिषिक्तधनयत्सर्वमिह कलादिभ्यु नृपाय धनयेयु नृपा वा ॥ नृनित्राकनाति ॥ पत्रसेन्यययतिपाप
कासीलक्षि नामचनिपापका ॥ १०८ दमवाचरुहगवानाह मनासु चक्रादिदवाहिरुवा ॥ वाधिसत्त्वा महामत्वा सात्वसर्वविनिप
षत्सदव ४ मानूषासूत्रगन्तुग ॥ धर्वाधनाकारुगवका ॥ लघिरुमत्पनन्दनिति ॥ आर्यध्यायकयूतनामधनसिहमाफ ॥
॥ ॐ नमः ११ श्रीमहासंखनाय ॥ पूर्ववत्तु ३ तिगुत्यगतननरुका नाहवयागी ॥ गतनायकं ॥ ऐनवकानि नाद्रिनुचकहि
कसूर्याग्निपतित्रिगु ॥ वक्तुमहा कायकृष्णार्धहनिगार्धकखष्टनिगुत्तासु ससफादगति नाचनगनाम कूतधनविविधना
४ वडकं महाडकु कला नागधसंवाधस ४ सदा ४ ॥ निनापिगानकहनिनकमवचसंवा तुं ४ गसुमितामहा ॥ नोडा तसहास
च हनेववावक हिष ॥ सर्वावसेवा नवा ॥ अश्विनयथाकर्म ॥ ५ विवमदिहसु केवजासि कूतद्रिगु सं ॥ दिसु नु यथाकर्म

धनसि
७८

पशु कर्हि वानचप्रिगु लहिरिन नदमूद नचकु मनुकी कागदहिरि पात कंगव का हान कदलिकामपि क कागथा ॥ का
कपशु कविकान अग्नि क तुषुषवम ॥ लंगु कादय अवि नाग हा पा निरु रूस अ न नाहू निगदं व हती उतुजन कालि
का कव न्धजा ला नेल केले व तु रूप तु कु माय ॥ वाम द्य १७ र द नं मूर्धन वान क पात कं ॥ धनूष द्वा प्र पूरु कं तु पि कानि न
नर्जनि न्ध पृ पू स मा ला सि ख ना नि ग म्भ न धे नि का ॥ हा क रु कां ड च र्म के ल व म क व गालि का वा द ना वि ति का ॥ कां कि
मया रु सि न का कं ॥ कं कालि का नि के म य चू के क मु न व हि क ग नि च न की ल कं च वा ज पू न क पू न कं ॥ ग वि तु का च व स
के म य व रु कु ग रु था ॥ ए व कु म ना वि षू या द स पि न ना रु का पं शू मू द क ग र न सं ॥ ध ना ज प न ह न सं ॥ सु न मू तु मा लि
का चे व न पू न ना म न ग वा द्य च र्मा नि व स ना ना मा व नि च य म मा ॥ न स्या प्र ना म हा व वि व ज वा ना हि ना द म्भ १६ दि नु जां स र्वा
क हि च वा म क पा न रु था ना व ज द्य भू ला र ग व ला लि ग म हा ना ग्म न ना मि नि ए क व क मू के क ग के ना सु न क व ली का ॥
मू तु मा ला सि ना ग वा सं ग ल ना ला ला सि ल सि क वा न मा ला के दि व ग न्ध मू ला ना नि ना पू न क पू ना दि व ग म्ना म रु पि नि ष या

७८

आहूतः ॥ नमोऽस्तुते ॥ तिनत्रापत्त्यादिसमयादिफिमहाने जपनमञ्जनि ॥ पुष्पायगुखदशे सर्वसन्निधिविग्रहाहू
कहले अविस्मृतकविहावयत् ॥ एवं रूपं पुमां विजहूकनु विहावयत् ॥ सर्वसत्तासमायुक्तामाह सिद्धिचदहिमे ॥
नकाकायमनु ॥ ॐ आः कायवाक्यिहवज्रहं ॥ ॐ वज्रवात्राहिमहादविहं ॥ मूलमनु ॥ ॐ निसहासं वलहद
यसमाफ ॥ ॥ ॐ नमः श्रीच पुमहावातनाय ॥ श्रीमत्पुत्रविनाय सर्वसत्त्वपकति ॥ नमाविश्रापसह
त्रं कायप्रियकमूकयंकल ॥ ॥ दवखलागसर्वनापायलावनायेन वामपुष्पां लोवनं नदीनिगकपासन ॥ सफपा
नालपां नोमध्वामाभुदगिन ॥ गकवम् ॥ पुपात्रत्वा नमः ॥ गदगिनहमोतक ॥ लाचविनष्टा वामजान
व ॥ मातपहान नसस्त्र नमवेपाकायेन नमः ॥ मञ्जयनजवनाचनमिह माहं धका नोदय ॥ पुष्पायविहावलाक
नवने वकसमूदीपितं कलाचदसमायमाय पुत्रव ॥ ॥ गवजसत्त्वसय ॥ स्वायं नत्सखसाधनाय जकवकेपुला
निहूति नकास कुम्भ ॥ ॥ विश्वलाजदि नसम ॥ गनहीं कानवियां एवद ॥ ॥ हि ॥ पनपि ॥ गणधर्म ॥ नदुहं सप

[illegible]

شرف

नाग्य २७ काहिकं घाहिकं एहिकं चाउर्हिहिकं सर्वज्ञानसन्निपादनरूपज्ञानवातिकपितिकं (२७) कं सन्निपादनकं मा-
साधर्म्यसिकसावत्सत्रिकं ॥ २७ वं सर्वज्ञानात् नाग्य २ इत्या श्रुत्य वज्ररूपमसर्वसत्त्वा नां च शक्तिं कुरु २ स्याहा ॥ अ-
यज्जिह्वरूपसर्वनागनामधनसिमाफला ॥ ॥ ॐ नमो भगवते श्रीगणेशाय नमः ॥ नमो ॥ ॐ नमो
गवति वज्रवा नाहि आर्यपनाजिह्वे साकमात्रमहावेद्यसर्वज्ञानरूपमहावज्रवज्रासनं अजितं अपनाजितवस्य क-
त्रयप्रशमनिविषयानिषावनिष्काधनिकत्वातिशयसंज्ञासन्निपात्रिणीसूय एव नियन्त्रयविनाशकृतिरु-
क्तिसाहसिवज्रवा नाहि महायोगीनिका मन्त्रिस्वरूपेति ॥ नमो ॥ ॐ २ हन २ पागमनस्त्रिस्त्रिनिधन २ वज्रह-
स्त ॥ अथ २ स्वज्ञानकपात्रधनसिमात्रमहापात्रविन साधनत्रयसिमा लाग्य २ कथं धनसिमा सुकृत २ यानां न सर्वसत्त्वा ना-
सर्वपापसत्त्वा ना सर्वपापनामासत्त्वा दनिकाटमूहिदृष्टकलातिनिमहमूडा ॥ श्रीहनुकसायु महिषि महसिनि-
सहस्रबाहवगनगहमा निवृत्तिननगसा कला मूहिपिंगसनाचनवज्रगतिन वस्य निमिसि २ निमिसि २ ह

स्त्री स्त्रीति धृन् २ वज्रहस्त आषय २ खडां ऊं क पात्र धा जति ॥ ॐ नमः ४ नेनात्माय इहं हं हं ॥ ॐ नमः ४ वचु नाद विथ इहं हं हं ॥ ॐ नमः ४
अय वा जी ग्वनिय इहं हं हं ॥ ॐ नमः ४ महे नु नाथ स्वनिय इहं हं हं ॥ ॐ नमः ४ सी व नू पाय इहं हं हं ॥ ॐ नमः ४ गी ति नू पाय इहं हं हं ॥
॥ ॐ नमः ४ एग व नि द विय इहं हं हं ॥ ॐ नमः ४ महा ह्ये न व च चा य ४ महा पि सि क मां स नि मा नू खां न पा क सा नि धं न न तिल मा
सा ग्र कि न ध न नि सं सृ नि स मू ह न २ पा ना न सर्व महा पु वा ना महा मा स चू द नि कू ट ति मूर्त्ति ४ इ ष्ट क ला ति नि महा मू द
आ ह नू क स्या म हि षी स ह्म वा ह व सं ह्म सा स न मि नि गे ह २ इ २ ख २ ध २ धृ २ सू २ अ ह्म न महा या गि नि प ठि न सि द्धि ॐ २ ध २ य २
य २ ह २ ह २ हि म २ ह स २ वि न हा २ हां हं २ के सा क वि ना ग ति ग न स ह्म का टि न थ ग न प नि वा हं हं हं ॥ सि ह नू प्य ख ४ ग ज न
या ग ४ कू ला कां द ल म हा स मू द म ष न य ग २ इ हं हं हं वि ना द ए हं हं हं ॥ महा व ह्म मा ह वि या ण श्व ति त्वं सर्व ज की ति ना क ना
व न्द नि सर्व सर्व प त्य क ति ति इ हं हं ॥ ह न या ग नि महा वि न प न म वि ज य सि द्धि या गः गुरु श्व नि ह हं हं हं स्वा हा ॥ २० ति द्द
य १ म नू १ ॥ ए ग व नि दि ग म्ब ना मू कू कु आ ष पा द वि ना नै क न रा स मू दी ना म ति ना म् ॥ नि खि न ह व य ह न सि द्धि स्वा धि

भारति
८९

तस्मिन्मिदं जिनं ॥ यिनेनात्माहिताम् ॥ अथ ॥ गार्गवनिनां गुह्यविनां संदवहिनां महर्षिनां महामहामुह्यमाया
कृष्णनि ॥ ते सा क हननखोपे सा संकृतं पुनश्च ॥ यमिष्यमाता माहमाया हि विष्णुता शक्तौ कता सनि विद्या प्रपद्यं ॥ अ
थ ॥ यथा हि हननमात्रं न विष्णुता गंधर्व ॥ सर्वद्वग श्वर्गना नयश्च सून मा नूत्वा नू ॥ विद्याधनिपि गचाना ॥ नाकृशा
गनू उकिन्न जान ॥ वसमानयति ह नानि जननस्य सजानि च ॥ महाविष्य कनि विद्या ॥ ४७ ॥ जालक लिख्य ॥ माह न स्य
न ॥ श्रेष्ठ विद्वत्पौ च दनादिकं ॥ वग्धा कर्ष ॥ अस्म न स्य ॥ अने कविध को तु ह्यलक्ष्य मिता कू नूतं विष्णु वाच सिद्धि च साधक ॥ न
अप न वृत्त तस्या नाय वा सा विधिय न ॥ अ कृ गत ह्य सिद्धि द विसृज्य वदामहे ॥ मनु न वमहामा या दि यो न ज नू प कि लि ॥
॥ अने माह गव न शुभ्र ॥ अ निद वगा ये ॥ वा ना वृत्त उ त्प न्ने ॥ मह सिद्ध कृ य जा नि श्व रू प मह सिद्ध ॥ ने नात्मा द विस
न्मान रिष्य क वजा द क द ग म नु पि वगा जा नि यु य अ वृत्त न विमू क पू ॥ वा ना च सं जा यते ॥ अ ने नात्मा ॥ न ॥ अ क मू र्ध म
कृ क ग म पी न द्र व रू र्वा म र व ह्य गी द हि न पा यं र व त्वा ग वि श्वि पा न्य र्थ कृ न र क क म व ॥ प अ न द्वा त्रि द व व वा ना हा

८९

[illegible][illegible]

[illegible]

धननी
८३

धनं नाथप्रपूजयति मवसमानता ॥ हनानि च कृपायानि तस्मिन् च रूपेण कथं ॥ रूपं त्वयि वदुवता नयग्रहा निपात्रिना ॥ व
दनियं विना नास्ति वेदना नातिनास्ती का ॥ न च वेद्यस्य रावन नास्ति त्यस्मिन् न च ॥ संहर्षयान्न न नृपां मुखं ददुर्न वदुर्न
॥ जन्मोऽभिगमा रावस्तथा कुरुवेत वादिनि ॥ कर्तुं स्वकं प्रकर्म निस्तया कृत्वा वहा न न ॥ एतस्य नापुत्रिका सुसिद्धिस्तु
मका मया ॥ न कर्तुं नित्यं कास्ति पूर्य पूर्य पुनितं ॥ जन्म निस्तान न र्यागपा कवा च स न स्या कं वेव हान न ॥ एतस्य नापु
त्रिका सुसिद्धिस्तु हिमना मया ॥ न केनास्ति न लोकास्ति पूर्य पूर्य पदेत्येव नित्यं न क्वा कं वा च स न स्या ॥ ज
रूपयानं नाहं विहृ न न विनान न ॥ न स्यात्स रावो न हानं यत्नं सूचिवा न वन ॥ लब्ध लज्जन म न च न स्यात्स म न ज न
नया न स्या वाम नास्ति विस्मयं कं धि नंत्वया ॥ लब्ध लज्जन विनिमू को वा गु वा दा हा न वेर्जितं ॥ गभना गभन जगदृष्टं गवका
हान च रूपं न संस्पृष्टं न रावा नापाहं सदन्निह ॥ न स्वगतापि पत्रा न द्वा प्यो जाय न कथं ॥ रावनाथा न नं नासा पा न र्थं क नं म
नं ॥ नृथा न न ह व न्नि नं नापि नाप्या न थ क न न ॥ एक स्त्रिहृष राव स विना स मू प पद्य न ॥ पृथक् न हिला व स विना स मू प पद्य

८३

[illegible]

धन ॥
८८

॥ लाकारि कसुव नाममा प्रसमाफ ॥ १५ ॥ ॐ नमो गीवज्यागि ॥ ॥ एवं मया ग्रामे कसि सुमय रज वान्तरु
उवा वास काये परिगग ॥ न लसुपनि सि न सफ नत्र पविरुगै क चिरु नत्र युह म हा म भुल मायु विह न तिस्म ॥
नृ सखि यन वाधिस त्वदव नागजसु सन गत्र ग भर्वा सुन ग न न सा द ॥ न दुख नृ र ग वान वाधिस त्वमा म नु यनः
स ॥ उऊ द्रु धय दूत पूय ० मा वज गो गी निसर्वज गधित ४ न त्सुख यन ॥ ये दं ॥ संसा नस गत्र ना य क सि इ ४ त्वा नृ वसा
मा हय सर्व स त्व सम काय नि स वि दि न न रू न ४ यथ म व थि त्वा किं क ना कारु न स मा हि सुखा नृ ह व सं र व ॥
॥ ॐ नमो ४ सु नायि ॥ ॥ न ना मान रय क नि सु न व नी संपूजि मा सर्वदाः लोको नाहि न को प्रिति जय
नि सा मा न व जा न रु नि ॥ का नृ ल्ध न स मा यू ना न व इ वि धा न सां न हि नृ न ना ने नायि न र ग हि यू ना न वि ए नि ज
गति लं र य धं सु नी ॥ १ ॥ ग्राम रुपा न ल के न मः ना ना धा उ वि ना जि नः ना ना ड म ल ना की ॥ न ना ना पं इ नि रु
दू जी न ॥ २ ॥ ना ना रु य रु ना य नः पृथ क जी न त स्व ने ॥ किं न ने म धू ना जि न नि सै नै ४ म न रु वा न त स रु ल ॥ ३ ॥

८८

सिद्धविद्याधरगर्तेश्वर्यनिनादिन॥मूनिहितीकनालोश्वसनतंसुनिषवित॥ ४ ॥वाधिसत्त्वगसिद्धानेदग
हमिथनेत्रपि॥आर्यनात्रादिहिदेवेविद्यात्राजसहस्रके॥ ५ ॥श्रीधनाजहोम्यस्यैहयग्रीवादिहिर्न॥सर्वस
त्वहिनायूकाहगवानवनाकिनं॥ ६ ॥विजहात्रकन॥श्रीमानपमगर्लसनस्थिन॥महानपसायूकामेया
चक्रययानिग॥ ७ ॥धर्मदिङ्गनस्यासमहन्नाश्वपर्वदि॥नतापविष्टमागमवजपातिमहावल॥ ८ ॥
पत्रमरूपयायूकापृक्तुवत्ताकिनं॥नक्तानागसिंहाश्रीजगवाद्योवसुकट॥ ९ ॥सादंयमीमूनसत्तामग्नः
संसात्रसागत्र॥वद्धा॥संसात्रके॥पासिनागद्वयनमासत्र॥ १० ॥मूचनयनसत्ताकनश्रुहिमहावग॥चवंमकेर्थ
रुगवानपहसन्नवनाकिन॥ ११ ॥ववलाकुदिस॥सर्वमेत्यास्तनयाहम॥द्विनकलमूदयपृथसन्नमठिका
१२ ॥गमवावमहापाह॥साधूमाधूमहागय॥नामानुग॥महालोग॥सर्वसत्त्वैकवत्सल॥ १३ ॥यानिसंकिन्त्यमन
आ॥समकेसधनश्वना॥आकालमूनिन॥सखायानिसखावनि॥ १४ ॥चवंमकेत्वाजगन्नाथ॥संग्रीमानवत्ताकि

५३ ॥ ७४ ॥ उवाच मधुना वा निवृत्तपानिषु स विनं ॥ १५ ॥ गच्छन्त्येकं नान्येनैव अमिताहस्यतायिनः ॥ पुत्रिष्वनवाम्
५४ ॥ ७५ ॥ स नाम माहुरा लोकं धेमान् ७४ ॥ १६ ॥ महाक नूनवापे नानासूक्तसंयुता ॥ उदितादिनसंकासः ७५ ॥ १७ ॥ उवाच
न पुनराह ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥
११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥
का कानसमुत्पत्तिः नानाह्यसंक्रुते ॥ समनश्च दवनामो निसत्त्वो नरु माह सदा ॥ २० ॥ नानमिषामहसत्त्वाना
हयमहानवान् ॥ नन नानातिमात्राकं गयेति मुनिपुंगवाः ॥ २१ ॥ कृताञ्जलिपूरा हत्वा नन स्यादत्र साधुमाः ॥ २२ ॥
कृतं तां संततिविश्रुतं ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥
॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥
आयना लक्षणजननं सर्वसत्त्वसूत्रवहं ॥ २६ ॥ लक्ष्मीशः पक्वैव सर्वसत्त्वविवर्द्धन ॥ मेघा मालम्बां सत्त्वानां ह किं ह्यम

८३

महामूने॥ २१ ॥ अवमुक्तार्थरगवान्पहसनवलाकिनश्च वलाकिदिगस्यार्वामित्यामूनथाद्यम्॥ २२ ॥ दक्षिणक-
नमद्वयप्रथमलक्ष्मणमतिरुतं तस्यैवमहापाहसाधुसाधुमहातपः॥ २३ ॥ नामानुगच्छन्महालग्नसर्वसंश्लेषकवत्सल॥ या-
निसंस्तुमनजाः समस्तसुधनेश्वराः॥ २४ ॥ सर्ववाधिविनिमूकाः सर्वैर्गर्भगुणान्विताः॥ अकालमृत्युनिनकाः स-
खाः स्यान्तिसखावन्ति॥ २५ ॥ कान्तहसप्रवक्रमिदं वसंधागच्छार्थम्॥ अनुमादतथाधर्महविषधंसूनिर्द्वाः॥
३० ॥ ॥ ॐ लाचनेः सुलाचनेः गानः गानाहव सर्वसत्त्वानुकंपि निसर्वसत्त्वान्वितिः सहस्रगुणः सहस्रमवः॥ ॐ न-
मो गवते ब्रह्मलोकब्रह्मलोकयमा सर्वसत्त्वान्वितिवर्द्धकं हृद् हृद् हृद् स्वाहा॥ ॥ ॐ शुद्धविशुद्धगुणधनः विश्वधनः सुगतात्म-
जः मेदी॥ हृदयः निर्मलः ॐ ग्लानमः ग्लानमरूपिः महापाहः प्रवनेः प्रवने हृषिके अपनाजितः महानोदिः विश्वत्रुपिमहावने-
ः कल्पागीमहातमो लोकधात्रि महायगः॥ सनसुतिविभनादिः प्रहृष्टी बृधिवर्द्धनिः ॥ निदः पृष्टिदः स्वाहा॥ ॥
काना कामरूपि निसर्वसत्त्वहिनायुगः॥ सर्वसत्त्वगुणयुक्ताः॥ सनः अरगतिवत्सला॥ २९ ॥ वागीश्वनिगीवा सुभासः

अनशा
८६

अमना विनिजया ॥ यस्तु पात्रमिनादवी आर्यकनामनामना ॥ ३२ ॥ इति विंशतिनि पृथ्वीयना ह्रीं प्रियंवदा ॥
चदाननामहा ॥ जेनी श्रुतिना पितवा संस ॥ ३३ ॥ सर्वसत्त्वस्वावहं महा माया महा श्रुता महा वनपत्रकुमर ॥
महा नोदी महा कठी इष्ट सत्त्वनि सुदनि ॥ ३४ ॥ यज्जंता ज्ञानरूपा च विजया कसनयता ॥ विद्युत्साली क्षमीषद्भी चकी
वपि यक्षयक्ष ॥ ३५ ॥ जंफुति संफुति कानिका ॥ तत्रा विनिजय चनी नरुति माहिनि जंता कोता नीडा विनि सुत ॥ ३६
॥ वाष्पनि वदमाता च गुरु कुरु क्षनिया सिनी ॥ मागला ज्ञाननि सीमा जगदवदमना जवा ॥ ३७ ॥ कपा सिनी महा व
जसंक्षसत्पापना जिता ॥ सार्थका हृदपाद धनसुमार्गप्रदगति ॥ ३८ ॥ वज्रदा ज्ञाननि ज्ञानि मूर्तिः मूर्तिरूपा सिन कि कुमा ॥ जवनी
मागला सिद्धि च त्रुति क्षमिता क्षुवा ॥ ३९ ॥ धन्या पुष्पा महा ला गगु र्गु ज्ञानियदर्थे र्गना ॥ हनान्त वा सिनि हि मा उग्र उग्र
महा नपा ॥ ४० ॥ सर्वार्थसाधनि रुडा निरुपा सर्वगुण नृणा ॥ नृणा जे न वपुष्पा श्रीमहा कश्च नात्मजनि ॥ ४१ ॥
नानानामगु ॥ सर्वसापूनि सि ॥ नामा कुरु नगन कं कि र्ति र्कुरु इह म ॥ ४२ ॥ नह सप्तमुरु नृगु श्रंदवा नामपि

८६

इहैर्लह ॥ सारागधरागधकनभंसर्वकिस्वीखनगन ॥ ६३ ॥ सर्ववाधिपसमनं सर्वसुखसुखावहं ॥ त्रिका संय ४५ ॥ १० ॥ वीमानुवि
 स्मानसमाहितं ॥ ६४ ॥ अधनोपिहिकानननागधीयमकाभूयात् ॥ इक्षितसुमुखं निरुदत्रिडाधनवानुवत् ॥ ६५ ॥ जयाहव
 महाप्राह ॥ मधविचनसंगय ॥ कधनाभूचनवत् ॥ ववहाननयोत्वेत् ॥ ६६ ॥ गत्रवापिगुणयांतिगंति ॥ अधदंतिनं ॥ गिगु
 मसंकटइर्लनाकारयसंकुन ॥ ६७ ॥ स्मन ॥ धवनामानि सर्वरयानपाहनि ॥ नाकानमस्यहवतिपाशानि विपुलयग ॥ ६८ ॥
 मानुषसुरुलंगमः नष्टिकसामहात्मनं ॥ यस्मिंदपात्रस्थायमानव ॥ कालिधिंयति ॥ ६९ ॥ सदियु कालमायूषानुशीयचत्तरेतः
 त्र ॥ वत्तरे ॥ सर्वसत्त्वानां सर्वसत्त्वहितं कलं ॥ ७० ॥ दवानागभसुथायकृष्णं धर्वकतपूतना ॥ पिग्भवा नास्मात्कृता माननापादतजस ॥
 ७१ ॥ अकि नांनानका ॥ दगा ॥ स्कंद ॥ मातामहायरा ॥ चायापस्मानका ॥ श्ववयचकारार्द्धकादय ॥ ७२ ॥ वनाजश्विचका ॥ श्वयाय
 यचानइष्टचतसं ॥ चायामपिनलंयनिकिंपूनसुसविग्रह ॥ ७३ ॥ इष्टसत्त्वनवाधनवाधयानाकमंतिन ॥ सवेधयगतेकापूजयेति
 श्ववदग ॥ ७४ ॥ गतिसमनात्वेदिमान् कूलीनेष्टपीयडनगन ॥ प्रीतिमांश्च महावाग्मी सर्वभामुविगनदश ॥ कल्याणमियसस्यविव

अत्र
८२

विचित्रा विहसितः॥ सकविनहि नावेद्यं यत्र यत्रोपपद्यते॥ अर्थना नारकात्रिकायाः नामाष्टाह नगनंदलखितं पत्रिस
माफः॥ ॥ कं नसा श्री नागये ॥ ३ ॥ बालाका लोकालासुप्रवतसूनगिनया नृचुगमनि ग्रीसंमत्समादनागानरिनः
चिंगात्रकवकलगति॥ हकापापितवार्थकनपूनमूकनागपरः॥ अलमाद्रुसा निष्ठापकनधनवनूतिकसूममुक्तिनत्यर्चय
मि॥ इत्येधइ॥ खवजो विनिपेतिमननूइरगः॥ कादिंग्रीकः॥ किं किमधं कनामित्यसकृदपि कनानमूवयथस्विन्नः॥ अलारः
पः॥ पनरुक्तनयनः॥ ववाभिचडाकूलकीः॥ माताकासानिवद्धपत्रगतिगमनः॥ अंशयः॥ पापहीनिनः॥ सर्वसिन्धुमाः॥ अनेन
नवकनः॥ निविश्वधंसरुगाः॥ तत्सधनरुहः॥ ग्रहनमूपगतनम्रादगस्यापवस्यः॥ सामर्थ्यैश्चदितियेसकलमगदयधकतिः
मागुविस्वः॥ इतिवाहं कथापिः॥ यत्रगतिभिगहाइ॥ कनंइर्विदग्धं॥ धिग्धिग्मां मत्तदलागंधिवसकलनृवापापनृकाभकालं॥ हवा
नंरुलककुहिमसकनसिनासिनरहिमचत्वाः॥ नलदीपयगाल्यादिपत्रमपिउहागहगकंदेनिदनाधिकृत्यापनाधरवति
सवनाकेकअदीन्॥ मातापिस्वनाहनाविनूवेरुगः॥ खेदमायानिपूतः॥ काटश्चकृपिगापिपतिदिवसमनुार्थसमपुयूकः॥

८३

लघुनेला कवा विपुलरुल महाकला कजाग्रवत्तः सर्वसारार्थार्थविस्तनचरुविक्रियाजातुकाचिन् ॥ यायकुलोद्यवद्वि
कलितननरुत्तननिनस्यनस्यः त्यात्मापुरुषमुनिहं कृत्स्नमयि सरुनाइ ४ खपातालमर्त्त ॥ वक्र कयावदकपूरूपनिरुवा ४ पा
निनाइखवेभस्यकवधयानपुनिधिविनिधिविनिधियाकवदवानकम्पा ॥ ०० तिखे नूदवाहो नदतिनू निपदंवापमाकद
नादः नाहत्या न्यापुपक ॥ ननिननयितुकिपुलर्यादगित्वं ॥ त्वरु ४ पञ्चनयनखामतिननविरुवापार्थ नापाफकामाः दकसद
नहयस्तु नमनरुबासक्तताक ॥ नपापिययमिकमा नयिमममहतिवदतलकिलेखाः श्रुत्वास्मत्तावनाम्नापापहनसिह
अस्यापमकत्वमव ॥ त्यकवापानरु नानदसिममिकथकथगनकथकथः पथम्भनमत्रिपत्यपिविपुलरुपे ४ किमिषम्भे नपीनि
मायाभा सूर्यमान्यरुतिहिनधमेस्तुलाकालकमाव सेदावेवायमानामथकनरु ०० वानकगभधानतांग ४ ॥ यूप्रत्यादाऊपूजांक
नमपिननरुयलुदयेविग्धत्वाः दवाकार्षीत्थदिनाकूनपननचनास्यात्ममावधकोमा ॥ कत्यानालनवानुयिननसचला
लातकलातहलाः स्रुतादिषवलानटविकचट हूटमादागहासान् ॥ मरुहिर्हिहलाके ४ सकनननूदिनाकन्दनिमन्दम

अनति
८८

देशसकृन्मदविषयसुदहिनूतिपत्रस्मिन्नमृत्तियुक्ते॥धूमाग्राकारगङ्गाहवगगलगरुत्मन्निगनसूत्रिगःसूक्तकालाक
नालकनेलेनवविगदस्मविगभनगर्या॥स्वयावच्छप्रनासांलिपूटमूकयोगकृताकीनियाचाःपायद्विधाद्विलोमकलज
लदजवेनविषयकृन्नन॥दानागृपूर्यमाभारयकरकरकासुषिलोत्तममाताःइकांलाह्यमानसनिगज्जनिठद्वषव
क्राविपस्य॥दकाकाकुम्भजालान्तुनिगननस्वामनस्मृष्टपस्यावच्छप्रहृष्टपृथगिषेषतमिलकातिकोपविष्ट॥प्राट
पागप्रहृतप्रहृतनलंगिलहृत्तुलवत्पुत्सवायां॥याटव्याहृताग्रहविलसदजिह्वाकस्मिन्दर्शान्॥दशकृन्मदविषयसुदहिनूतिपत्रस्मिन्नमृत्तियुक्ते॥वज्रकूटप्रहृतनपखननत्रमूष
हृत्वातमहृत्तुलवत्पुत्सवायां॥याटव्याहृताग्रहविलसदजिह्वाकस्मिन्दर्शान्॥दशकृन्मदविषयसुदहिनूतिपत्रस्मिन्नमृत्तियुक्ते॥वज्रकूटप्रहृतनपखननत्रमूष
कगासःसुसुनावत्पुत्सवायां॥याटव्याहृताग्रहविलसदजिह्वाकस्मिन्दर्शान्॥दशकृन्मदविषयसुदहिनूतिपत्रस्मिन्नमृत्तियुक्ते॥वज्रकूटप्रहृतनपखननत्रमूष
नवानवत्सुन्नडन्नसनात्रशकीनागया॥शेष॥पाणनसुहृत्पुत्सवायां॥याटव्याहृताग्रहविलसदजिह्वाकस्मिन्दर्शान्॥दशकृन्मदविषयसुदहिनूतिपत्रस्मिन्नमृत्तियुक्ते॥वज्रकूटप्रहृतनपखननत्रमूष

८८

[illegible]

धनसि
८९

यथा त्वा निनाः यकायुषिषुविष नपत्रपूत्रपूत्रनः कर्षत्तर्षनाथि॥ त्वामा नाध्याधु वसा वनयवनिवहचामनस्यनचा
धीःसूरिधरुमकाधुविषदग नघनामूहुते का कपनाम॥ सेवा कर्मा कर्जि लपुधम विनिमया पाययर्था यत्राः पात्रः
आ पात्रपूआ पचिगसूतलुं विहमपा प्रव कः वेवातिकामेनि लो रूपनजननाना नार्थमलंथ रुधाः रुम विम निवा कचा
मिकं ननिकेन निधिः निधनापा प्रवहि॥ चूर्ति केद विलकः कन निवस नया लय्यया रुत्सामाताः इनादात्यरुनि त्वास्व
जनसूतसूतदधु विवर्षमानशाल्या वेदगधरः खतुनगधूत्रमूखा खानखा मागु हा नाः मीक स्वाकः पुत्रमुवत्रय इनइनाः
जातनिडा पुवाधः॥ चक्रुदिकेकचु विसू नरुकि न आत्रक आतक आ लुं गम्भीः षडु का दकि मूखा शमखि गल नूचिनगा
मला वावनाथ उ॥ लखलखमयूषं मनिलमत्तुनः काषतत्पूर् काषः सानिबी तसे नाहवनि ग वनि स्वससादा गत्रगभरु
सुचुदधु उ नालः सुत्रहिमनिगीलादरुसंकेतकाकः काका कि गनूनागदहित वनचिनाः तिथ न (धुपचात्रः॥ त्वदिद्याल
यसिद्धि म नयम ध्वनंयागि विद्याधनः उ॥ खप्रागुधमपि नानतनुमपनिद्ययालसत्ता निहार्यः॥ हा नाका कलुना काः यव भक

८९

वलयवद्धमानायगामधुनादात्रवनीननुपनिमलामादमाद्यधिरुहा॥ काचिनादात्रवः॥ अद्वतगतचनादानमंजिननुनयी
सार्थप्राथयेतसंजमदुदिताः सादनादवकंन्या॥ तत्तच्छ्रानवापि कनककमत्रिणीवद्रकिंलमाताः मूमर्त्तुपानिजा
न॥ इममधुनमधुनधुलीविगानंः विनावधुपविनायनपूलनमसिदकमाधूर्यगुर्था रुत्तापुष्पा सपुष्पामनूरावतिचित्र
नडना॥ नयाशां॥ कनपुनलासहगत्वमगुननदकादगं॥ दकायां॥ काकाकंदर्पदयात्कटकुचकुरुतावहविश्रुतवि
या॥ मकाकिन्याममन्दकनसपिलसत्रिकीठयासूदनिलि॥ कीठनित्वङ्गनाक॥ कनपनिनगरुफपुष्पपुलावा॥ गीवा
सग्रामनिहिर्विनयन॥ नमोसिहिवन्दीनारु॥ स्वर्गसं॥ गधिरु॥ सत्रकत्रिनिज्जनहृषा॥ हासिगं॥ गं॥ चादार्धमका
लातिनलवलपिनाद्यामनामा॥ मूर्ति॥ पुनसुदधिविपातेनवतिनवतिः सूनमंहीहीनहीनप्रकाश॥ चूडात्रत्तावगंसासनगः
रसुगनवामलम्बीविगानप्रायद्यालार्ककाटिपदुनकिननापुष्पमानानुविताकं॥ प्राटेकपादकुमरनवितमदुभूतदु
विह्वलदुपंरावमानारुवतिहवहयाचिहृजेयेनमलाजा॥ पञ्चरूपकसकापेपहननकि॥ अरुर्दुर्दार्दपुषुः वापुवोमान

अनन्ता
९०

नासवत्यरु निरु नाका नूनाहार्य चर्य इकवगसिहासा उमत्र उमत्र कागमनासु नव नावेना नाहाना लप मदमद
हाकेनिका लाहनागम ॥ केचित्के कनामाप्र मगनगगनाहागर हनसस्थः सुसुवध नूडप्रहिति नत्रमत्र त्तिदि
गन्धर्वनागादिका काकोमिधमिस्मिन्सूगनसूतान ननिर्मानचिनुवैला कवयसि नेचननचिना (गखलावसुलवा) लास
सिइन नागभूतननकिन नादिस्य नाहिस्यम कशी मत्सा न्दनी नात्यनदत्रिगदनिर्कादनी संनथ न०४॥ किनाधिइय
इ ॥ अधिकनव भवतका के नाहं चकचिह्नद्रूपंविश्वरूपंस्फुटिकवइपधायु कि रदादी हिन्नां सर्वरूप नदिपप्रकटि
सकनस्य नलेकसा श्रीसाक्षाद्व हित्वदीयागुनगगग ॥ सर्ववित्सूताबा यनु या नायवक्तुः वसिगुजत्रदिनमाह ॥ नात्र
ति व्याफसाति कुइवकलज निनूज ॥ धन साहासा हनु४॥ य भविह्म सा मानप धेमनत्रमदः सुविश्वरव नयाहि नत्याहना
निन कशमविधि नवधः सानु संताखहनु४ ॥ किडुसिग्धमावसा विषमिवपूतना इष्टवमूनीर्यवाचाः हानार्थसापिइ४वी हदः
यलधुनयाससु गोविन्दतिव ॥ कल्या ॥ नन्दसिंधूपक टगसिक लगाहनादहिद्विः पृदिहानापदगं कनूयन कानि ॥ ५॥

९०

यश्च नमस्कृ॥ त्वत्प्रेमो जगत्पवित्रि कृतमनसिमयि (प्रयसस्तु नम के द वं यस्या दमायं जगतिः तव गतं तस्मात् प्रयगानां समुत्पद्युः ॥
द्या वयवमनियत् ये ह मात्सं मया मायत्वं प्रपूज्य ह वां कुरुत्तम धनवसा सा दमा रगुति शराम् ॥ लाकृष्ण नायै लाकृष्णं च न न न न
स्ति कस्तस्ति चिन्म क्रयायं यया यात्सु गतसूत मही नासूखा वस्पा पाख्याम् ॥ ७० ॥ न्यायै ना नारु दानिकायाः ॥ यं यं नास्ति यं स
माफे ॥ ७० ॥ ॐ नमः ॥ ग्राभ्यायं ग्रहा नायै एकजगये ॥ नमः ॥ अवकपत्त क वृध वाधिसत्त्व कोट राजवृध धर्म संध्य ॥ नमः ॥ गव
नमः ॥ गव नमः ॥ महाकाव्य निकाय गभक्त नय नथा ग नायाह रं संयक्तं दक्षय ॥ एवं मया श्रुतम कस्मिन् समय हगवा नास्य मात्स्य गिति
जिखन विहा नमिस्म ॥ महाकाव्य हि सुसंघ न गभक्त वाधिसत्त्व ग न न ज कोट राजग (गभक्त विद्याधन ग न न था ॥ लाच ना ह कृति चे वना ना
रुगवति न था मात्रि चिपत्त सवनी मामे की पात्त ना तथा ॥ तत्त एगव न तस्याः ग एगव न वला कित ॥ लाको ना म नू क
म्यायेः गभक्ता यं पत्रि प कृति ॥ एगव न कृति सर्व ॥ हृह न निमि ल लावन ॥ एगव न्ना कृता नायाः ॥ कृत मा उ हगव
त्रिनि कस्या यं गव न्ना नि विद्य कृता क नायक ॥ हगव ना ह ॥ ना ना वत्त नि न्ना नि ना ना वत्त कृता नि ना क न्ना ॥ का ध पत्त नि वाधि

धन ॥
९९

सुखसुखं कश्चिदस्मात् ॥ नृणां मया ॥ महाद्या ननित्रस्तु गगनापमं ॥ सुखानां विनयार्थं यत्तु गगनावपूरुषं ॥ अरुह्य हि त्रिभुवनं सनिहं
यस्यालीयदाकिनं ॥ दुष्कृतं कष्टमहाहिमवदनं न विह्वलितं ॥ चतुर्धर्मसिद्धिं तदा ह ॥ इहा नाम तुल्यमधमं ॥ मौलागपि न कं
रुताश्मदिनं कनूनाकूलं ॥ अथायदहा समुत्प्लव्य यस्यां ह्य कने ॥ अवविन्दुनात्रि ॥ विष्णवे ॥ नमस्तुभ्यं ॥ असूनासुन
नमिनें सुवृक्षानमिनें सुवृक्षाननुपूजितं ॥ वापि सुखे गे ॥ नैसुखं रंगानि वसत्रं ॥ अस्याप्रवम तुल्य सर्वहं वहिनाप ॥
आह ॥ वन्दमहगवस्य मय कर्षभ ॥ रूपा कनू ॥ धनसि मनुना गानं सर्वसुखं वावह ॥ ॥ आह ॥ साधुसाधु महापाह ॥ नूव
कामिधनसि ॥ यस्याग्रवनमात्रेन विनयस्यानयकं ॥ आयनागानधनं सुखसौ लगधवंदनं ॥ यस्यां कंथगनं वापि पूरुषं कस्यापि वि
न ॥ वरुधपिसुखवनस्य नरयविद्यन कचिन्ना ॥ संग्रामगमुसंपातं अजितरुजं गलाकूलं ॥ नारुस्य सर्वपत्रि ॥ नका कवकि नसाचद
वनागसुथा देवा वापिसुत्वा महर्षिका ॥ नककिनं महासुखं यथेना ॥ धनत्रिप ॥ ॥ नूया ॥ नयद्यपि गानकपापानि सीगतं ॥
तानमहासुखमय निर्दोषादववर्जितं ॥ अस्यामु धन ॥ सर्वधर्मसु ॥ अहो ॥ सर्वदुःखं तं प्रत्यक्षं पापं ननु संस

ले ९

यः॥ ॐ नमो महादेवाय ध्यातुं तस्मिन् निमात्रः॥ वज्रपाणिश्च यश्च शिवो धिस्तस्मात्परिहृतः॥ हयग्रीवाय हयक्रांता लाचनायाम्बुमान
ना॥ सर्वं पूर्वाभुजिना वस्त्रादि विवोक्तः॥ नागानां पापनाशाय कथावाचो कृता नमः॥ नाकसां चैव नाकसामानां नृधिनलम्बना
नागकन्याविभवाश्च यश्चिच्छेदुषिना लिनः॥ नरपुत्रं कनिष्ठं किमहासत्त्वं स्यानिष्पन्नं लोकपालाय तः॥ गङ्गाया नानाकायिका
॥ उक्ता विष्णुश्च धनद आदि लोचनसंयुतः॥ कुमारो ह्यनन्तागच्छ पात्रय किं सुखं वरुण॥ यस्यास्या तं गुरुं सत्त्वं सत्त्वं कृष्णं हस्तधारीना
॥ यस्मिन् भ्रातृपुत्रवसन्ति तदा जपन् निरूपय वं॥ अस्यामुपा० मार्गे॥ तत्तु सर्वं दातुं॥ लक्ष्मण १० म्भुमन्तं न दया यस्तु कस्य
वीरः॥ नरकं धत्वा तन्मामक सर्वसिद्धिप्रदायकं॥ गुरुं किं समासिनं सयुक्ता च प्रदापयत्॥ सर्वमकुत्र यच्च माध्यात्रः
ति सर्वसिद्धिदा॥ तस्मात्तु गुरुं सर्वं प्रसाकं संचराचरे॥ कु॥ अपि वगतामति यथेना ध्यातव्यं नत्र॥ तस्मात्तु तदिमं ध्य
तु स्वयं प्रावाच माजितु॥ हिताय सर्वसत्त्वा नां रूपयानाम् दाहनेत्॥ ० ॥ ॐ नमो ह्यगवत्पुत्राय शीर्षय हता नायिः॥ नमः॥
सर्वभावकपत्क वद्धो धिस्तत्त्वा काटलाज वृद्धर्मसद्यः॥ ॐ नमो ह्यगवत्पुत्राय नमः॥ नमः॥ काटलाज वृद्धर्मसद्यः॥ ॐ नमो ह्यगवत्पुत्राय नमः॥

वहनयनका ॥ लक्ष्मीनय २ वज्रवज्रगर्हवज्रगालानलपुत्र ॥ वज्रगालगर्हवज्रगालामुत्र ॥ नारिकोससैम ॥ वज्रगालाव
लासीतसुनिनवज्रद ॥ वज्राव ॥ वज्रवानाहि ॥ वज्रविषविहसनिमहाकालिगदमनिदह २ रुमिकलसर्वविद्यात ॥ वज्रखजमा
निद ॥ अजित ॥ अपत्राजित ॥ अमिल ॥ अपनिविष्ट ॥ अमिलनसका ॥ अपचिन ॥ असमत ॥ असमककयग २ मर्द २ मथ २ प्रम ॥ थथ
निअपतिह ॥ महाविद्यचिक्तामनिसिद्धि ॥ सिद्ध २ साधय २ गवतिममकार्या ॥ सिर्वसत्ताना ॥ कलनक्षत्र ॥ सुतिनि ॥ अवधूत ॥ अवधू
त ॥ अवधूतनिवासिनि ॥ अवधूत ॥ रुक्ति ॥ विहनादधमनिधम २ नन २ नन २ नाय २ नाव २ कन २ धन २ दन ॥ दाक ॥ महानादमघनिः
र्घषनाद ॥ मघनाद ॥ महानाद ॥ प्रिय ॥ मघनाद ॥ अनिलिह ॥ केनरूप ॥ ध्यानादहाससकुगितुवन ॥ विभुव ॥ निधक ॥ धक २
धन २ विधन २ दम २ गग्मा २ धू २ धू २ इ २ मू २ मू २ माचय २ जय २ महाकात्रनिक ॥ पत्रम ॥ सुनिवि ॥ अश्वनी ॥ विस्र ॥ अश्वनी ॥ कोट ॥ अश्वनि
महाकाट ॥ नाश ॥ अश्वनी ॥ पी ॥ अश्वनि ॥ अमय ॥ अश्वनि ॥ समय ॥ महसमय ॥ समया ॥ नृपा ॥ विनिस ॥ मय ॥ वर्हि ॥ निसमय ॥ अश्वनी ॥ समया ॥ वनानि
लिम ॥ न २ समय २ समय ॥ इ ॥ लनाय ॥ कि ॥ वज्रनाय ॥ की ॥ पि ॥ नायिकी ॥ काम ॥ अश्वनि ॥ काम ॥ नृपि ॥ विग ॥ नृपम ॥ हा ॥ अश्वनी ॥ नृप ॥ वरू ॥ विः

धननि
९३

विधिविविधरूपधनीताः महाविरुद्धरूपसहस्रयनिवर्तीनाः ॥ मानादिदर्पदत्रसि महाविश्रायद्यानि नर्कयः सर्वमानान्
॥ साखयः सफसागान् । धनयः सर्वरुक्ताकीनयः सर्वग्रहान् ॥ माहयः सर्वरुक्तान् ॥ जगयः सर्वजगताकसान् ॥ लग
वनिमहाकनूत्तकोट्यनित्ररुः मासपत्रीवोनां सर्वसत्त्वानां च ॥ ॐ मनिः महामनि चित्तमनि धनि धनि यधयमम
नि चंदवजमनि वज्रकर्तृनि वज्रकर्तृनि हृदया मूलनी महाच ॥ किं किं निखिंतीनि वाया शुचर्मा मूदिन जय
न महाकोधनाजमुद्रा ह्वा खनच नन यूगन नागभरुह नागभरु निमनि नर्कगनि ॥ रुख ना लं कृतविग्रह ॥ हः
तिरगत सहस्रानि त्रकपलवलसिक्तैः धनुकसूतनम कूटमसि मानादिपत्रिक्तु नपादपि धविश्रमा ननु श्रेष्ठ नृडाकः
बनि ॥ धेका नपत्रलिने धनुकवंसे कनि जे साको कर्षति ॥ सर्वनथागतगुहृदय ॥ महामुद्रा धिष्ठित महापाथमाया विः
माहनि ॥ मायाजालनयवल ॥ विचल ॥ सुखल ॥ ॐ धनुकं नमस्कृतं नविगसि ह्वा नवहनयन ॥ महाकल पाजिसत्रिहः विन
२बीनगवल ह्वा देवीनग नमिने पत्रम ॥ मुद्रा ॥ ॐ नृजि ह्वा वहा ॥ वजाकृग धननि पागभ ह्वा धनि पिय ॥ वजयममहा

९३

[illegible]

धनशा
ले ५

नदाकिनिस्वाहा॥ ह्ना नाम न समगनस्वाहा॥ धर्मधनुगर्हस्वाहा॥ महावाधिविहवजस्वाहा म हा समयस्वाहा॥ के म धर्मनियः
यस्वाहा॥ महासाहसप्रमार्दनियस्वाहा॥ रु १ स्वाहा॥ पु व ४ स्वाहा॥ सु ४ स्वाहा॥ रु १ व स्वाहा॥ वजवा नाहि स्वाहा॥ वजना न स्वाहा॥ सु
वम ७ लविद्याधिपते स्वाहा॥ पं ५ न काये स्वाहा॥ सम स्वाहा सक निस्वाहा॥ अरु य प द स्वाहा॥ न रु २ मा सर्व सत्ता ना व सर्व
न पु न धिश्वाश्च अकि नो प स्मा न रु य ४ सर्व प्र सर्व नाम म सर्व सत्ता ना ५ ५ नां कू नू प्र विं कू नू न का कू नू॥ ह ग व नि वि
म ना ॥ ये क न न रुं रुं रुं रुं रुं रुं स्वाहा॥ ॥ ये सां सर्व स मा प्र स सर्व पा पा ४ क य ग ना ४॥ य या यू का वज का या न रु स
न मा न म ४॥ यां स्म न त्वा इ ना न रु मा न नं कू कि सं स्ति नं॥ प्र क्रिय ५ ॥ ओ वि ख न या न म रु स्ये न मा न म ४॥ या न रु व सी ग ४ पु नू क
ल सं र्पा त ५ ५ ध नं॥ विष दा ह म म व च न रु स्ये न मा न म॥ व म द नो म हा ना गाय ण न कि क म रु के १ नि पू रि ता वि ना ना रु व म रु स्ये न
मा न म ४॥ हि रु ४ ५ ४ गी त का गी य या क ६ ७ पु व श्वि न ४ पुा न मू का य यो स्म न न म रु स्ये न मा न म॥ स मू ड पा न सं रु व बा नि जो पा नि
मां पा न न रु क ४॥ यां स्म न सार्थ वा हा रु न मा रु स्ये न मा र्मे न॥ य या च य नि व धा ना हा र्पा यो स्म न वा फ वा न्॥ य सा नि न पु ना ना न न

ले ५

मस्तुष्टेनमानमः॥ दानिद्रायां सुनिद्रात्वादिनात्रपुनरोजिनः॥ नानालसपदानां च नमस्तुष्टेनमानमः॥ यां प्रवृत्त्यां सुविद्युर्द्वजः
कुचुडामलोपगुः॥ लब्धकाक्षिजयवजिनमस्तुष्टेनमानमः॥ यस्यामकुवलेर्नवपूर्यपालमिताचखटू॥ मां नजित्वाजिनावृद्धानमस्तु
ष्टेनमानमः॥ अथ नमो धिवधहापिपुत्रिफः सर्वसंकेतः॥ यां सुतः पतिमूकासिनमस्तुष्टेनमानमः॥ ययावन्मिदकः ७७ थमूका
पापश्चसकगानुनगत्रनायकोलुचनमस्तुष्टेनमानमः॥ याचापनाजिगाविद्यासर्ववृद्धश्चत्रीका॥ मृदिनालखिगानित्यं नमस्तुष्टे
नमानमः॥ तिखितामादिगासुत्वहिनायपुत्रिगासदा॥ सुतकायगगाकृत्वा नमस्तुष्टेनमानमः॥ यस्याग्रवनममाग्रश्च इत्यहं पुवनय
यं॥ पा० स्वा॥ यनं वापिनमस्तुष्टेनमानमः॥ यावृक्षरत्नलवृद्धे व्याकृतासंप्रकाशिता॥ महनिधननिर्वा ना नमस्तुष्टेनमानमः॥ म
हावत्तामस्तुष्टेनमानमः॥ महाप्रतापवा॥ महाशुभवर्हि विद्या नमस्तुष्टेनमानमः॥ पापसन्धि समयादिमालवन्धुपमाचनि॥ जननिवाधिसत्त्वा
त्वानां मेनेस्तुष्टेनमानमः॥ नरुनिपाषिनिधुपनमकुविद्यानिनि॥ कात्वाद्विषयाग्नानां नमस्तुष्टेनमानमः॥ महापात्रकानां
गृह्णातातिरिक्तां कथापा० यथाकृतानित्यं नमस्तुष्टेनमानमः॥ पत्रयोदिगवेवनित्यमनसिलखितां सुपुस्तकगतां कृतानमस्तुष्टेनमानमः॥

[illegible]

ध्यान

९६

सिंहगच्छे सा सा का संविज्ञा न स ॥ गच्छे ४ वापि सत्तगना नाचव आ विष्णु म ह गच्छे ४ अपनि ह व व डे थः य क्र किन्न न ना
य के ॥ द ग य मा स स द म र्ज न म म् वि ना स नं ॥ न सि न व स न व डारि क्क सी ए व न श्व ग न् ॥ म श्च ग्री ४ सं ह क ध र्म ग व ॥
थ पु प य न ॥ न पु पू षा नि गु डु ति स ग धि नि व ह ति च आ ज य प्ज यो स ग भ क सिं ह ग म न वं ॥ स द न थ ग न चि ह न
वे न् अप नि च नि का ॥ मे ग्र यं पु म् र्वे ४ जि र्वा र्ग वा न् प र्थ य क्त न ॥ वि ला क स क ल प र्व धा गि ति ग न म लि न ॥ न जे लो द ग य व
॥ क्क ग द न नि न त्त न ॥ प द कि न त्र य क्क त्वा द कि न गान् म लु लं ॥ सु षा प र्क सौ क त्र पु वं क्क त्वा गि ल गि सा प लं ॥ प क्त य मा स यो य न ४
ग भ क सिं हा ग्ग ल द धिं ॥ क्क ति वृ धा न य ग्री मा न क स कान व ह व स ॥ न आ ग न स य स्या य द र्ग न् ॥ क्क ति ना मि ह ॥ ग म की ४ पा प स्या निः
य न हं लं कि कि ह वि षा ति ॥ न म द पु र स र्व प न मा र्थ वि चाल वि न् ॥ ए व मू क्क व मे ग्री य र्ग वा न् त्प र ल षि न ॥ सा धू मे य य न म द्धुं स वाः
थ य व प क्त मि ॥ व च्चि न त्स क ल क्क त्वा सा व धा न म ति ४ न् वि स म्भी रा ति न का ल श सि ह ड क ष पु ज्ञा यू षि ॥ अ सि नि स ह म्भ न का न क सि
न जि न न ॥ वे न्ध व र्णां च लो के थ वि धा च न न सं यू न ४ वि प म्भी ना म र्ग वा न् क ल न सि न ह व वि न् ॥ ना म्भ नि स त्प ध र्म न स व या सा स

९६

[illegible]

संज्ञा हि तां गमः गतं न कुरु वक्ति ॥ चतुर्धा निना नाम ति हिर्महहे ॥ संपादिता न्याहमनादयन्ति ॥ तदवहमिन्वत्र ह्यवया ॥
 ग्रासयुक्तो धर्मनगरवक्ति ॥ यः स्मिन् पुत्राकानि वत्समका निवधुक्ति न हानार्धहातादि हि न लै काले विजगता ॥ पु
 त्रकानि सामन्तिना ॥ स्वर्गमप्यचसूत्रे सपन्नारवक्ति ॥ वीनाधनय ॥ मुदंगवाधेन ये श्वगंखादि सुदिव्यगे ॥ संज्ञा सनाय
 विनननिनस्मायति ह्युपचरिना जिथेन ॥ नताः हि निमात्यं समुद्रनक्ति यत नत्राकसमस्तुता ॥ कूदिक्षि मूकाहन
 पृथवा भाद्रपुपन्ना ॥ गतं न कुरु वक्ति ॥ पक्षि मते श्व न गश्च गश्ये स्तापयन्ति न मनननत्वं ॥ मदाकि निताय मूगः स्वव
 धूरी न निमावहं नित्यः स्मिन् सुखालेपमूदाचनक्ति नत्रागता ॥ याः विक्रिनीत्वा तानि र्वानवत्रदायति ॥ तथा चैवापकाणि
 त्यावापविश्वयसि ॥ द्वाविंशो धर्मोक्तं संस्काराथ मूपागता ॥ दृष्टुं नितं कृपाविष्यचरुमग्नदुत्रचदुः ॥ विगतः स्मिन्नाद
 पक्षक र्ति काया स्वयविदुः ॥ गतः श्वद्विजः यस्यादुदायं गत्यदः ॥ वसन्ति ग्रामनगरसिगमाः कुमः पत्र ॥ ॐ नित्यं प्रकाय
 नक्षमः श्वार्तु न कुरु वक्ति ॥ स्याथ यत्कनिषः हं न सनिग्रहनमति ॥ ॐ नित्यं न ग्री स्वयदुः पुत्रनिमाह विषाति ॥ चन्द्रहास
 नखर्जननिगितः नाकिं विदुः ॥ पर्वतः स्यात्तं वाह्यामासधानवि ॥ येषु येषु वपाखा ॥ नृक्षः नक्षि ॥ नृक्षः नक्षि ॥ नृक्षः नक्षि ॥

॥ १ ॥ पूर्णदियं पूर्णमना तथा कृत्वा वसेत् यः पूजायां हस्तस्वनिवदिनं ॥ अथ मया हस्तस्वनिवदिनं गवानस्य लघनं ॥ गद्यपुत्रा
कं ॥ न देवपुत्रानचिह्नेन न स्मिन्नहं न पूज्यस्वयं न वेत्त्यहं न केन नापि न पूज्यं विज्ञानं सत्त्वं नां विनिष्ठा न धर्मार्थकामः मोक्ष
लकि ॥ यथा कस्य हि नागमथा यानहि चिह्नं यसादस्य सत्त्वं लघनं नदिदकिना ॥ गथा गथा वासधर्मं वधा नाशवकापिवा प्रवक्
चिह्नं सत्त्वं वधा वधा धर्मं श्रुतिर्मना ॥ अचिह्नं हि यसादस्य सत्त्वं लघनं नदिदकिना ॥ गथा गथा वासधर्मं वधा नाशवकापिवा प्रवक्
कार्यास्तु येषु सत्त्वं नारुविषयनिमहाहलं ॥ न स्मिन्नहं न पूज्यस्वयं न वेत्त्यहं न केन नापि न पूज्यं विज्ञानं सत्त्वं नां विनिष्ठा न धर्मार्थकामः मोक्ष
वेत्त्यहं न केन नापि न पूज्यस्वयं न वेत्त्यहं न केन नापि न पूज्यं विज्ञानं सत्त्वं नां विनिष्ठा न धर्मार्थकामः मोक्ष
लाय हस्तयः ४ स्मिन्नहं न पूज्यस्वयं न वेत्त्यहं न केन नापि न पूज्यं विज्ञानं सत्त्वं नां विनिष्ठा न धर्मार्थकामः मोक्ष
निसहस्रपि वर्यः १ स्मिन्नहं न पूज्यस्वयं न वेत्त्यहं न केन नापि न पूज्यं विज्ञानं सत्त्वं नां विनिष्ठा न धर्मार्थकामः मोक्ष
नन १ ॥ न स्मिन्नहं न पूज्यस्वयं न वेत्त्यहं न केन नापि न पूज्यं विज्ञानं सत्त्वं नां विनिष्ठा न धर्मार्थकामः मोक्ष
धी १ ॥ मस्ति श्री नरवत्सासर्व ४ सर्वविर्ग ४ ॥ यवा हि ह्यमं रूपा नामो चार्यं सुया सह यादविकणि निष्ठाता निर्वा ॥ वनकाय

दिचरुत्वाषाषधसंयतः॥ तत्राचक्रादिनित्रतं४सधर्मधयनग्रमः॥ तत्रो जागल तत्कत्वाप्रागदानयेथोम४दत्वास्त्रात्वा
पत्रावृत्तसूचिवर्मुविधानविनावजादकंदगमाकेय४पिवस्वर्गलिग्रय॥ अष्टाकृतविनिमूक४तत्तत्त्वा मापूयात्॥ कृत
मित्तां कृता ननगु त्रुमंरुग्रीयापूतः॥ मंरुग्रीपर्वतसंग्रीगुत्तत्रितमाययो॥ गय॥ तस्मिन्नेवपुदलासूचित्रमेवस
क्तु॥ दत्तधूत्तुविनत्वादसपद॥ १॥ अपि मरुग्री४पर्वत०० निविस्वातः॥ एवमेवयविश्वनुवस्तथागतस्याहं तस्य
सूवृद्धस्य कालसमयमरुग्री४निर्माणं त्रुपतमरुदवताम्रावेजाचार्य॥ तजल॥ षयित्वा महाउदावस्तुधपुदगं कृतः॥
॥ ००॥ तिग्रीस्वयंनुचेत्पुद्दात्रकादगयूपकुन्दाहात्पादनानामरुतिय४यत्रिभुदः॥ ३ ॥ अथमेवययवजा
मिग्रामचतिगमादिकं। यदा१रुवहृद्दगगु॥ लाकेहिनायचविश्वनुवस्तथागतनिर्वातसंपाफे सन्ति॥ ००॥ हेवकल्पः
मिखिननित्रतं सुगुजोगत॥ चत्वात्रिगसूहमानिपुजा नो मायुषिस्मृते॥ कालस्वल्पं कुरुकेन्दविद्याचत्रसंयुतः४ अहं
सम्यक्वृद्धः४ कृमावर्णमूपगायते ध्याति पासावरुवाहं तदा त्राधनसूद्धिः४ ततो अक्रुरगवान्॥ सावित्रहा नोपकु

अनति
१००

द क ॥ पूर्वत गखसं हचप्र विगुगित्व नाकु य ॥ सि नाप्र विगु महारि कु सधे ॥ समन्वित ॥ अर्द्धयथा द गगने वाधिसत्वे
ऊनात्मरिव हृदियोगिनि वदेवी न नाग न न न क ग ॥ सर्वश्रवण पत्रि किरि समाधि ॥ न विगुह ॥ हव संसा न ॥ १००
वपनि ॥ अख न नाम धर्म प य्याये द ग यामास ॥ आ म नु यामास ग न र्वा धिसत्वा नू वाच स ॥ य क थि कृत पृथा अ पु व क
ग्रह न ॥ १॥ वास ना ॥ अद्रिया ॥ गुडा ग्रन्थ बाप न नातय ॥ हि मा ल यो प च्छ न्याः सर्व कामार्थ द ॥ धना ॥ ॥ अ व ना य च क गानि
काखाय व स ने र्द ना ॥ पु व क प नि वा ॥ सूर्ध न्यां सु पा ज ना नू व र न ॥ ह व स ग म पे द ग का ग ना सि धि य थ कृ मा ॥ सर्व का र्मा थ
इ ॥ नान पुः व अ कू र ते ॥ य य ॥ गू त ति व च न त स ग न ध र्ज पु मू र्खे दि र्ज ॥ पु स नि रू त मा न से ॥ कृ मि यै न र य नू दे ॥ स ह
का या स ने पो ॥ न च कू स म पु व जि ने ॥ व ह ॥ अ ॥ अ सी मा व ध पु व क य ह न न ना ॥ पु व कू स म व ये दे व पु व क क र्क म य ना ॥ न व
पो वा च र ग वा न कू र धे सा म्पु त च न ॥ गू त ध र्ज पु स र्वा ना म र य नू द पु य त न ॥ वा स ना ना कृ मि या ना म त पु मू र्वा ना म व ॥
क ग म्म अ नि सी कृ ता क पा य व स ने वे ना ॥ व ह ॥ पु स र्ज ना बा ना प कृ रि हृ स ला ति न ॥ न ना दि द ग र ग वा थ म्मा न्वा धि
पा च्छि का न् ॥ स फ रि ग ति हि सृ व न ना ध र्म जि न जि न दि मा ॥ अ स प र्व त ग र स मि न सा नि र्म ल सृ ला नू त ध म क ला कु ला य

१००

निनास्त्राय विन्दतः॥ गद्यः॥ ककुब्जस्य धर्मवचसावि (गद्यतः॥ प्रविष्टित्तस्य समयापि वाग्मतिनियुसिद्धा॥ तत्प्राज्ञागो सदाप
वागमतिपत्रमन्त्रि॥ तस्मिन्मदितकम्भनिर्वायुम्भन्वृथ्यते॥ लगभके किपति समयस्य केभवेति चसा॥ दर्गनाथेचि
नृदितादिति यत्तागमनुहि॥ प्रविष्टियुग्मते कगतावचेत्पानिनिर्हृयः॥ अयाप्यनेकवेत्तना किर्तिरुनस्ति सर्वसंश्रवतवत्ता सर्व
त्वा कीर्तिगवद्गुम्भमहान्तस्मिन्नेवक (श्रीगीतागमभूषेययुः स्वयं॥ सत्त्वानां प्रकृति य समकाले समाहिताः प्रवृत्तमति कृत
चगित्रागदत्तचामसिने॥ गद्यः॥ तुकावित्तनाम्भेऽमी वगं खपुवतसा समिपेयस्मिन्मस्ति कृत्तनगा संगमस्ति चूठनवाधिसत्त्वन समाधि
कृतं स्वकीयं च चूठामनिमूखाय दानदत्तकस्मिन्मनि कृतपर्वताम्भे (गद्यः॥ ईहा॥ तदद्यापि सविता नागमनि लिग ०० तिखातः॥
अस्तेव च गतस्य पर्वतस्य मति कृतगि अचुयात्पन्नातयानदिम समपूनाति क चूठामनि नृधिरजलसं पका दद्यापि मति नाहि निति खा
ताः॥ एको व्यक्तिकृत्तवेत्ता कर्तृत्वादिनियकृत्तनी यथा नृसिखत्रचपुर्थः॥ कृत्ततिर्थिक॥ पचमः॥ कृत्तिकेभू (गद्यः॥ गतं यदगक॥
सफगधवत्ता कविक्वमः॥ कृत्तमावति॥ तदन्ते नैत्रमवास्मिन्पचकृत्तकृत्तुः॥ हिमालयाश्चैव नैषाग्रमादिका वसन्त॥ नृपुष्पं पति
मात्मा वाधिसत्त्वादयादधिः॥ धर्मा कना नाम राजावद्वत्॥ समतः॥ संताः॥ प्रजाय सुखिनस्तस्य वदवद्वत्तिहवना॥ दवा नागश्च यरूथश्च

अत्र लि
१०९

नागत्रयदयः॥ निवसन्निपुविनेऽप्रमाकृत्तनिधयाः॥ गयः॥ अथपनि सयं सुमिपुदगम् दिश्वही नयनमयसुहिरुयकि
नैवदहनमनूषयः॥ एवचमैयककुचुन्दसन्तथागतस्यार्हतः॥ कालसमयः॥ पथमाश्रमनगत्रनिगमरुतदत्राष्टनाग
क्षर्यः॥ युवनाः॥ ॥ ६०॥ निग्रास्यरुचेत्यहदोत्रकोदः॥ अग्रमादिसमूहवयधुर्थः॥ पत्रिकुदं॥ ५॥ अथदानिपुव
सामिनिर्धनिष्ठादगनिचः॥ १॥ पुमिरेयपूष्मनितदानि विजयतः॥ अमाद्यरुतदासं॥ वाग्मत्पां पूषतिथिकः॥ दगभकृग
सहकाप्रनकः॥ नागतकृकः॥ मानिदानिकयासंगवाग्मत्पां नतिथिकः॥ नागदिदावहकाप्रकृत्पां मगिखिगहं॥ वाग्मत्पां
मनिनाहिः॥ सममतिर्धसंकनः॥ सुटिकावसिदुल्लालसूक्ष्मवर्धनागिनः॥ अकिपूष्पादिदास्यग्रणिः॥ १॥ गंखपात्रकं
वाग्मत्पां नागमर्जयीसगमा नागतिथिकः॥ नाद्यानाग्यकथादीनातनुनागः॥ सुनामिनेः॥ सगमविमलावत्पां कगवत्पां मना
नर्थः॥ १॥ गीः॥ वम्बुदिदाः॥ स्तुप्रकर्वनः॥ कुनिकागः॥ कगवत्पां कनसंगपूष्पावत्पां कलीमलं॥ हकानिनिर्मलतिथिः॥ १॥ पुपी
नानाः॥ गायनात्रकः॥ स्वर्गवत्पां कनसंगकगवत्पां निधनकधनधनादिदातिथिः॥ हलिनदीयनन्दकीः॥ कसावत्पां मूहपापना
सन्नासगमकनं॥ मूखयेदाहोनतिथिः॥ स्वतमुद्रावास्तुकिः॥ कगवत्पां कनसंगवाग्मत्पां वास्किनार्थः॥ १॥ दिद्यायूधन्यादिस

१०९

कसूकसूगहि वा नू ॥३॥ वागमत्यां त्रविंशं सं तं तत्ता वस्यां प्रमादकः ॥ त्रिंशति कननी ॥ ॐ वचनः ॥ स्तुतयमकः ॥ चान्द्रमनिवाग्मत्या संगम
चसूत्रकने ॥ तिर्थस्तुतिषकननू यलोलाग्मतागवत् ॥ नागस्तुतमहापमसा ॥ स्ति ॥ अथाशु विग्रह ॥ पुलावस्यां च वाग्मत्या संगमजयतीर्थ
कः ॥ नासदः सर्वगदु नांशकानि शुद्धहलाग ॥ महाप्रि ॥ ॐ त्रिंशयस्याना न्यतानि द्वादश ॥ दानान्ताली कसिद्धिनामि स्तुवाचजगज्जु ॥
यत्रैका ॥ ॐ चित्तुन विधिना सन्तानमाचरेत् ॥ पु ॥ ॐ तिर्थमहाद्रु दिवगभनक विंग किञ्च कन विनिर्माक ॥ पु ॥ ॐ वासुचत्रायन ॥ नक
बलं नत्मानन दातेहामा दिहि ॥ रुतं ॥ महापु ॥ ॐ वत्रस्तुत्या विनत्रागः ॥ पु यत्नेन ॥ पि ॥ ॐ नर्पा ॥ सं कूर्यात्समा ॥ ॐ ममधीगच्छति ॥ ॐ कति
॥ ॐ वैकविगन दिनयः ॥ स्नानमाचरेत् ॥ त्रागदि द्वाषग ॥ ॐ दिरुतं समहित्वेत् ॥ यत्रुचैकाग्र चित्तुन जय ॥ न क्रिया नगः ॥ यत्नं ललत्तु
नून पूर्व लत्तु समाचरेत् ॥ यत्र सं कत्र ति ॥ ॐ तुष्टे काग्रम नाजमा ॥ ॐ कविगनिवागानि विधिवत् स्नानमाचरेत् ॥ ॐ किपूष्पादि नन द्रुलु
सम्पजायते ॥ नपहामादि हि सुद्व लुतं नत्मा पजायते ॥ कतान्ता काग्र चित्तुन स्नानं श्री नाजतिर्थ क ॥ नाद्या नाग्मरुतं रुयां दकविग निवातेन
॥ नक बलं स्नान न स र्क पहामादि हि रुते ॥ अतः ॥ ॐ तिष्ठ पु यन्नेन स्नापयत्स्व वपुः ॥ सदा ॥ ती ॥ ॐ मनात्र ॥ ॐ कूर्यादिके विगतिवागनं ॥ स्नानं
पाशानि नियतं सती अपनिपुनतां ॥ तत्र वसो नतना नैव नपहामादि हि रुते ॥ ॐ रुतं यत्नेन ॥ एहि ॥ कर्त्तव्या स्वातिषिचनं ॥ ॐ काग्र चित्तुय

धनलि
१०२

४ सान्नीर्धनिर्मलं सह कुरु न यः पयस्तेन वासना न कविगतिः ॥ कसोमसा निनं स्यात्किं प्रातिविपुलाश्रीयं ॥ न ह वर्य
रुद्र न यः पहा मादिहि सुतां ॥ तिर्थनिधन कुरु न वासना न कविगतिः यः सान्नीर्धनं लेह न गुरु धन धन्या नादि कं हतं ॥ सादरा जप
हमादिक्रियाहिल्ले त्वं वनत् ॥ ४० निवृद्धा सदा धिमाने सान्ना न दान न गौरुवेत ॥ हानिति ॥ ४१ विषकं यः संपादयति मधुनी ॥
वासना न कविगतिं रवमाकुरु लं हवत् ॥ अहाना वृक्षे त्वा ना जप हमादिकं कियं कस्तानि स हतं न सव ह सौ र्वा समुक्त
यं ॥ सर्वमहासूखं वापि लगमाकुरु लं हवत् ॥ चिकामः सोप न तिर्थं न कवि ह न धि धन विगत्य केन दिवं सप्तादी न रुद्र
न रुद्र ॥ दिव्यं पुवर्हं पूगार्थमाजसा खंच तत्पत् ॥ वीद्याधर्मैरुतं दासासूख कामरुता निनं अहाना वृक्षे त्वा ना जप हमादि सुख
ने त्पत् ॥ ४२ पुमादि तिर्थं मुदिनं सयत् ॥ सप्ता न माच नत् ॥ यः कविगतिं वससु धिति सूख लं हवत् ॥ अहाना वृक्षे त्वा ना जप हमादि सुख
रुद्र पहा मादि कपत् ॥ न तिपि ति हनये सगुरु वध कतयदि ॥ कुरु न रुतं लं यं लाह त्पु न नाच न तिर्थं सुत क ॥ कुर्याय
सान्ने कविं सति वासना ति सुखं त्वा सो रान सुख लं हवत् ॥ न केवलं वत् त्वा ना जप ना गन ना दिहि ॥ अहाना वृक्षे त्वा ना जप हमादि सुख

१०३

कसूकसूकहि वा नू ॥३॥ वागमत्तात्रविनसंतात्रतावत्तापमादक ॥३॥ तनिपूति कननी ॥ ॐ वचत्राऽस्तुप्रयमक ॥३॥ चात्रमनिवाग्मत्तासगम
वसूत्रकन ॥३॥ तिर्थसूकहिषकनत्रय ॥ ॐ हाग्मत्तागवत् ॥ नागसूत्रमहापमसाऽस्ति ॥ ॐ हाग्मत्तागवत् ॥ पुत्रावत्ताचवाग्मत्तासगमजयतीर्थ
क ॥ नासद ॥ सर्वगदु नाग्रीकानि ॥ ॐ हदहलाग ॥ महाप्रि ॥ ॐ निमैययखाता ॥ ॐ तनिद्वाग ॥ दा ना ॥ ॐ तीष्ठसिद्धिनामि ॥ ॐ वाचजग ॥ ॐ नू ॥
यद्विका ॥ ॐ चित्तुनविधिनासूतानमाचत्रेत् ॥ ॐ ॥ ॐ निर्थमहाद्रुदिवगभनकविंगकिज्जकनविनिर्मीक ॥ ॐ ॥ ॐ वासचत्रायन ॥ ॐ क
वलं नत्ताननदातेहामादिहि ॥ ॐ रुलं ॥ महापू ॥ ॐ वत्रज्ञाणा विनत्राग ॥ ॐ पुयत्रेग ॥ ॐ पित्रनर्प ॥ ॐ संकूर्यात्समा ॥ ॐ ममेधीग ॥ ॐ कति ॥ ॐ कति
॥ ॐ चैकविगतदिनय ॥ ॐ सानमाचत्रेत् ॥ ॐ त्रामदिदाषग ॥ ॐ क्तादिरुलंसमहितवत् ॥ ॐ ॐ चैकाग्रचित्तुनत्रय ॥ ॐ नक्रियात्र ॥ ॐ यत्तुलंलत्तु
नूनपूर्वत्तुसमाचत्रेत् ॥ ॐ यत्तुसंकत्रनि ॥ ॐ ॐ ॐ काग्रमनाजमा ॥ ॐ कविगकिवातानिविधिवत्तानमाचत्रेत् ॥ ॐ ॐ किपूष्पादिननद्रुलं
सम्पजायते ॥ ॐ त्रपहामादिहि ॥ ॐ रुलं नत्तापजायते ॥ ॐ कता ॥ ॐ काग्रचित्तुनत्तानत्रीत्राजनिर्थक ॥ ॐ नाद्यात्राग्मत्तागवत्तुलं रुयांदकविगनिवात्रेत्
॥ ॐ नकवलंत्ताननसूत्रपहामादिहि ॥ ॐ रुलं ॥ ॐ न ॥ ॐ रुलं पुयत्रेत्तापयत्तुवपू ॥ ॐ सदा ॥ ॐ ॐ मनात्र ॥ ॐ कूर्यादिकविगतिवागने ॥ ॐ सान
पाशानिनियतं सवीगपनिपूत्रत् ॥ ॐ त्रवत्ताननतातेवत्रपहामादिहि ॥ ॐ रुलं यत्तुन ॥ ॐ रुलं कर्त्तुवा स्वातिषिचनं ॥ ॐ काग्रचित्तुय

अत्र
१०३

नामाष्टिः न० न० का सिसम्भुवायं मुनिः क न क नाम न० सा रा वर्या श्री न ग र्या ग न दानु क न क० सु धर्म ना ज्ञा नामाः हं र वा
मिष्ट न दा पु न० वा धि स त्व० स दा स क रु दा ना ध न त्पे न० ॥ न दा चि क्र मी जी ल स वि हा न व स इ त्म० ध र्म ग्री मि द्र ना मा यं रि क्क० पं दी
न चूर्त्त क० ॥ वा त्वा ना द न संगी ति ना सा सा द न यु कि न० द्वा द सा रु त्थी नि जा ना व कु म ग क धि० ति न शि का प ना ज्ञा न० अ न पृ व
म नू स म न० ॥ ७० ना २ स्था ल न दि र्ग द (अ मं र्ग श्री० नाम पर्व त० ॥ स्वा न् प च सि ख स न् व धि म त्वा ग् (अ द धि० म र्ग श्री० त्प न ह्वा
ग त्वा प च्छ म चि क य न० ॥ ७० ति नि शि त्प न व त्प ग न् स प मि ना श व न० ॥ य न ह न मा ज्ञा ॥ ज ग म क लि हि दि ने ॥ कु म न वि ख य न स
पा ध्वा ना शि य न न० ॥ प चा रि क्क० १ थ म र्ग श्री० ह्वा न वा न इ न न श्च न० ॥ स्वा म् दि द्ग ना थ क्क मा या मि त्तं वि नि र्मी तं ॥ अ इ न के ग न
हा र्वा ह स ह्मो न्वा ह य न० ॥ म र्ग श्री० व मा चा र्य द ष्ठ वा न् चे द न० ॥ ध र्म ग्री मि द्र ना मा यं रि क्क० ॥ न्नु प च्छ य य त्प न
मा र्ग ग्म क न व थ० ॥ ७० न्नु ना लि य द न म र्ग श्री० नाम पर्व तं ॥ त्रि दं ग य नु त मा र्ग य न्नु ना फा ह वा मि न० ॥ र्ग ग द न्ने म् स त्वे नि वि
ति वि हा न व स नि म म० ॥ क न्नु ना ल स त्वा ना स्वा रि या य न्नु न्नु म् र्ग श्री० ला वा त्प न क्क र व द नू म न च त्प न० ॥ नि म कि न मि द म त्वा
म र्ग श्री० ह न मा मू च० ॥ मू क्क न्ने सि ह्मो इ ला व द्वा क द्वा प य न० ॥ लो ग ल स त्वा प या मा स ह्वा न र्मो र्ग ग न्नु न० ॥ ७० ना नी क न्नु व स

१०३

नमः श्री ४ रूप कथन ॥ ननु दहति हर्ष हि १ सावामनिकथन ॥ ननु १ पा ह्य के १ गार्ध मरु श्री ४ स्वग हं य धो ॥ कना यितार सास
कथनिते नमः लह दि हि १ ॥ धर्म श्री मी उ आ चार्थ गु नमः श्री या सह ॥ मुख सन के नी च क क था ना ना वि धा मि ति ॥ न नो नो
दहो नमो सय नो थो गृह के यत् ॥ ननु ग चा क थं सु फा धर्म श्री मि उ मि न ॥ १० नि वि धि न यू क म ग य न दि र्घ का सि
कं महा धि का य र ग यान क था का का क नि ष ति ॥ ११ मि ग्र स मू ख य स क ला मां नू स र्थ यत् ॥ न द्वा न मू त मा मू नि ह
नमः ११ मि ग्र वा न न ता म श्री या द वि व गि नि प त्र म ग वि ॥ पु य क र ग व क नं या र ना ग म ना र्थ कं क ना र्थ ना ग म
अ स्ति उ र ग व न्यु र ना प ॥ १० नि ग्री ला ग ता थ १ ॥ पा वा च प त्र म ग वि ॥ गि ला क मा द वि त्वे ग नू वं मि क द क नं ॥
य ना र्थ ना ग म १ स्म य म र ह १ र म चि न य न ॥ धर्म श्री नी म ना हि क वि हा न वि कु च न ॥ ने वा स का र्थ संच क ना सा संगी
नि क स चः ना क थो र ह द क न द्वा द ग स च ॥ वि ज स म क म क ॥ अ न त्वा र म य मा ग त १ ॥ नि द वि व च न य ला प्र क वा रं
न ग र नू ॥ नू न ना क थ न खा द्वा द ग म ना क था प र ॥ न स वा च र ग वा न य थ कृ ष्णं र था के था ॥ गृ णु ट न द वि प्री त्या न च

प्रकाशिता॥ अत्र तद्वचनं तस्मिन् हस्तसकलवति॥ दक्षमश्नुयौ यौयसा द्विनिनिग्रयनाय यौ॥ तत उक्त्वा यविद (धवाष्टो ग
 प्रनतिमतिनथावतिष्ठत कृत्वा प्रजापतं ततः ततः॥ ततः सल उक्त्वा यकमिनिपत्रमश्वत्रि॥ उक्त्वा नयानास तदा कया
 तद्वचनं॥ दानमूलनिपतिनदृष्टा वा दृष्टस्य त्रनिवदयां मासत गोशुनूव विदितागम॥ रगवत्याह नादानम
 तगुपः॥ इति किंपूतः जीवत्यवमनेवासीत्॥ न ज्ञानं त्रिपुण्यां॥ अत्र निवचनं स्यामश्नुयौ तूक्ती तः पत्रं॥ समस्तं न दान
 रुचमस्तप्येसादत्रं॥ धर्मश्रीमदुक्त्वा यनम्यामास तं गुनं॥ अथ प्रावाच तगुनं मश्नुयौ यं विदं वचः॥ महहा गमस
 प्यात्रुल्लगव न्यत्रे मार्यचित्तममकनेह रगवत नाम सगितिकस्य च॥ अर्था यदग नियतं दशयत् त्रिदश्वत्॥ एवमूक
 ततः सस्मै मश्नुयौ कृत्वा निनि॥ चिनाहिखिचकथं तदमुपदिशते॥ अत्र निवचनं तस्य धर्मश्रीमदुक्त्वा तान निदना
 इह कथं रगवने कनिषागुनं तपः॥ अत्र निवचनं धर्मश्रीमिदं गतिनायकः॥ तस्मात् प्रथमं सपोत्पा किचित्तमं तप
 योजनं॥ धर्मश्रीमिदं पुत्रपुत्राणां सः हनति वचनं॥ अत्र निवचनं धर्मश्रीमदुक्त्वा तं वागीश्वरस्य च॥ मधु पुत्रथायोमा
 पुत्रया मास तत्वेन तः तः॥ विदितं त्रिं न तत्वेन तः सः॥ इति कृत्वा तः॥ अत्र न तददो तस्मात् कृत्वा संसृजतः॥ अर्थमर्थः

विद्वानिहः कनूना विष्णुमानसायणा लिखका नगुका र्थनरुनवा दगसा च धर्मग्रीमिप्रउकी इयसा दपूतका रुमः॥ इव
उरुपाफवास्ति नार्थ धना च्ये न शीयचसासा नयथा गकी पुजयेन ॥ नमस्तु यद दो न स्येन न स्युः पायवे ॥ अ
(॥ वाचउत्रमः श्री धर्मग्री यवचः धर्मग्रीना पसगी त्यायगार्थदिये नेत्वेया ॥ अगतः सामह नयु को नु न वसमूखान्
०० पूवाच निसमदवाचमि प्रसी या गुत्रोमहधी कस्तुवे मे गवन ह्य स्यामा गत कथं ॥ उवाच न स्याजानिहिमा मृत्युलं क
सगुने महापदिनः धर्मग्रीमिप्रः यमदिनस्तु न ॥ सोमनस्य पत्रगताः अस्तु सो न नामतं ॥ कृत्वा पदकिं अर्चुं तिसाद नान
दसुन्दनः तस्यानिका च प्रकाशो वाप्यप्र न नाग नः ॥ विहाये विदुः पुनवा वा न विदध नः ॥ नामा संगितिक स्यापिमः ॥ श्री
स्तु प्रपाफवान् ॥ एकं जिह्वा सना र्थः धर्मग्रीमीव कस्तुच ॥ गतिन निर्माय चा न लेमक्रिकाः ॥ कियन् ॥ यस्तु हस्तलामध्वरु
वान् नरगदि स्वनेः ॥ इदु नत्स्यल कनय सा ॥ न्धम खा माययो धर्मग्रीमिप्रउ चैः र्थः ॥ त्वा न चास्ति नात्र नाः गतेन न समुत्ताय ध
र्मग्रीमीप्रउत्सुकः ॥ नमस्तु र्दसमा नत्स्य मन्त्रग्रीविमूखान् वेन ॥ आसय न स्यविहया धर्मग्रीमिप्र कस्तुच ॥ नरु कस्तुमया द
चमि ॥ कन च सज्जति ॥ ०० पू के नत्स्य ना न स्य धर्मग्रीमिप्र कस्तुच ॥ चक्रु धिपति नेह मी नूदक मी निव दयन् ॥ ०० हृदि कः

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्री कृष्णाय नमः ॥

असि

थिगुदेवेसाखरुपुयावदुधिमंगुवा ८ तपु नृपादि
विचित्रविक्रमसाहदेवयातनागालिषकविले ॥
इमहा नागपि नागसूयनाहनरुल ॥ ॥

॥ ॥ ॥ ॥

मिसनदमहा नागपि नागसूयनाहनरुल ॥ ॥
॥ श्रीपेठरुहयारुतिया नृपमानथपुनृश्री नाग नृपि ॥
॥ ॥ ॥ ॥



आम आम

201